TORONTO PUBLIC LIBRARY
37131 143 223 097
MAL Malvern

कमलेश्वर

अंतिम सफ़र

इस सदी के सुप्रसिद्ध लेखक कमलेश्वर
का अंतिम कालजयी उपन्यास

Kamaleśvara.
Antima safara :

Digitized by the Internet Archive
in 2022 with funding from
Kahle/Austin Foundation

https://archive.org/details/safaralauhamahil0000kama

सफ़र

'सफ़र' कमलेश्वर का मात्र अंतिम उपन्यास ही नहीं, वरन् यह उनके जीवन के अंतिम उद्गार भी हैं। ऐसे उद्गार जिन्हें वे सेल्यूलाइड पर जीवंत करना चाहते थे, परंतु वे अपनी इस अभिलाषा को पूरा न कर सके।

वास्तव में कमलेश्वर असमय दस्तक देने वाली अपने जीवन की सांध्यबेला में इंदिरा गांधी पर एक फिल्म के लिए स्क्रिप्ट पर कार्य कर रहे थे। वह इस फिल्म के न केवल लेखक थे, वरन् निर्माता भी थे। स्क्रिप्ट पूरी करने के बाद उन्होंने इसकी मुख्य भूमिका के लिए अभिनेत्री मनीषा कोईराला का चयन भी कर लिया था। परंतु अचानक ही उनकी मृत्यु हो गई और इंदिरा जी को सच्ची श्रद्धांजलि देने की अभिलाषा भी साथ लेकर चले गए। वैसे इससे पहले वे अपने उपन्यास 'काली आंधी' पर गुलज़ार के साथ 'आंधी' फिल्म बनाकर इंदिरा जी को जीते-जी अपना लेखन समर्पित कर चुके थे, लेकिन इस ऐतिहासिक गाथा के आधार पर वे इंदिरा जी के साथ-साथ आज़ादी के बाद के भारतीय इतिहास से भी आज की पीढ़ी को रू-ब-रू कराना चाहते थे। खैर! काल की गति को कौन रोक सकता है। हिन्द पॉकेट बुक्स ने कमलेश्वर की इच्छा को उनके पाठकों तक पहुंचाने का बीड़ा उठाया, परिणामस्वरूप उनका अंतिम उपन्यास आपके हाथों में है।

हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा
हिन्दी साहित्य निर्माताओं की यादगारी कथा-शृंखला

- कमलेश्वर की यादगारी कहानियां
- प्रेमचंद की यादगारी कहानियां
- रवीन्द्रनाथ टैगोर की यादगारी कहानियां
- मीरा सीकरी की यादगारी कहानियां
- शरत्चन्द्र की यादगारी कहानियां
- जयशंकर प्रसाद की यादगारी कहानियां
- मन्नू भंडारी की यादगारी कहानियां
- गुरुदत्त की यादगारी कहानियां
- मोहन राकेश की यादगारी कहानियां
- मृदुला गर्ग की यादगारी कहानियां
- अमृता प्रीतम की यादगारी कहानियां
- मोहन राकेश की यादगारी कहानियां
- नरेन्द्र कोहली की यादगारी कहानियां
- चन्द्रकांता की यादगारी कहानियां
- मालती जोशी की यादगारी कहानियां
- कमल कुमार की यादगारी कहानियां
- विष्णु प्रभाकर की यादगारी कहानियां
- केशुभाई देसाई की यादगारी कहानियां
- उषा महाजन की यादगारी कहानियां
- जसविन्दर शर्मा की यादगारी कहानियां
- डॉ. महीप सिंह की यादगारी कहानियां

हिन्द पॉकेट बुक्स

देश-भर के प्रमुख रेलवे, रोडवेज व अन्य बुक स्टालों से लें, न मिलने पर हमें लिखें।

जे-40, जोरबाग लेन, नई दिल्ली-110003

सफ़र

लौह-महिला इंदिरा गांधी
के जीवन पर आधारित एक कालजयी उपन्यास

कमलेश्वर

हिन्द पॉकेट बुक्स

हिन्द पॉकेट बुक्स
भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स

उत्कृष्ट साहित्य का प्रतीक
सुन्दर • सुरुचिपूर्ण • सरल

हिन्दी के प्रख्यात विद्वान कमलेश्वर की यह अंतिम रचना है, जिस पर वे फिल्म भी बनाना चाहते थे, लेकिन उनकी अचानक मृत्यु के बाद यह अमर कृति सिल्वर स्क्रीन पर साकार न हो सकी। कथा के तथ्यों की पुष्टि लेखक द्वारा विस्तृत शोध से की गई है। इसके पात्र वास्तविक हों या काल्पनिक और जो ऐसे नाम प्रयोग किए गए हैं वे सब लेखक की कल्पना और व्याख्या की उपज है। इंदिरा जी स्वयं कमलेश्वर जी की रचनाओं और उनके प्रति सम्मान भाव रखती थीं, इसलिए यह रचना इंदिरा जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

सफ़र (उपन्यास)
© गायत्री कमलेश्वर, 2010
प्रस्तुति : तेजपाल सिंह धामा
प्रथम संस्करण : 2010
प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जे-40, जोरबाग लेन, नई दिल्ली-110003
लेज़र : एडिट मीडिया, नई दिल्ली - 110045
मुद्रक : टेन प्रिंट्स इंडिया प्रा. लि., डिस्ट्री. झज्झर (हरियाणा)

SAFAR (Novel)
By Kamleshwar

ISBN 978-81-216-1568-6
10/10/01/11/40/AM/DE/TP/TP/NP150/NP150

प्राक्कथन

'सफ़र' उपन्यास इंदिरा गांधी के जीवन पर आधारित है। वास्तव में कमलेश्वर जी इंदिरा गांधी के जीवन के ऊपर फिल्म स्क्रिप्ट लिख रहे थे, जिस पर अहमदाबाद से आए हुए मि. पवार फिल्म बना रहे थे, इस स्क्रिप्ट पर कमलेश्वर जी ने बहुत मेहनत की थी, परंतु किसी कारणवश यह फिल्म नहीं बन पाई, फिर कमलेश्वर जी ने सोचा कि क्यों न इंदिरा गांधी पर एक पुस्तक के रूप में यह प्रकाशित हो जाए। वे इंदिरा गांधी का बहुत सम्मान करते थे। इसी कारण से गुलज़ार के साथ उन्होंने 'आंधी' पिक्चर की स्क्रिप्ट लिखी। उससे पहले कमलेश्वर जी का 'काली आंधी' उपन्यास प्रकाशित हो चुका था और कमलेश्वर जी ने इंदिरा गांधी के जन्म दिन पर भी सोमवक्षी के साथ टीवी के लिए फिल्म बनाई थी, दस मिनट की।

यहां तक कि इंदिरा गांधी की मृत्यु की शवयात्रा निकालने से पहले ख़ासतौर से कमलेश्वर जी को सरकार ने कमेंट्री करने के लिए बंबई से बुलाया था। उन्होंने बहुत अच्छी कमेंट्री की थी। बाद में इंदिरा गांधी फिल्म के लिए इंदिरा गांधी की भूमिका निभाने के लिए मनीषा कोइराला को चुना गया, पर फिल्म नहीं बन पाई। तदुपरांत कमलेश्वर जी जब इंदिरा गांधी पर उपन्यास लिख रहे थे, उन दिनों वे बहुत बीमार पड़ गए थे और यह अधूरी अभिलाषा लिए वह इस दुनिया से चले गए।

मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यह अपूर्ण पांडुलिपि कभी उपन्यास के रूप में प्रकाशित हो सकेगी। मैंने भी इस पर ध्यान नहीं दिया। मैं भोपाल चली गई बेटी मानू और अपने दामाद आलोक के

पास रहने। जब मैं वापस दिल्ली आई तब, यशस्वी साहित्यकार तेजपाल सिंह धामा मेरे घर आए। वह इस उपन्यास को हिन्द पॉकेट बुक्स से प्रकाशित करने के लिए बहुत उत्साहित थे। मैंने अपने दामाद आलोक त्यागी से चर्चा की तो उन्होंने भी कहा कि यदि वह प्रकाशित करना चाहते हैं, तो उनको अवश्य दे दें। मैंने भी सोचा कि कमलेश्वर का जितना भी साहित्य है, वह सबके बीच चर्चा में रहना ही चाहिए। मेरे पास जितने भी कमलेश्वर जी द्वारा लिखित पन्ने थे, आधे-अधूरे मैंने सभी उनको दे दिए। उन्होंने कहा कि मैं इसको पूरा करके ठीक से प्रकाशित करा दूंगा। मुझे उन पर विश्वास हुआ।

कमलेश्वर जी के अंतिम उद्गार इस रचना के रूप में उनके प्रिय पाठकों के हृदय तक पहुंच सके, तो मैं समझूंगी 'काली आंधी' की तरह 'सफ़र' को एक सही मंच मिल सकेगा।

नई दिल्ली — गायत्री कमलेश्वर

23.8.2010

''मुझे उसकी चिंता नहीं कि मैं जिंदा रहती हूं या नहीं। मैंने एक लंबी जिंदगी जी है और मैं गर्व कर सकती हूं कि मैंने अपना पूरा जीवन सेवा में व्यतीत किया है। मुझे सिर्फ इस पर गर्व है और किसी चीज पर नहीं। और जब तक मुझमें सांस रहेंगी मैं सेवा करती रहूंगी और जब मेरे जीवन का अंत होगा, मैं कह सकूंगी कि मेरे खून की आखिरी बूंद भारत को जीवन देती और उसे मजबूत करती रहेगी...।''

''भूचाल!

''हां देश में भूचाल ही तो आया हुआ है। पता नहीं यह कौनसी प्रलय लाएगा? लोगों के मन में आख़िर है क्या, जो अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने पर तुले हुए हैं। मोतीलाल भी न जाने क्यों लोगों के बहकाए में आ गए! अच्छी ख़ासी कमाई हो जाती है वकालत में, वह भी गंवा बैठेगा।'' स्वरूपरानी की बहन बीबी अम्मा अपने ही आप बड़बड़ाए जा रही थी, कि उधर से नन्हीं इन्दू निकल आयी।

''क्या बात है बीबी अम्मा?'' इन्दू ने पूछ लिया, ''क्यों अपने आप बड़बड़ा रही हैं?''

''तू क्या समझेगी इन्दू! कि बात क्या है?''

''क्यों, मैं क्यों नहीं समझ सकती?''

''क्यों...क्यों नहीं समझ सकती...दूध के दांत निकले नहीं और क्यों नहीं समझ सकती...तेरे दादा ने हुकूमत का विरोध करना क्यों शुरू किया और वे गांधी जी के साथ क्यों हो गये तथा घर भर ने खादी पहनना क्यों शुरू कर दिया? क्या इतने सारे क्यों समझती है तू और इनका जवाब है तेरे पास?'' फिर वह इन्दू के जन्म वाले दिन की बातों को लेकर सपनों में खो गयी, ''कितनी बोलती है इन्दू, जिस दिन इसका जन्म हुआ...''

19 नवम्बर, 1917!

सुबह के आठ बजे थे। एक आलीशान, सुरुचि और संपन्नतापूर्ण बड़े से लिविंग रूम में लंबी-लंबी फ्रेंच खिड़कियों से आती सर्दियों की धूप के आड़े-तिरछे पैटर्न साफ-सुथरे फर्श पर चमक रहे थे। लॉन की ओर खुले दरवाजे से गुलाबी सर्द हवा हौले-हौले भारी पर्दों को हिला

रही थी। कमरे के एक ओर पड़ी आबनूस की भारी-सी सेंटर टेबिल के इर्द-गिर्द पड़े सोफों में से एक पर अट्ठाइसेक वर्ष के जवाहर लाल और दूसरे पर उनकी छोटी बहन कृष्णा बैठी थीं। पास ही जवाहर के पिता मोतीलाल थे।

सब लोग किसी बात पर चर्चा करते-करते हंस रहे थे। उनका नौकर हरी मेज पर रखी ट्रे से कवर को हटाकर कपों में केतली से चाय उड़ेलने लगा और फिर कपों को एक-एक करके सबकी ओर सलीके से बढ़ाने लगा। तभी भीतर के कमरे से एक नन्हें से बच्चे के रोने की तेज आवाज आयी। सब का ध्यान उधर गया। जच्चा के कक्ष से निकलती हुई स्वरूपरानी की ओर मुखातिब होकर मोतीलाल ने पूछा, "ठीक तो है हमारी नन्हीं सी परी! इतनी क्यों रो रही है?"

मोतीलाल नेहरू की पुत्रवधू कमला ने जब इस नन्हीं सी परी को जन्म दिया, तो तब सब खुशी से झूम उठे थे और बधाइयों के तांते लग गए थे, किन्तु दादी स्वरूपरानी के मुंह से निकला, "अरे, होना तो लड़का चाहिए था।" उनकी इस बात से थोड़ी देर के लिए लोगों के चेहरे लटक गए, किन्तु तभी दादा मोतीलाल ने झुंझलाते हुए स्वरूपरानी से कहा, "ऐसी बात मुंह से कभी मत निकालना। हमने कभी बेटे-बेटियों में कोई फर्क नहीं माना है।"

हरी ने कहा, "हमारी इन्दू एक दिन हम सबका नाम रोशन करेगी।"

"तेरे मुंह में घी-शक्कर, परंतु अगले जन्म में!" मोतीलाल ने कहा, "क्योंकि पोती नाम रोशन जब करेगी, तब तक हम दोनों ही अगला जन्म ले चुके होंगे।"

"ना बाबा...ना...मैं अगले जन्म तक इंतजार नहीं कर सकता..." कहकर वह हंस पड़ा। चारों ओर भी हंसी के फुव्वारे फूट पड़े।

"क्या बात है, इंदू इतने जोर से क्यों रो रही है?" मोतीलाल ने पुनः पूछा, "बच्ची भूखी है क्या?"

स्वरूपरानी ने हंसते हुए जवाब दिया, "अरे कुछ नहीं उसकी

मालिश हो रही है।"

"देखो...इस घर में कितने सालों बाद किसी बच्चे की आवाज सुनाई पड़ी है।" मोतीलाल ने खुशी भरी आवाज में कहा, "कमला तो ठीक है ना?"

"'मां-बेटी दोनों ठीक हैं। आप फिक्र न करें...।" और जैसे उन्हें कुछ याद आया उसने हरी की ओर मुड़कर पूछा, "अरे हरी! मुंशी मुबारक अली की तबीयत पहले से बहुत अच्छी है। आपने तो कोई कसर छोड़ी नहीं, उनका इलाज कराने में।

"हुजूर...उन्हें बुढ़ापे की बीमारी है। आजकल तो उन्हें एक ही रट लगी रहती है सोते-जागते, यही कहते रहते हैं कि जवाहर भैया का बच्चा देख लें, तो दिल की मुराद पूरी हो जाए।"

"अब तो हमारी इंदू बीस दिन की हो गई है।" मोतीलाल ने स्वरूपरानी की ओर देखकर कहा, "उसे मुंशी मुबारक अली को दिखा दें, कोई हर्ज नहीं। उनकी मुराद पूरी हो जाए।"

"मैं आज ही इंदू को लेकर मुंशी मुबारक अली के पास जाऊंगी. ..और हां," उसने पूछा, "कमला के माता-पिता की कोई खबर आई? वे कब आ रहे हैं?"

"तार तो तभी भेज दिया था।" मोतीलाल ने बताया, "दो-चार दिन में वे आने ही वाले होंगे।"

उसी दिन दोपहर से कुछ पहले एक नर्स हरी व स्वरूपरानी के साथ इंदू को एक कश्मीरी शॉल में लपेट कर आनंद भवन के पीछे मुबारक अली के क्वार्टर में ले गई। मुंशी मुबारक अली अपनी खस्ता सेहत के बावजूद इंदू को देख गदगद हो गए और उसे दुआ देने लगे, "सूरज की तरह चमकेगा जवाहर का बेटा!"

सूरज की तरह चमकने वाली जवाहर की यह पुत्री इन्दू आज चार-पांच साल बाद ही बीबी अम्मा से उलझकर खेलकूद कर घर के

एक कक्ष में घुसी ही थी कि उसने देखा, परिवार के सभी सदस्य अपने क ीमती कपड़े इकट्ठे कर रहे हैं। उसके मन में जानने की इच्छा हुई कि आख़िर यह सब क्या हो रहा है? दादा जी उसके प्रिय साथी थे। वह उसकी हर शंका का समाधान करते थे। अपने दादा से इस बारे में पूछा, "यह सब क्या है दादा जी? इतने अच्छे-अच्छे कपड़ों का ढेर क्यों लगाया जा रहा है?"

"मेरी लाड़ली बिटिया," कहते हुए उन्होंने इन्दू को उठाकर पहले तो उसका मुख चूमा और फिर बताया, "आज हम लोगों ने स्वदेशी का व्रत लिया है। अब हम विदेशी कपड़े नहीं पहनेंगे। अपने देश में बने खादी के कपड़े ही पहनेंगे। विदेशी वस्त्रों को जला दिया जाएगा।"

इन्दू गोदी से उतर गई और वह भी नन्हे-नन्हे हाथों से अपने विदेशी कपड़े इकट्ठे करके दादा जी के साथ चलने को तैयार हो गई। बड़े उत्साह से उसने उस होली में भाग लिया। अपने सुन्दर-सुन्दर कपड़ों के लिए उसका मन ज़रा भी नहीं ललचाया। उसने आनंद भवन में जहां कहीं भी विदेशी वस्त्र थे, सभी को होली की भेंट चढ़ाने में महती भूमिका निभाई और आनंद से सराबोर हो गई।

"ताता...हमारे इस आनंद भवन को किसने बनाया है?" इन्दू ने अपने दादा से जिज्ञासा भरी जानकारी लेनी चाही, "क्या आपके दादा ने बनाया है?"

"क्यों इसमें कोई कमी है क्या?" मोतीलाल ने उसे गोद में उठाकर प्रेम से पूछा, "यह सुंदर तो है, पर तुम्हारे से ज्यादा सुंदर नहीं।"

"इतने बड़े-बड़े कमरे, लेकिन हमारी गुड़िया के लिए तो कोई कमरा इसमें है ही नहीं..."

"अब बनवा देंगे..."

"मगर पहले क्यों नहीं बनाया? हम कहां थे उस समय, जिस

समय यह बनाया गया?"

"बेटी! इसे हमने नहीं बनवाया, इसकी तो अपनी ही अलग से कहानी है और वह भी ऐतिहासिक गाथा।"

"ऐतिहासिक कहानी...हमें ऐतिहासिक कहानियां सुनना बहुत अच्छा लगता है, सुनाओ ना ताता...क्या कहानी है हमारे इस आनंद भवन की?"

"इलाहाबाद के इस आनंद भवन में जिसमें इन्दू तुम्हारा जन्म हुआ, यह भारत की आजादी की लड़ाई का केंद्र है, जो हम अंग्रेजों से लड़ रहे हैं। इसी विशाल और विराट कोठी का एक हिस्सा स्वतंत्रता संग्राम के इस ऐतिहासिक काल में स्वराज भवन के रूप में तब्दील किया गया है, यहां से अंग्रेजों की गुलामी के विरुद्ध आजादी की लड़ाई का लंबा संघर्ष चलता रहे, यही हम सबकी इच्छा है।"

"क्या आजादी की चल रही इस जंग में आनंद भवन ही सबसे महत्वपूर्ण केंद्र है?"

"हां, लेकिन हमारे स्वतंत्रता संग्राम के निर्माणाधीन इतिहास में दो केंद्र ही सबसे अधिक महत्त्व रखते हैं, एक तो गांधी जी का गुजरात-अहमदाबाद स्थित साबरमती के तट पर मौजूद साबरमती आश्रम और दूसरा केंद्र है हमारे संयुक्त प्रांत में—इलाहाबाद में गंगा नदी से कुछ दूरी पर स्थित यह आनंद भवन। साबरमती आश्रम तो गांधी जी के मुख्य संघर्ष केंद्र के रूप में अभी विख्यात हुआ है, लेकिन आनंद भवन तो बापू के भारत आगमन से पहले ही आजादी के संघर्ष का मुख्यालय बन चुका था।"

"यहां क्या चल रहा है, वह हम अच्छी तरह जानते हैं! हम तो इसके निर्माण की कहानी सुनना पसंद करते हैं।"

"उसमें क्या रखा बेटी," मोतीलाल ने समझाया, "इस कोठी के निर्माण की पृष्ठभूमि में हमारे देश के सन् 1857 के प्रथम सशस्त्र स्वतंत्रता समर से उपजी अंग्रेजों की सम्राज्यवादी कूटनीति की साजिशें और कोशिशें भी जुड़ी हुई हैं। इन्हें जानकर क्या करोगी?"

"यही तो हम जानना चाहते हैं?"

"मगर क्यों?"

"हम भी कुछ करना चाहते हैं, बस कह दिया ना!"

"क्या करना चाहती हैं आप?"

"अंग्रेजों को भारत से भगाना!"

"ओह! यह बात है," मोतीलाल गर्व से बताने लगे, "सन् 1857 की विफल भारतीय क्रांति के बाद अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हौसले बुलंद थे। उसके फौलादी पैर भारत में लगभग एक सदी के लिए जम गये थे। यहीं से भारत पर शासन करने का अंग्रेजी दौर शुरू हुआ। वे अर्ध सत्ताधारी व्यापारियों से पूर्ण सत्ताधारी शासकों में बदल गये और गैर कानूनी शासन को इंग्लैण्ड की साम्राज्ञी महारानी विक्टोरिया के हाथों में स्थानांतरित करके भारत की गुलामी को वैध बना दिया गया था। आधी-अधूरी जैसी भी प्रांतीय और केंद्रीय सत्ता थी, वह अंग्रेजों ने मुसलमानों से छीनी, इसलिए सन् 1857 में संग्राम का बदला तो उन्होंने हिंदू-मुसलमानों सहित प्रत्येक भारतीय से लिया, लेकिन अंग्रेजों ने सत्ताच्युत मुसलमानों को अपना पहला दुश्मन माना, क्योंकि विद्रोह का अपेक्षाकृत ज्यादा खतरा उन्हें सत्ता से अपदस्थ मुसलमानों से था। हिंदू-मुसलमानों की एकजुटता से अंग्रेज चौकन्ने भी हो गये थे। अपनी शासकीय वैधता और वर्चस्व बनाये रखने के लिए उन्हें समर्थकों की बेहद जरूरत थी।"

"तो क्या उन्होंने अपने समर्थक बनाए...बनाए तो कौन बने उनके समर्थक?"

"मुसलमानों से संबंध सुधारने और भारतीय सामुदायिक एकता में मौजूद सतही धर्मगत विभिन्नताओं का इस्तेमाल भी अंग्रेजों ने बड़ी कुशलता से किया। इस नीति के दोनों तरह के, सकारात्मक और नकारात्मक पहलू थे। इसी के तहत भारत के तत्कालीन अंग्रेज गवर्नर जनरल व फ्रंटियर सूबे के लेफ्टीनेंट गवर्नर सर विलियम म्यूर ने सर सैयद अहमद खां को सन् 1867 में एक पत्र लिखा। यह उस समय की

बात है, जब उत्तर प्रदेश का नाम 'यूनाइटेड प्राविंसिज ऑफ आगरा और अवध' था और इस प्रांत की क्षेत्रीय राजधानी इलाहाबाद थी। जाहिर है कि प्रांतीय हाईकोर्ट सहित सभी सरकारी दफ्तर इलाहाबाद में ही थे और आज भी हैं।"

"क्या लिखा था उस पत्र में?"

"सर विलियम म्यूर ने सर सैयद अहमद खां को लिखा–

'प्रांतीय राजधानी में होने वाली जरूरी मीटिंगों और सलाह मशवरे के लिए आपकी जरूरत हमेशा ही पड़ती रहती है और तकलीफ उठाकर बार-बार आपको इलाहाबाद में रुकना और वक्त गुजारना पड़ता है, इसलिए हमने (सरकार ने) तय किया है कि इलाहाबाद में आपके लिए एक कोठी बनवा दी जाए, जहां आप प्रवास के दौरान ठहर सकें। इसके लिए 20 एकड़ जमीन की शिनाख्त भी कर ली गई है, जो गवर्नमेंट हाउस से दस मिनट की दूरी पर है।'

"सर सैयद अहमद खां ने यह प्रस्ताव मंजूर कर लिया। अंग्रेज सरकार ने कोठी बनवा दी। सर सैयद ने इस कोठी का नाम अपने बेटे महमूद के नाम पर 'महमूद मंजिल' रखा। उनके बेटे महमूद साहब उस वक्त इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज थे। जब जस्टिस महमूद रिटायर हुए तो उनके बेटे रोस महमूद ने हैदराबाद में रहना तय किया। यह कोठी महमूद मंजिल मुरादाबाद के एक रईस राय बहादुर राजा परमानंद पाठक के हाथों बेच दी गई। उन्होंने इसका नाम बदलकर 'पाठक निवास' कर लिया।"

"हम तो आनंद भवन का इतिहास..."

"यही तो हम बता रहे हैं बेटी," मोतीलाल ने कहना जारी रखा, "सन् 1898 में हमने यह कोठी 20,000 रुपए में पाठक परिवार से खरीद ली और इसका नाम बदलकर आनंद भवन रख लिया।"

"हम इसमें कब रहने आए?"

"सन् 1900 में हमारा नेहरू परिवार इसमें रहने आ गया।"

"उस समय हमारे पापू कितने बड़े थे?"

"उस समय तुम्हारे पिता जवाहर लाल नेहरू की उम्र दस वर्ष थी।"

"और तभी से यह आनंद भवन हम भारतीयों की आजादी के संघर्ष का केंद्र बन गया। हमने ठीक कहा ना ताता...?"

"तुम कुछ गलत कह ही नहीं सकती बेटी..." मोतीलाल ने कहा, "जीवन का क्या भरोसा, इसलिए हमने इस भवन के जरूरी रिहायशी हिस्से को अलग रखकर शेष बड़ा हिस्सा स्वतंत्रता संघर्ष के लिए देश को समर्पित कर दिया और इसे स्वराज भवन का नाम दे दिया है।"

"और इस प्रकार अंग्रेजों की हिमायती कार्रवाइयों के लिए बनाई गई 'महमूद मंजिल' अंग्रजी सत्ता के विरोध का केंद्र बन गया और इसने आनंद भवन और अंततः स्वराज भवन के रूप में भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास के मुख्यालय का दर्जा हासिल किया और इसी आनंद भवन में हमारा जन्म हुआ, हम तो जन्म से धन्य हो गई ताता...।"

"लो पूरी रामायण हो गयी और हमें पता भी नहीं चला कि..."

"क्या हुआ बेटी..."

"कल आनंद भवन का पूरा इतिहास खोलकर रख दिया था आपने, लेकिन मुंशी जी के बारे में तो..."

"ओह!" मोतीलाल ने इन्दू को बताया, "मुंशी मुबारक अली की दास्तान भी बहुत से बरबाद-बदहाल ताल्लुकेदारों-जमींदारों जैसी ही है, यह तो तु जानती ही है कि वे हमारी इस आलीशान कोठी आनंद भवन और घरेलू कामकाज की देखभाल किया करते थे। घर के लोग प्रतिष्ठा से उन्हें चचाजान और उनके बेटे मंजर अली को मुन्नाभाई कहकर पुकारते हैं।"

"यह तो हम भी जानते हैं और कुछ है उनके बारे में जो हम नहीं जानते?"

"क्यों नहीं है?" उन्होंने कहना जारी रखा, "मुबारक अली का

घराना बदायूं के जागीरदारों का है। उनके बुजुर्गों ने सन् 1857 के सशस्त्र स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के खिलाफ हिस्सा लिया था। उनके पिता दिल्ली की रक्षा करते हुए अंग्रेजी फौज के हाथों शहीद हुए थे। उनके घराने की सारी जागीर पर अंग्रेजी हुकूमत ने कब्जा कर लिया और शहीदों का यह परिवार दर-दर भटकने के लिए मजबूर हुआ। मुबारक अली काम की तलाश में भटकते हुए बदायूं से इलाहाबाद पहुंचे थे।''

दिन भर की सख्त गर्मी के बाद शाम का मौसम कुछ बेहतर था और फिर आनंद भवन के विशाल लॉन की हरी घास, तरतीब से लगीं तरह-तरह के फूलों की क्यारियां और चारों ओर के पेड़ गर्मी का अहसास नहीं होने देते थे। मेहमान आने लगे थे, जवाहर लाल और कमला नेहरू आगे बढ़कर उनका स्वागत कर रहे थे। कुर्सियों पर बिठाते थे। मोतीलाल अपने कुछ मित्रों के साथ बैठे बातों में मशगूल थे। स्वरूपरानी अपनी गोद में इंदू को लिए बैठी थी।

मेहमानों में से एक बुजुर्ग ने जवाहर लाल के कंधे पर हाथ रख कुछ शिकायत भरे लहजे में प्यार से कहा, ''बरखुरदार आजकल आप कोर्ट में नहीं दिखाई पड़ते, लगता है वकालत में मन नहीं रमता।''

''मन तो रमता है, लेकिन...''

''लेकिन क्या?''

''सोचता हूं कि,'' जवाहरलाल नेहरू ने आदर सहित उत्तर दिया, ''अभी अनिर्णय की स्थिति में हूं कि मुझे करना क्या है? वकालत या देशसेवा...।''

''मतलब?''

''चचाजान! लखनऊ कांग्रेस में जब से गांधी जी से मेरी मुलाकात हुई है, तब से मैं उनसे बेहद प्रभावित हूं और आज सरोजिनी नायडू ने जो भाषण दिया है, उससे तो मैं अंदर तक हिल गया हूं।''

बातें करते-करते वे मोतीलाल के पास पहुंचे, तो बुजुर्ग को देख मोतीलाल खड़े हो गए और उलाहना देते हुए बोले, "जनाब तो जवाहर के साथ ही बातों में इतने मशगूल हैं कि हमारा तो ख्याल ही नहीं आया।"

"आपकी बातें सुनते-सुनते तो जमाना बीत गया," बुजुर्ग ने तुरंत जड़ा, "आपकी मॉडरेट पॉलिटिक्स से तो कुछ हासिल हुआ नहीं...अब तो नौजवानों से जानने की कोशिश कर रहे हैं।"

सब हंस पड़े। बुजुर्ग आगे बढ़कर स्वरूपरानी के पास पहुंचे और इंदू के गाल थपथपाए, "बड़ी प्यारी बच्ची है।"

तभी सरोजिनी नायडू भी पहुंच गई। सब खड़े होकर उनका अभिवादन करने लगे। वह आगे बढ़कर इंदू को प्यार करने लगी, "कितनी ग्रेसफुल बेबी है! इसकी आंखों में जो चमक है, वो मैंने कम ही बच्चों की आंखों में देखी है!" उसने इंदू को बड़े लाड़ और चाव से देखा और दुलारा। मेहमानों और मेजबानों—दोनों की बातचीत का सिलसिला राजनीति, गांधीजी और कांग्रेस की ओर मुड़ गया।

आनंद भवन की लाइब्रेरी में एक बड़ी-सी मेज पर फाइलों और किताबों का ढेर लगा हुआ था। मेज के एक ओर मोतीलाल बैठे थे और उनके पास खड़ी थी बालिका इंदू। जवाहर लाल ने सामने कुर्सी से उठकर कागजात का एक बंडल मोतीलाल की ओर बढ़ाते हुए पूछा, "क्या आपने जांच कमीशन की रिपोर्ट देख ली है?"

"प्रत्यक्षदर्शियों के बयान मेरे सामने ही दर्ज किए गए थे, और उनमें जलियांवाला बाग में अंग्रेज सिपाहियों की बर्बरताओं का वर्णन है।"

"कितने निर्दयी हैं अंग्रेज...! इनमें मानवता का अंश तो जरा भी नहीं!"

"इसी बात का तो रोना है...।"

“इनसे पिण्ड कैसे छुड़ेगा।”

“छुड़ेगा...अवश्य छुड़ेगा, गांधी जी अवश्य कुछ न कुछ ऐसा कर दिखाएंगे, जो अबसे पहले कभी नहीं हुआ और अंग्रेजों को सिर पर पैर रखकर भागना पड़ेगा।”

“असंभव-सा लगता है, क्योंकि जब मैं अमृतसर से दिल्ली आ रहा था तो उस समय रेल के डिब्बे में हत्यारा डायर भी था और अपनी शेखी बघार रहा था।”

“शेखी क्यों न बघारता, उसे गर्व है अपनी करतूत पर...”

“पर क्या अंग्रेजों की हिंसा का उत्तर गांधी जी की अहिंसा...”

“क्यों नहीं...तभी तो हम गांधी जी के साथ हो गए हैं। और विदेशी कपड़ों को छोड़ खादी पहनना शुरू कर दिया है।”

परिवार के सभी सदस्यों के साथ बालिका इंदू अपनी छोटी बुआ कृष्णा की गोद में बैठी थी, “बुआ! तुम हमें कहानी क्यों नहीं सुनाती!”

“अवश्य सुनाऊंगी मेरी बच्ची, लेकिन शाम तो हो जाने दे।”

“क्यों अब क्यों नहीं?”

“दिन में कहानियां नहीं सुनाते!”

“मगर क्यों?”

“जो दिन में कहानी सुनता है, उसके मामा रास्ता भूल जाते हैं।”

“मामा क्या, हमारे तो सारे देशवासी ही रास्ता भूले हुए हैं!”

“क्या मतलब!”

“हम रास्ता नहीं भूलते, तो क्या अब तक गोरे हमारे देश में रह सकते थे।”

बालिका की बात सुनकर कृष्णा स्तब्ध रह गई।

थोड़े ही दिन बाद पेरिस से आई एक रिश्तेदार शाम को एक

खूबसूरत सी फ्रॉक इंदू के लिए लाई, पर कमला नेहरू ने उसे लेने से इंकार करते हुए कहा, "नहीं रहने दो इसकी कोई जरूरत नहीं।"

"मगर इसमें बुराई क्या है?"

"हम विदेशी कपड़ों का बहिष्कार कर चुके हैं।"

और इस बीच कमरे में इंदू आ पहुंची। उसके हाथ में एक विदेशी गुड़िया थी, जिसे वह बहुत चाहती थी। इंदू को जब वह फ्रॉक दिखाई गई, उसने भी उसे लेने से इनकार कर दिया, "मुझे नहीं चाहिए!"

"मगर क्यों बेटी?"

"इसे देखते ही विदेशी कपड़ों की होली मेरी आंखों के सामने आ गई और वह मुझे चिढ़ा रही है।"

इस पर रिश्तेदार ने गुड़िया की ओर संकेत किया, "यह गुड़िया भी तो विदेशी है।"

छोटी-सी इंदू के मन में गहरी चोट लगी और वह किसी को बताए बिना कुछ निर्णय लेकर छत पर पहुंची। देर तक वह गुड़िया को देखती रही, उसे सीने से चिपकाकर प्यार करती रही। उसकी आंखों में आंसू आ गए, पर जी कड़ा करके इंदू ने गुड़िया को जला दिया। जलती गुड़िया को देखकर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

कचहरी जाने का समय हो गया था। जवाहरलाल ने अभी अपनी वकालत की प्रैक्टिस पूरी तरह से नहीं छोड़ी थी। वह अनिर्णय की स्थिति में थे। एक ओर प्रैक्टिस थी तथा दूसरी ओर देश का राजनीतिक माहौल व अंग्रेजों के बढ़ते अत्याचार। अपने इस असमंजस को उसने अपनी पत्नी कमला के सामने रखा, "क्या करूं कुछ समझ में ही नहीं आता!"

"एक ओर क्यों नहीं हो जाते!"

"बहुत खूब!"

"आपको वही कार्य करना चाहिए, जो आप पसंद करते हैं।"

तभी उनका ध्यान इंदू की ओर गया, जो वहां से दिख नहीं रही थी, "इन्दू कहां है?"

"यहीं कहीं होगी, जानते हो उसने अपनी सबसे प्यारी गुड़िया जला दी।"

"क्यों?"

"विदेशी जो ठहरी थी।"

"पर...।"

"वह तब ही से उदास रहने लगी है और बीबी अम्मा से तो बेहद चिढ़ती है।"

"बच्ची है, समझ जाएगी।" फिर उठते हुए बोले, "अच्छा चलता हूं।"

जवाहर बाहर निकलने लगे तो उन्हें इंदू बरामदे में बैठी दिखाई दी, अकेली, उदास और अनमनी-सी। वह उसकी ओर देखते हुए निकल गए।

थोड़े दिन में इंदू की उदासी का सिलसिला टूट गया और वह फिर शाम को अपने दादाजी के साथ उनके दोस्तों के बीच बातें सुनने में दिलचस्पी लेने लगी। उस दिन मोतीलाल ने बताया, "जलियांवाला बाग के हत्याकांड से क्षुब्ध होकर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपना 'नाइट' का खिताब वापस कर दिया है।"

"गुरुदेव ने किया तो अच्छा ही है," एक मित्र ने अपने विचार रखे, "लेकिन इससे उन्हें अग्रेजों का कोपभाजन बनना पड़ेगा।"

"लेकिन अब तो पूरा देश ही अंग्रेजों का कोपभाजन बना हुआ है।"

"हां, देश में न जाने कैसी हवा चल रही है, इस हवा ने वसुधैव कुटुम्बकम् की धज्जियां उड़ाकर रख दी हैं।"

मोतीलाल पूरी तरह से राजनीति में उतर चुके थे। दिसंबर 1921 को सरकार ने उत्तर प्रदेश और बंगाल के स्वयंसेवक संगठनों पर जो रोक लगाई थी, उसका विरोध करने के लिए उन्होंने स्वयंसेवकों की सूची अखबारों में छपने भेजी और उसमें अपना नाम सबसे ऊपर रखा।

गिरफ्तारी तो होनी ही थी। दूसरे दिन मोतीलाल और जवाहर लाल दोनों को गिरफ्तार करने पुलिस आई, इन्दू खड़ी देख रही थी, ''इन्हें कहां ले जा रहे हैं?'' वह पुलिसवालों से पूछने लगी।

''जेल में...''

''क्यों?''

''तुम नहीं समझोगी, अभी बच्ची हो।''

''मैं क्यों नहीं समझ सकती?''

''समझ सकती हो तो समझो,'' एक पुलिसवाले ने कहा, ''इन्होंने सरकार के खिलाफ कार्य किया है।''

''क्या अपनी आजादी के लिए संघर्ष करना बुरी बात है?''

''बुरी बात नहीं...लेकिन...रास्ता छोड़ो...दूध के दांत टूटे नहीं और वकालत करने लगी।''

''वकील की बेटी जो ठहरी...।'' कहकर जवाहर मुस्करा दिए।

मोतीलाल और जवाहरलाल को जेल भेज दिया गया। नन्हीं-सी इंदू इन सब घटनाओं की केवल साक्षी ही नहीं, उसके कोमल मस्तिष्क पर ये घटनाएं अपनी अमिट छाप भी छोड़ती जा रही थी।

मोतीलाल और जवाहरलाल दोनों को सजा के साथ हजार रुपए का जुर्माना भी हुआ, जिसे उन्होंने अदा करने से इंकार कर दिया। उस जुर्माने के बदले घर का बेशकीमती सामान कुर्क कर लिया गया। इस घटना पर बीबी अम्मा की प्रतिक्रिया से इंदू को और भी चोट पहुंची, ''तो क्या गुनाह किया था ताता और पा...''

''गुनाह नहीं तो और क्या किया था, अंग्रेज सरकार से उलझना क्या गुनाह नहीं, जिनके राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता, उनसे दुश्मनी...''

"बस...बस...रहने दो बीबी अम्मा...राज्य उनका होगा, लेकिन देश हमारा है और हम जैसा चाहेंगे वैसे यहां रहेंगे और...।"

"और क्या तू भी जा भिड़ दो-चार गोरों से..."

"भिड़ूंगी...जरूर भिड़ूंगी...पहले बड़ी तो होने दो...जाओ हमारे लिए दूध लेकर आओ...।"

"दूध और इस समय...?"

"हम दूध नहीं पिएंगे, तो बड़े कैसे होंगे और बड़े नहीं होंगे, तो अंग्रेजों से कैसे भिड़ेंगे?"

पांच साल की इंदू को पढ़ने के लिए इलाहाबाद के एक जर्मन स्कूल में भेजा गया, परंतु उसके खादी के कपड़ों पर संगी-साथियों की लगातार टीका-टिप्पणियों के चलते वहां उसका मन नहीं लगा, "क्यों, खादी पहनने में क्या बुराई है?" उसने एक साथी से पूछा।

"बारहवीं सदी के कपड़े और आज के युग में...?"

"युग बदलने से क्या पहनावा और संस्कृति भी बदल जाती है?" उसने प्रश्न किया।

"क्या पाषाण युग की संस्कृति नहीं बदली, जब लोग घास-पात को वस्त्रों के स्थान पर लपेटते थे!" साथी का तर्क था।

"लेकिन खादी हमारी राष्ट्रीयता की पहचान है।"

"इतने ही राष्ट्रभक्त हो तो फिर गुलामी का दंश क्यों झेल रहे हो?" एक विदेशी छात्र का प्रश्न था।

इन्दू उसके मुख को देखती रही। छात्रों के तर्क-वितर्क और तानों से वह व्यथित हो उठी और स्कूल जाने से कतराने लगी।

जवाहरलाल को बेहद लगाव था अपनी बेटी से। 22 अक्टूबर 1922 में उन्होंने इंदू को पत्र लिखा। पत्र में उन्होंने इंदू से जेल आकर उनसे मिलने को कहा और चर्खे की याद दिलाई तथा उससे उसका कता हुआ थोड़ा-सा सूत भी मंगाया। इंदिरा खादी के कपड़े ही पहनने

लगी थी और खादी की वर्दी तथा गांधी टोपी में वह अक्सर लड़का ही लगती थी। पिता के नाम वह जो पत्र लिखती थी, उसमें वह अपने हस्ताक्षर 'इंदू बेटा' के रूप में करती थी।

मोतीलाल और जवाहरलाल जेल से छः महीने बाद रिहा होकर वापस आ गए और आनंद भवन में बैठकों का सिलसिला फिर चालू हो गया। इंदिरा इन सब मीटिंगों में बैठने लगी। ऐसी ही एक बैठक में जब आगे की कार्रवाई की बात उठी, तो जवाहरलाल ने सुझाव दिया, "कुछ करने से पहले गांधीजी से बात कर लेनी चाहिए।"

"हां बापू से बात करना अच्छा रहेगा, वही हमें आजादी दिला सकते हैं और उनका मार्ग ही आजादी की मंजिल की ओर जाता दिखाई देता है।"

"तो अब...?"

"तो अब क्या, तुम साबरमती जाकर गांधीजी से मिल आओ और वहां से लौटकर कमला और इंदू के साथ कुछ समय के लिए मंसूरी आराम करने चले जाना।"

"साबरमती जा रहे हो ना," मालवीय जी ने अपनी बात रखी, "अच्छा हो कि अहमदाबाद तुम बहू को भी ले जाओ।"

"यानी कि अम्मा को," खुशी से इन्दू बीच में बोल पड़ी, "मैं भी गांधी बाबा से मिलना चाहती हूं।"

"हां...हां...क्यों नहीं...गांधी बाबा से जरूर मिलना।" मोतीलाल ने इन्दू की पीठ थपथपाते हुए कहा।

इन्दू की महात्मा गांधी की राह पर चलने की यात्रा शुरू हो गई थी।

कमला प्रकृति से ही पतली दुबली थी। नवंबर 1924 में अर्थात इंदू के जन्म के लगभग सात वर्ष बाद कमला ने एक और बच्चे को

जन्म दिया, परंतु वह समय पूर्व जन्मा था और दो दिन बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। जवाहरलाल और इंदू के साथ-साथ इसका सबसे बड़ा सदमा कमला को लगा। कमला बीमार पड़ गईं। लखनऊ के डॉक्टर ने उनको विदेश, स्वीट्ज़रलैंड ले जाने की सिफारिश की।

लंबी समुद्री यात्रा ने कमला नेहरू की तबीयत को और बिगाड़ दिया था। अतः तीन दिन वेनिस रुकने के बाद जवाहरलाल उन्हें लेकर ट्रेन से जेनेवा पहुंचे। नए वातावरण को इंदू ने बेहद पसंद किया। जेनेवा में समस्या थी भाषा की। वहां जवाहरलाल ने इंदू को समझाया, ''अब तुम्हें अपने आप रहने की आदत डालनी होगी और फ्रांसीसी सीखनी होगी, ताकि फ्रेंच परिचारिका को बता सको कि तुम्हें और मम्मी को क्या चाहिए और बाजार से शॉपिंग भी तुम्हें ही करनी होगी।''

''मगर मैं फ्रांसीसी कैसे सीख सकती हूं।''

''क्यों...क्यों नहीं सीख सकती तुम फ्रांसीसी?''

''यहां कोई टीचर...''

''टीचर की क्या आवश्यकता है!''

''तो फिर?''

''कोई भी भाषा व्यवहार से सीखी जा सकती है।''

''क्या सचमुच...''

''बच्चा बोलना क्या व्यवहार से नहीं सीखता?''

''हूं...'' इन्दू ने मुंह पिचका लिया।

फिर तो इंदू ने धीरे-धीरे काम चलाऊ फ्रेंच सीखी और परिचारिका के साथ बाजार जाकर जरूरत का सामान ले आने लगी।

इंदू साढ़े आठ साल की हो गई थी। पिता को उसकी पढ़ाई की चिंता सताने लगी। जवाहरलाल ने उसका दाखिला जेनेवा के कोले इंटरनेशनल स्कूल में करा दिया। इस बहुभाषी स्कूल (फ्रांसीसी, जर्मन

और इंग्लिश) की स्थापना लीग ऑफ नेशंस के सदस्य देशों के बच्चों के लिए की गई थी। इंदू स्कूल में रम गई। स्कूल जाने-आने के लिए वह लंबी दूरी तक पैदल चलती, फिर ट्राम और बस पकड़ती। सुबह साढ़े आठ से शाम के छः बजे तक की उसकी यह रोज की यात्रा उसमें गजब का आत्मविश्वास भर देती थी। कमला ज्यादातर बिस्तर पर ही रहती थी।

जेनेवा का प्रवास और स्कूल ने इंदू में आमूल-चूल परिवर्तन ला दिया। वहां वह अधिक खेल खेलती और विभिन्न देशों के बच्चों से मिलती-जुलती। वहां उसने प्रकृति और जीव-जंतुओं से प्यार करना सीखा। पेड़-पौधों की दुनिया के बारे में उसकी दिलचस्पी बढ़ती गई। अब वह अच्छी तरह से फ्रेंच बोल सकती थी। कमला को यह देख बड़ी खुशी होती थी।

यूरोप के अपने दौरे के बाद जवाहरलाल जब जेनेवा लौटे, तो वे तीनों समय-समय पर स्वीट्ज़रलैंड की खूबसूरत वादियों में घूमते-टहलते अैर बर्फ के खेल भी खेलते रहते थे। कमला बैठी-बैठी देखती रहती थी। इंदू की उत्सुकता अपने देश के बारे में बढ़ती जाती थी, ''क्या अंग्रेजों से पहले हमारा अपने देश में स्वतंत्र राजपाट था?''

''नहीं...हूणों, पठानों और मुगलों ने भी भारत पर राजपाट किया है।''

''क्या ये हमारे अपने लोग नहीं थे?''

''नहीं ये सभी बाहर से आए थे।''

''क्या हम अपने ही देश में अपना शासन चलाने योग्य नहीं थे, जो हम पर शासन करने के लिए बार-बार विदेशियों को आना पड़ा?''

''नहीं ऐसी बात नहीं है...वीर भोग्या वसुंधरा अर्थात् यह भूमि वीरों के भोगने के लिए ही है। जो वीर होता है वह कहीं भी अपना राज्य स्थापित कर लेता है।''

''क्या आप वीर नहीं हैं?''

''क्यों किसने कहा, हम वीर नहीं हैं?''

"किसी ने भी नहीं, लेकिन...?"

"लेकिन क्या?"

"यदि आप वीर हैं, तो अंग्रेजों को भगाकर भारत पर शासन क्यों नहीं करते?"

जवाहर को कुछ बोलते न बना।

कमला नहरू की तबीयत में सुधार आने लगा था और वे कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में भाग लेने के लिए चलने की तैयारी करने लगे थे। कमला नेहरू भी उत्साहित थी। वह कांग्रेस में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए काम करने की बात करने लगी थी, "जब तक महिलाएं भी अंग्रेजों का विरोध नहीं करेंगी, तब तक आजादी मिलना असंभव है।"

"क्या मतलब?"

"मैं समझती हूं कि महिलाओं के आगे अंग्रेज जल्द घुटने टेक सकते हैं," कमला ने नेहरू से कहा, "इसलिए कांग्रेस में अधिक से अधिक महिलाएं शामिल होनी चाहिएं।"

"क्या तुम भी शामिल होना चाहती हो?"

"मैं कांग्रेस में शामिल नहीं होऊंगी, तो देश कैसे आजाद होगा!" कहकर वह मुसकरा दी थी, नेहरू ने उसे आज बहुत दिनों बाद मुसकराते देखा था।

यूरोप से श्रीलंका और श्रीलंका से समुद्री जहाज से जवाहरलाल, कमला नेहरू और इंदू मद्रास तट पर पहुंचे। वहां से उनकी यात्रा मोटरकार से हुई। इंदू पहली बार दक्षिण भारत देख रही थी, "मुझे तो आज ही पता चला कि मेरा भारत इतना सुंदर है!"

"क्यों पहले पता नहीं था क्या?"

"था तो...लेकिन विविधता में एकता पहली बार देख रही हूं।"

"हां विविधता में एकता के कारण ही तो हमारा भारत महान

है।'' और इस प्रकार इन्दू बाहर के दृश्यों को देखती और जवाहरलाल उसे कभी-कभी मनुष्य के उद्‌विकास के बारे में बताते और उसकी शंकाओं का समाधान करते रहते थे।

कांग्रेस अधिवेशन को इंदू और कमला पहली बार देख रही थी। इसमें एम.ए. अंसारी, सुभाषचंद्र बोस, जयकर, मिसेज एनीबेसेंट, मोतीलाल नेहरू तथा जवाहरलाल नेहरू के साथ अन्य नेतागण भाग ले रहे थे।

इंदू सारी कार्रवाई को ध्यान से देखती रही। झंडा-रोहण, सेवादल की सलामी और देशभक्तिपूर्ण गीत— ये सब उसके लिए नए अनुभव थे।

मंच से जवाहरलाल ने साम्राज्यवाद विरोधी संघ बनाने का प्रस्ताव रखा तथा सामाजिक आजादी की और फिरकापरस्ती से बचने की बात की, ''इस साम्राज्यवाद ने सारी दुनिया को कुचलकर रख दिया है, अब विश्व में साम्राज्यवाद की नहीं, मानवतावाद की जरूरत है। इसलिए मैं साम्राज्यवाद विरोधी संघ बनाने का प्रस्ताव पेश करता हूं।''

''मैं सहमत हूं और अनुमोदन करती हूं।'' मिसेज एनीबेसेंट ने खड़ी होकर कहा।

''तो क्यों न यह संघ आज ही गठित कर दिया जाए!''

''क्यों नहीं!'' नेताजी सुभाष ने अपनी राय दी।

''यदि किसी को कोई आपत्ति न हो तो मैं इस संघ के अध्यक्ष पद के लिए एम.ए. अंसारी का नाम प्रस्तावित करता हूं।''

''हमें स्वीकार है।'' नेताजी ने कहा।

इस प्रकार एम.ए. अंसारी को अध्यक्ष चुन लिया गया।

अधिवेशन के समापन के बाद जवाहरलाल, कमला नेहरू और इंदू ने दक्षिण भारत के अनेक अन्य स्थानों की यात्रा की। हर जगह उनका भारी स्वागत हुआ। तिरुअनंतपुरम रेलवे स्टेशन पर लोगों ने नारे लगाते

हुए आसमान गुंजा दिया :

"जवाहरलाल जिंदाबाद..."

"भारत माता की जय..."

"गांधी जी की जय..."

नारे लगाने वालों ने उनको फूल मालाओं से लाद दिया।

कुछ दिनों तक दक्षिण भारत घूमने के बाद वे रेल से इलाहाबाद लौट रहे थे। एक सुबह के अखबार के पहले पृष्ठ पर सांप्रदायिक दंगों और खून खराबों की खबरें थी। इंदू ने पढ़कर दुख व्यक्त किया, "अपने ही लोगों के खून के प्यासे क्यों हैं लोग?"

"अंग्रेजों की नीति के कारण।"

"मतलब!"

"फूट डालो और राज करो की नीति अपनाकर अंग्रेज हमें आपस में भिड़ा रहे हैं और स्वयं अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं।"

"क्या लोगों को समझाया नहीं जा सकता कि अंग्रेजों की चाल में मत फंसों।"

"बहुत मुश्किल कार्य है, ऐसा तो कोई महापुरुष ही कर सकता है।"

"क्या भारत में महापुरुषों का अकाल पड़ गया है?"

"नहीं अकाल तो नहीं पड़ा...यहां तो कभी राम...कभी कृष्ण... कभी बुद्ध आते ही रहे हैं। ऐसे ही किसी महात्मा की जरूरत है देश को!"

इलाहाबाद वापस आते ही जवाहरलाल नेहरू की राजनीतिक गतिविधियां शुरू हो गई थी। इंदू आनंद भवन के अध्ययन कक्ष में बैठकर किताबें पढ़ती रहती थी। वह जबरदस्त पढ़ाकू बन चुकी थी। 'जोन ऑफ आर्क' से वह बेहद प्रभावित हुई, 'एक लड़की होते हुए भी उसने अंग्रेजों के खिलाफ कितना संघर्ष किया है?' उसे गैरीबाल्डी और

वोलीवार्स की कहानियां याद हो गई थी, जिन्हें जवाहरलाल सुनाया करते थे, परंतु जान आफ आर्क उसे उसकी अपनी ज़िंदगी की कहानी सी ही लगती थी।

एक दिन वह पढ़ रही थी कि नेहरू ने उससे कहा, ''इतनी मत पढ़ा करो, बचपन में ही बापू की तरह चश्मा लग जाएगा।''

''अच्छा ही तो है, चश्मा लग जाए।''

''मतलब!''

''लैंस का चश्मा नहीं...ज्ञान का चश्मा...!''

''ओह...अच्छा, जाओ लॉन में जाओ तुम!''

''क्यों?''

''वहां तुम्हारे दादाजी तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।''

''दादू...'' वह मुस्करा उठी और लॉन की ओर चल पड़ी।

लॉन में पूरा परिवार कुसिर्यों पर बैठा बातें कर रहा था। कमला नेहरू कुछ चिंतित दिखाई पड़ रही थी। मोतीलाल उन्हें समझा रहे थे, ''तालीम का मतलब एक दर्जा पास करके दूसरे में चले जाना नहीं। तालीम का कोई ताल्लुक स्कूली पास-फेल से नहीं, इसलिए अगर इन्दू की तालीम रेगूलर नहीं है, तो तुमको इसकी कोई फिक्र नहीं करनी चाहिए।''

''पिताजी! यह फिक्र की ही तो बात है, इन्दू की बाकायदा तालीम नहीं हो पाई और इसके लिए मैं ही जिम्मेदार हूं।''

''नहीं, ऐसी बात नहीं है।''

''ऐसी बात क्यों नहीं है, इन्दू ज्योमैट्री और मैथ्स में बहुत कमजोर है।''

इस बीच जवाहरलाल भी आ पहुंचे और बीच में कमला की चिंता का निवारण करते हुए बोले, ''इसके लिए ट्यूटर लगा देते हैं,'' पास ही खड़ी इन्दू की ओर देखकर उसका हौंसला बढ़ाते हुए कहा, ''कमला, इसे किताबे पढ़ने में बड़ी दिलचस्पी है। इसने आज ही जान आफ आर्क पूरी की है।''

मोतीलाल ने इंदू को अपनी ओर खींचा और उसकी पीठ थपथपाई, ''शाबास! पुस्तक और मित्र भले ही कम हों, लेकिन अच्छे होने चाहिएं।''

दरअसल इलाहाबाद के उस कान्वेंट के वातावरण में इंदू का जी नहीं लगता था। छात्राएं और शिक्षिकाएं सभी अंग्रेज परस्त थीं। होली खेलने के बाद जब वह स्कूल पहुंची थी, तो चेहरे पर लगे रंग के निशानों को देख उसे पूरे दिन के लिए बैंच पर खड़ा कर दिया गया था।

आनंद भवन केवल राजनीति का ही केंद्र नहीं था। वहां आने वालों में स्वामी राजबल्लभ सिंह जैसे शायर भी थे, जिनकी देशभक्तिपूर्ण नज्मों को ब्रिटिश हुकूमत ने जब्त कर लिया था। वहां उनकी रचनाएं पढ़ी-सुनी जाती थीं। इन आयोजनों में इंदू बाकायदा उपस्थित रहती और रचनाओं को गौर से सुनती-गुनती थी। उसके दादाजी और पिताजी की राजनीतिक गतिविधियों को लेकर स्कूल में इंदू को लगातार प्रताड़ित किया जाता था। साथी लड़कियां उसके खादी के वस्त्रों का मजाक तो उड़ाती ही रहती थीं।

स्कूली पढ़ाई जैसी भी चल रही हो इंदू की दिलचस्पी विश्व साहित्य के क्लासिक्स में बढ़ रही थी। उन दिनों वह रोम्या रोलां के उपन्यास 'ला मिजरेबिल्स' पढ़ने में लगी थी।

महात्मा गांधी के इलाहाबाद पहुंचने पर उनकी अगवानी करने मोतीलाल और जवाहरलाल के साथ इंदू भी रेलवे स्टेशन पर पहुंची, तब उसे गांधी जी को नजदीक से देखने का मौका मिला, ''बापू...'' उसने पहली बार गांधी जी को पुकारा।

गांधी जी आनंद भवन के अतिथि गृह में रुके। एक छोटी-सी मीटिंग में जवाहर ने उनको बताया, ''साइमन कमीशन विरोधी सत्याग्रह पर हुकूमत के बहशियाना हमलों से मैं बहुत व्यथित हूं बापू!''

"तुम क्या! अंग्रेजों के अत्याचार से तो सभी प्रताड़ित और व्यथित हैं।"

"हां सही कहा आपने...अवध के किसानों में भी बेचैनी फैल रही है और स्वातंत्र्यप्रेमी संगठनों में इसी कारण युवकों की संख्या बढ़ रही है।"

"अच्छी बात है कि अंग्रेजों के खिलाफ पूरा देश एकत्र हो रहा है। हमें इसका लाभ उठाना चाहिए," गांधी जी ने कहा, "अब हमारा संघर्ष पूर्ण स्वराज्य के लिए है।"

"तो हमें आगामी लाहौर कांग्रेस के लिए मसौदा तैयार कर लेना चाहिए।"

"हां...इस कार्य में तन्मय से जुट जाओ..."

गांधी जी और नेहरू जी के पास ही खड़ी हुई, इंदू इस पूरी हलचल में अपनी भूमिका जानना चाहती थी, "और मैं किस कार्य में जुटूं बापू...?" उसने पूछा।

गांधी जी ने प्यार से उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "तुम बच्चों का एक सूत कातने वाला दल संगठित करो तो अच्छा रहेगा।"

और फिर, दूसरे ही दिन से इंदू ने हमउम्र बच्चों को इकट्ठा कर तकली से सूत कातने और खादी बुनने का काम शुरू कर दिया। उसने अपने काते हुए सूत से एक रूमाल बनाया। उसे देखकर उसके दादा और दादीजी, पापा तथा मम्मी बहुत खुश हुए और मोतीलाल ने उसकी पीठ थपथपाई।

जवाहरलाल नेहरू ने लाहौर अधिवेशन के लिए प्रस्ताव का जो मसौदा तैयार किया था, उसे उनके सचिव ने टाइप करके दिया। जवाहरलाल ने वह मसौदा इंदू को पढ़ने के लिए दे दिया। इंदू उसे अटक-अटककर धीरे-धीरे पढ़ने लगी—"हम अब ऐसी हुकूमत के नीचे रहना, ईश्वर और इंसान के लिए जुर्म मानते हैं, जिसकी वजह से हमारे

मुल्क के समाज को आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विपत्तियों ने घेर लिया है। पर हम यह भी मानते हैं कि आज ादी हासिल करने का अहम रास्ता हिंसा और खून-खराबा नहीं है। इसलिए हम यह तैयारी करेंगे कि अपनी मर्जी से कोई भी ब्रिटिश सरकार का साथ न दे और सविनय अवज्ञा की तैयारी करें। इसमें कर अदा न करना भी शामिल है। अतः हम यह निश्चय करते हैं कि पूर्ण स्वराज की स्थापना के लिए समय-समय पर कांग्रेस के जो भी निर्देश होंगे, उनका हम पूरी ताकत के साथ पालन करेंगे।'' इंदू ने आखिरी शब्द पर जोर दिया और रुक गई।

''अब तो तुम उसे पढ़ चुकी हो और इस अहद को सबसे पहले तुमने पढ़ा है, इसलिए इससे वचनबद्ध हो गई हो।''

''हां मैं वचनबद्ध हूं।'' कहकर उसने जवाहरलाल तथा कमला नेहरू की ओर दृढ़ता के साथ देखा।

लाहौर में रावी नदी के किनारे एक मेले जैसा माहौल था। एक विशाल मैदान के बीच बने पंडाल में मंच को कपड़े के बैनरों से सजाया गया था। मंच के ठीक पीछे एक बड़े से बैनर पर लिखा था– 'इंडियन नेशनल कांग्रेस अधिवेशन, 31 दिसंबर, 1929, लाहौर।'

पंडाल के चारों ओर तम्बुओं की कतारें थीं। इन्हीं में से एक में ठहरे हुए थे जवाहरलाल, कमला नेहरू और 12 वर्ष की इंदू।

सर्दियों का सूरज अभी निकला ही था। चारों ओर जोश का माहौल और हलचल थी। युवाओं की टोलियां देश के राजनीतिक हालात, अंग्रेजी हुकूमत और कांग्रेस की रणनीति तथा नेतृत्व पर बातें करती घूम रही थीं।

अपने तंबू में इंदू को एक गाने की तेज आवाज सुनाई पड़ी। उसने बाहर निकलकर देखा। 30-40 वर्ष का एक व्यक्ति वकार अम्बालवी अपनी नज्म पढ़ रहा था। भीड़ जमा हो रही थी। इंदू ने अपने तंबू से

बाहर खड़ी होकर नज्म सुनी और नजारा देखा।

दोपहर से कुछ पहले का समय था। शहर की मुख्य सड़क पर भारी हलचल थी। सड़क के दोनों ओर दुकानों की छतों पर महिलाओं और बच्चों की भीड़ थी। एक ऐसे ही छज्जे से कमला नेहरू और परिवार के दूसरे सदस्य तथा इंदू जुलूस को देख रहे थे।

"मम्मी देखो पापा सफेद घोड़े पर कितने अच्छे लग रहे हैं!"

"हां अच्छे तो लगेंगे ही, कांग्रेस के नवनिर्वाचित अध्यक्ष जो ठहरे।"

"और उनके पीछे-पीछे कांग्रेस के दूसरे नेता और फिर कार्यकर्ताओं की अनुशासित पंक्तियां भी कितनी मनोहर हैं!"

"हां, सबके हाथों में झंडे और बैनर जो ठहरे, स्वतंत्रता के प्रतीक।"

और तभी नारों और जय जयकार के बीच बैंड की आवाज उभरी। इंदू हैरानी से अपनी मां की ओर देखकर बोली, "मम्मी...ये बैंड क्या धुन बजा रहा है?"

"गॉड सेव दि किंग!"

"मगर क्यों? जब हम स्वरग्ज्य की बात करते हैं, तो पूर्ण स्वराज्य की बात क्यों नहीं, क्यों हम गॉड सेव दि किंग?"

जुलूस समाप्त होने के बाद अधिवेशन की कार्रवाई शुरू हुई। मंच पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विराजमान थे। राजनीतिक चर्चा हो चुकी थी। रात के बारह बजना चाहते थे। जवाहरलाल नेहरू ने उठकर पूर्ण स्वराज वाले प्रस्ताव का पूरा मसौदा पेश किया। जैसे ही वे उसकी अंतिम पंक्ति पढ़ने लगे, पंडाल में उपस्थित लोग भावविह्वल होकर जय-जयकार करने लगे, 'भारत माता की जय...पं. नेहरू की जय' तालियों की आवाज देर तक गूंजती रही। प्रस्ताव पारित हो गया। आगे की पंक्ति में बैठी इंदू ने ताली बजाते हुए खड़ी होकर पहले अपने पिता

और फिर विशाल जनसमूह को देखा। इंदू की राजनीतिक दीक्षा का सत्र बाकायदा प्रारंभ हो चुका था।

26 जनवरी 1930!

आनंद भवन के बाहरी बरामदे में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए परिवार की सबसे छोटी सदस्य इंदू को चुना गया। जवाहरलाल नेहरू ने कहा, "पूर्ण स्वराज की शपथ का प्रस्ताव भी तो सबसे पहले इसी ने पढ़ा था।"

सब मुस्करा उठे।

इंदू ने पोल पर लगे झंडे की डोरी खींची। तिरंगा फहरने लगा। उसमें बंधे फूल झरे और मोतीलाल, जवाहरलाल, स्वरूपरानी, कमला, इंदू और परिवार के अन्य सदस्य तथा नौकर-चाकर खुश होकर तालियां बजाने लगे।

अब इंदू पूरी तरह से स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गई थी। वह खादी के झंडे बनाती थी। अब उसकी कई भूमिकाएं उसका इंतजार करने लगी।

सत्याग्रह में भाग लेने के बाद एक दिन कमला नेहरू और कांग्रेस के एक सचिव विशंभरनाथ पांडे जब एक बस्ती से गुजरे, तो वहां खड़े चार-पांच बच्चे कमला नेहरू की जय के नारे लगाने लगे। आवाज सुनकर एक बुढ़िया अपने दरवाजे पर आकर खड़ी हुई और उसने कमला नेहरू को रोक दिया, "रुको बेटी, इनका बुरा मत मानना!"

"मां, ये बुरा मानने जैसा तो कुछ भी नहीं कह रहे हैं।"

"हां कह तो नहीं रहे, परंतु ये बच्चे रामायण की वानर सेना जैसे हैं। कुछ भी उत्पात मचा सकते हैं।"

"माता, वानर सेना भी तो उत्पात लंका में ही मचा सकती है, जहां दुष्ट रावण का शासन हो, अयोध्या में नहीं।"

कहकर वह चल पड़ी, परंतु चलते ही उसके मन में एक विचार कौंधा और उसने विशंभरनाथ पांडे से कहा, ''हमें भी वानर सेना बनानी चाहिए और इसकी नेता इंदू हो सकती है।''

''हां मैडम! आपका विचार दुरुस्त है। वानर सेना भी आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।''

13 साल की इंदू की नई और अधिक सक्रिय भूमिका शुरू हो चुकी थी। वह बच्चों को संगठित करती, उनको भाषण देने लगती, ''हमारा देश आज गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। हमें इन गुलामी की जंजीरों को काटना होगा। यदि हमने इन्हें नहीं काटा तो कल हमें भी अपने माता-पिताओं की तरह अंग्रेजों के अत्याचार सहने होंगे। हम ही भारत का भविष्य हैं और हम ही इस देश की आत्मा, इसलिए हमारा जागना बहुत जरूरी है।''

''परंतु हमें करना क्या होगा?'' एक वानर सैनिक ने पूछा।

''वानर सेना के लिए हर घर से एक-एक रुपया लाकर कोष एकत्र करना चाहिए।''

''और?''

''पुलिस की गोलियों से जख्मी स्वयंसेवकों का इलाज करना चाहिए।''

''ना...बाबा...ना...पुलिस तो चोरों को भी गोलियां मारती है, क्या उनका भी इलाज करना होगा...यह हमसे नहीं होगा...'' किसी ने कहा।

''हमें चोरों का नहीं स्वयंसेवकों का इलाज करना है।''

''कौन स्वयंसेवक?''

''जानते हो बापू ने नमक कानून तोड़ दिया है। सभी नेता जेल में बंद कर दिए गए हैं। उन्हें हमारी सहायता की बहुत जरूरत है।''

इंदू की बचपने वाली आवाज पतली थी।

दोपहर का वक्त था। आनंद भवन के लिविंग रूम में कमला नेहरू, कृष्णा और विशंभरनाथ पांडे तथा कुछ महिलाएं पिकेटिंग का कार्यक्रम तय कर रहे थे। इंदू अपने वानर सैनिकों के साथ बैठी थी। ये लोग सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की समस्याओं पर सोच-विचार कर रहे थे, "महिलाओं की भागीदारी तो बढ़नी ही चाहिए।"

"मगर बढ़े कैसे, हमारे यहां की औरतें तो पर्दे से बाहर निकलने का नाम ही नहीं लेती और जब तक वे पर्दा नहीं त्यागेंगी, तब तक वे आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा नहीं ले सकती।"

विचार-विमर्श चल ही रहा था कि तभी डाकिया ने आकर बहुत से पत्रों का बंडल दिया। इनमें से एक पत्र इंदू के नाम उसके दादू का था। इन्दू उसे लेकर धीरे से पढ़ने लगी, "मैं वानर सेना के बनने से बहुत खुश हूं। लेकिन मेरा सुझाव है कि वानर सेना के हर सदस्य को पूंछ लगानी चाहिए, जिसकी लंबाई उसके कद के हिसाब से हो। परंतु वानर सेना के बैज पर बनी हनुमान जी की तस्वीर में उनके हाथ में गदा नहीं है।" पत्र पढ़ते-पढ़ते इंदू ने नाक सिकोड़ी, और मन ही मन में कहा, 'गदा हिंसा का प्रतीक है और हमारी सेना अहिंसक है, इसलिए उनके हाथ में गदा नहीं दी गई है।'

वानर सेना के सदस्यों की संख्या में भारी बढ़ोतरी हो गई थी। इंदू अपने 15,000 के लगभग वानर सैनिकों के एक जुलूस का नेतृत्व कर रही थी। सड़क के किनारे खड़े लोगों में बहुत से जानना चाहते थे कि जुलूस का नेतृत्व करने वाला लड़का कौन है?

"यह लड़का है कि लड़की!" एक दर्शक बड़बड़ाया।

"देखता नहीं क्या? अंधा है, लड़का ही तो है?"

"मगर है कौन?"

"मगर है कौन...अरे स्वतंत्रता सेनानी है।"

"नहीं...मेरा कहने का मतलब..."

"क्या है तुम्हारे कहने का मतलब?"

"किसका लड़का है?"

"आदमी का लड़का है और किसका होता!"

"मियां तुम भी!"

सच में खादी के कुर्ते, पाजामें, बंडी और टोपी में पतली-दुबली और लंबी-सी इंदू लड़का ही लगती थी।

वानर सेना की गतिविधियों में लगातार तेजी आ रही थी। वे प्रदर्शनों के दौरान पुलिस की लाठी-गोली से घायल सत्याग्रही युवकों की मदद करते और उनको आनंद भवन लाकर डॉक्टरी मदद उपलब्ध कराने का काम करते, परंतु डाक्टर पुलिस के भय से दिन में आने से कतराते थे। इन्दू ने एक चिकित्सक से पूछा, "डाक्टर साहब! आप दिन में कहां गायब हो जाते हैं?"

"कहीं भी तो नहीं, यहीं तो रहते हैं हम!"

"यहां कहां रहते हैं आप?"

"यहां नहीं तो अपने औषधालय में रहते हैं।"

"आप अपना औषधालय यहीं क्यों नहीं उठा लाते?"

"उठा लाएंगे, अवश्य उठा लाएंगे।"

"परंतु कब?"

"..."

"चलो अभी उठा लाते हैं।"

डाक्टर इंदू का मुंह देखता रह गया। "अभी वो पुलिस..."

"पुलिस से डरते हो क्या?"

"नहीं...नहीं...भी तो नहीं," फिर धीरे से, "पुलिस से कौन नहीं डरता बेटी!"

डाक्टरों के दिन में न आने से वानर सैनिक मायूस हो गए थे।

दोपहर का वक्त था। तेज धूप पड़ रही थी। इविंग क्रिश्चियन कॉलेज पर कमला नेहरू के नेतृत्व में महिला कार्यकर्ताओं की पिकेटिंग चल रही थी।

'अंग्रेजों भारत छोड़ो।' 'हमारी मांग....पूर्ण स्वराज...पूर्ण स्वराज' के नारे लगाते हुए वे क्रिश्चियन कॉलेज के मैदान में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। कमला और इंदू धूप और गर्मी से बेहाल थीं। तभी अकस्मात् कमला बेहोश होकर गिर गई, यह देखकर एक अठारह साल का युवक पानी लेकर उनके पास दौड़कर आया। उनके मुंह पर पानी के छींटें मारकर एक गत्ते से हवा करने लगा। इंदू ने उस नौजवान को देखा और उसका शुक्रिया अदा किया, ''धन्यवाद!''

''ओ.के.।''

कुछ पलों बाद कमला नेहरू को होश आ गया।

दूसरे दिन सुबह वह युवक आनंद भवन आया। तब कमला ने उसका नाम पूछा, ''क्या नाम है बेटा तुम्हारा?''

''फिरोज...फिरोज नाम है मेरा।''

''क्या काम करते हैं आप?''

''फिलहाल तो मैं छात्र हूं।''

''और फिलहाल के बाद?''

''कांग्रेस का सदस्य बनना चाहता हूं।''

''तो आज ही क्यों नहीं बन जाते?''

''यह तो मेरा सौभाग्य होगा।''

उसके इतना कहते ही इंदू ने उस युवक की ओर कांग्रेस की सदस्यता का फार्म सरका दिया। वह इंदू के हाथ से फार्म लेकर उसे भरने लगा।

इंदू अपनी गतिविधियों के बीच पढ़ने का समय निकाल ही लेती

थी और इस बीच वानर सेना की गतिविधियों में एक आयाम जुड़ गया। एक शाम आनंद भवन के बरामदे में जब वह एक पुस्तक 'Life of and Life Ant' पढ़ रही थी, तो तभी दो-तीन वानर सैनिकों ने आकर उसे धीरे से बताया, "इंदू! कल कांग्रेस दफ्तर पर पुलिस का छापा पड़ेगा और पांडे जी को गिरफ्तार किया जाएगा।"

"क्या?" इंदू चौंकी, "तुम्हें कैसे मालूम?"

"जब हम सिविल लाइंस थाने के पास के मैदान में खेल रहे थे," उनमें से एक ने बताया, "तब हमने एक अंग्रेज साहब द्वारा थानेदार को हुक्म देते सुना था।"

"ओह! मामला पेचीदा है। चलो..." वे सब चले गए थे।

इंदू की राजनीतिक सक्रियता बढ़ती जा रही थी। वह फिरोज के साथ उसके कॉलेज के झंडारोहण में गई हुई थी। पिकेटिंग के दौरान फिरोज ने तिरंगे को इंदू के हाथ में पकड़ाते हुए कहा, "इसे गिरने नहीं देना!"

"गिरने नहीं देना..." एक पुलिस वाला बड़बड़ाया और फिर अचानक ही पुलिस की एक लाठी इंदू की कमर पर पड़ी, "लो गिर तो पड़ी!"

इंदू गिर गई, पर तिरंगे को जमीन पर गिरने नहीं दिया।

"वंदे मातरम्...वंदे मातरम्..."

"वंदे मातरम्...बोलती है? ले और बोल वंदे मातरम्" कहते हुए पुलिस वाले ने एक लाठी और जड़ दी। ध्वज गिरने को ही था कि तभी फिरोज ने आकर उसे संभाल लिया, "यह तो जान से भी प्यारा है!"

"हां जान से भी प्यारा है। विजयी विश्व तिरंगा प्यारा...झंडा ऊंचा रहे हमारा..." का स्वर गूंज उठा था।

शाम का समय था। आनंद भवन के लिविंग रूम में कमला नेहरू,

इंदू और जवाहरलाल की चचेरी बहन रामेश्वरी के साथ फिरोज भी थे। कृष्णा कलकत्ते से लौटी थी। सब उत्सुकता और चिंता के साथ कलकत्ते में बीमार पड़े मोतीलाल नेहरू की तबीयत का हाल जानना चाहते थे। इंदू ने पूछा, "कैसे हैं दादाजी?"

"अब बेहतर हैं," कृष्णा ने बताया, "पर भैया (जवाहरलाल) की गिरफ्तारी से थोड़ा परेशान थे।"

"कब आएंगे वे?"

"वह जनवरी के पहले सप्ताह में आएंगे।"

इसी बीच फोन की घंटी बज उठी, इंदू ने दौड़कर उठाई, "हैलो।"

"हैलो।"

"कहिए क्या बात है जनाब?"

"कल सुबह कमला नेहरू को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।"

इंदू सुनकर अवाक् रह गई।

"क्या हुआ?" कमला ने पूछा।

"आपके लिए फोन था!"

"क्या था?"

"कल मायके जाना है!"

"अर्थात् जेल!"

"हां!"

"मुझे तो पहले ही पता था।"

"मतलब!"

"मायके की याद जो आ रही थी।" वह कहकर खिल-खिलाकर हंस पड़ी, फिर उन्होंने फिरोज से कहा, "बेटे, कार्यकर्ताओं की इमरजेंसी मीटिंग बुला लो।"

"जी माताजी।" फिरोज कहकर अपने कार्य में जुट गया।

"और तुम," कमला इंदू की ओर मुखातिब होकर बोली, "मेरा सामान पैक कर दो बेटी।"

इंदिरा बिना कुछ बोले मां के कक्ष में चली गई और कमला घर की तलाशी के अंदेशे से जवाहरलाल के आफिस से टैक्स आदि देने के दस्तावेजों वाली फाइलें हटवाकर हरी को सौंपने लग गई, ''इन्हें कहीं छिपा दे हरी।''

''जी माताजी।'' कहकर हरी अपने कार्य में जुट गया।

अगले दिन पौ फटने के साथ ही पुलिस का एक दस्ता आनंद भवन आ धमका, ''मैडम आपको गिरफ्तार किया जाता है।''

''मैं तो पहले से ही तैयार हूं,'' कहकर वह कार्यकर्ताओं की ओर मुड़ी और उन्हें संदेश देने लगी, ''आज मुझे खुशी और गर्व है कि मैं अपने पति के पद चिन्हों पर उनके रास्ते पर चल सकी हूं। मुझे उम्मीद है कि आप लोग इस ऊंचे झंडे को कभी झुकने नहीं देंगे।''

''चलिए मैडम, देर हो रही है।'' पुलिस ने उसका भाषण रुकवा दिया और उसे गिरफ्तार कर गाड़ी में बैठा लिया। गाड़ी चल पड़ी, मां और बाप जेल में व इंदू अकेली आनंद भवन में रह गई।

इलाज के बाद मोतीलाल नेहरू कलकत्ते से वापस आ गए थे। आनंद भवन के बरामदे में आरामकुर्सी पर बैठे वह इंदू से बात कर रहे थे, ''अब तो बुढ़ापा आ ही गया!''

''दादू, बुढ़ापा तो उस दिन ही आ गया था, जिस दिन आप दादा बने थे।''

''हास्य-विनोद और वह भी अपने दादा से...''

''और किससे करूं, मेरी सहेली जैसी मां तो जेल में है...''

''हां, बेटी कमला जेल में है। मुझे बड़ी चिंता सता रही है उसकी! वह तो पहले ही बीमार रहती थी, जेल में न जाने कैसे...''

इस बीच उनके सचिव ने आते ही बताया, ''जेल में जवाहर से मुलाकात का समय कल सुबह दस बजे का तय हुआ है।''

दूसरे दिन मोतीलाल, स्वरूपरानी और इंदू मुलाकात के लिए जेल पहुंचे।

जवाहरलाल की निगाहें मोतीलाल के सूजे चेहरे पर पड़ी, "पिताजी, यह क्या है?"

"क्या हुआ बेटा?"

"आपका चेहरा कुछ..."

"राष्ट्र के लिए आपको मर मिटता देखकर खुशी से फूल गया है।"

"आप भी पिताजी...हमें तो चिंता सताए जा रही है और आप मजाक कर रहे हैं।"

"हम मजाक नहीं कर रहे, हम तो सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पुत्र देशसेवा में सपत्नीक जेल के अंदर हैं।"

"आप थोड़े लापरवाह हो गए हैं, हमारे जेल में आने के बाद समय पर दवा नहीं ले रहे...हम ठीक कह रहे हैं ना!"

"हम दवा समय पर ही लेते हैं, कविराज के इलाज से मैं बहुत बेहतर हूं। मुंह की सूजन भी चली जाएगी।"

"और बाहर सब कैसा चल रहा है।"

"सफेद आंधी बह रही है, अंग्रेजों के खिलाफ अब हमारे गांव और कस्बे भी उठ खड़े हुए हैं तथा प्रधानमंत्री रेम्जे मैकडानल्ड के रुख में तब्दीली नजर आती है।"

"परंतु पिताजी..."

"परंतु क्या?"

"मैं भी जानता हूं और आप भी जानते हैं कि अंग्रेजों की घोषणाएं असलियत से दूर हैं।"

"हां दूर तो हैं, लेकिन इतनी भी दूर नहीं..."

इंदू ये सब बातें गौर से सुन रही थी। जवाहरलाल ने उससे पूछा,

“क्या तुम मेरे लिखे गए पत्रों को पढ़कर समझ पा रही हो?”

“जी पापा!”

मोतीलाल का स्वास्थ्य बराबर गिर रहा था। जवाहरलाल जेल से रिहा होकर वापस आ गये थे। वे आनंद भवन में उनसे बात कर रहे थे, “गांधी जी की रिहाई पर बंबई में उनका भारी स्वागत हुआ है और अब वह बंबई से इलाहाबाद के लिए चल पड़े हैं।”

“अच्छा, बहुत अच्छी बात है।”

“उन्होंने कार्यसमिति की मीटिंग यहीं बुलाई है।” जवाहर की बात कमला ने पूरी की।

“इधर आओ बेटी!” मोतीलाल ने इंदू को बुलाकर अपने सिरहाने बिठा लिया।

गांधी जी देर रात जवाहरलाल के साथ आनंद भवन पहुंचे। बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए गांधी जी ने इंदू के गाल थपथपाते हुए मोतीलाल की तबीयत के बारे में पूछा, “कैसे हैं तुम्हारे दादा?”

“कुछ ठीक से ही हैं!”

“कुछ ही ठीक हैं, पूरे नहीं!”

“जी गांधी बाबा!”

बातें करते-करते उन्होंने मोतीलाल के कक्ष में प्रवेश किया। गांधीजी को कमरे में प्रवेश करते देख मोतीलाल उठने की कोशिश करने लगे, पर गांधीजी ने इशारा किया, “लेटे रहो, उठने की जरूरत नहीं।”

जवाहरलाल ने गांधी जी के लिए पलंग के पास कुर्सी रखी, “यहां बैठिए बापू!”

गांधी जी का हाथ पकड़ मोतीलाल ने अटक-अटककर कहा, “स्वराज देखने के लिए मैं जिंदा नहीं रहूंगा।”

“पर तुमने स्वराज जीत तो लिया है।” गांधीजी ने उन्हें ढाढ़स

बंधाया।

मोतीलाल की तबीयत बिगड़ती गई। गांधी जी के साथ-साथ कांग्रेस के अनेक गणमान्य नेता और जवाहरलाल तथा इंदू आनंद भवन में ही ठहरे हुए थे। वहां विचार-विमर्श के बाद सहमति बनी कि मोतीलाल को बेहतर चिकित्सा सुविधाओं के लिए तुरंत लखनऊ ले जाया जाए। गांधी जी की भी यही राय थी। गांधी जी, जवाहरलाल, डॉ. अंसारी तथा डॉ. विधानचंद्र राय इत्यादि मोतीलाल को लेकर लखनऊ रवाना हुए।

अपने प्यारे दादू को इंदू अंतिम बार जीवित देख रही थी।

दिन छिपने वाला था। आनंद भवन के लॉन में कमला नेहरू, विजयालक्ष्मी, कृष्णा और इंदू चिंता में डूबे थे। पास में रखे फोन पर बार-बार निगाह जाती थी कि घंटी बज उठी। इंदू ने फोन उठाया। जवाहरलाल की आवाज थी, "हम लोग लखनऊ एक घंटा पहले पहुंच गए थे और दादाजी को एक्सरे के लिए ले जाया गया है।"

दूसरे दिन दोपहर को आनंद भवन के लॉन में आने-जाने वालों का तांता लग गया था। कांग्रेसी कार्यकर्ता, नेता और कुछ अंग्रेज अफसर गमगीन मुद्रा में दिख रहे थे। इंदू डबडबाई आंखों से गेट की ओर देख रही थी।

मोटर गाड़ियों का काफिला गेट के अंदर आ पहुंचा था। लोग नारे लगा रहे थे—मोतीलाल नेहरू! अमर रहे, अमर रहे। स्वराजी सिपाही! अमर रहे, अमर रहे।

सबसे आगे की मोटर में जवाहरलाल शव के साथ बैठे थे। उन्हें देखते ही इंदू कार की ओर दौड़ी। जवाहरलाल ने उतरकर उसे सीने से लगा लिया। उसने बार-बार पूछा, "हमारे दादू को क्या हो गया? हमारे दादू को क्या हो गया है?"

"वह सो गए हैं," जवाहरलाल ने उसे ढाढ़सा बंधाया, "वह

ऐसी नींद सो गए हैं, जिसके बाद जागना नहीं होता बेटा!"

दूसरी कार से गांधी जी और स्वरूपरानी उतरे। कमला नेहरू, कृष्णा और परिवार के अन्य सदस्य आगे बढ़कर स्वरूपरानी को संभालने लगे। इंदू गांधी जी से चिपक गई और गांधी जी इंदू के आंसू पौंछने लगे।

आनंद भवन के मुख्य द्वार पर नगर के, आसपास के देहातों और कस्बों से आए लोगों की भारी भीड़ जमा हो गयी थी। अनेक लोग नारे लगा रहे थे, तो अनेक लोग भारी मन और अश्रुपूरित आंखों से मोतीलाल के पार्थिव शरीर के अंतिम दर्शन करना चाहते थे, उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहते थे। सेवादल के स्वयंसेवक भीड़ को व्यवस्थित करने लगे थे।

तिरंगे झंडे में लिपटा मोतीलाल नेहरू का पार्थिव शरीर जैसे ही अंतिम यात्रा के लिए आनंद भवन से बाहर निकला, तो लोगों की भीड़ ने मोतीलाल अमर रहे। स्वराजी सिपाही! अमर रहे के नारों से आसमान गूंजा दिया।

शव यात्रा के साथ जवाहरलाल, गांधीजी, विधानचंद राय, जीवराज मेहता, गोविंद वल्लभ पंत, श्रीनिवास शास्त्री, जयकर, चरण सिंह, लाल बहादुर शास्त्री और डॉ. अंसारी सहित अनेक राष्ट्रीय तथा प्रदेश कांग्रेस नेता और इलाहाबाद बार के वकील चल रहे थे। शव यात्रा में नेहरू परिवार की अनेक महिलाओं को चलते देख लोगों को आश्चर्य हो रहा था। परंपरागत तौर पर हिंदू महिलाएं अंतिम संस्कार में सम्मिलित नहीं होती थीं।

इंदू के साथ फिरोज चल रहे थे। इंदू की नजर कभी अपने दादू के पार्थिव शरीर पर जाती थी, तो कभी नेताओं पर, तो कभी वह विशाल जनसमुदाय को देखने लगती थी।

शाम होने से कुछ समय पूर्व गंगा तट पर अंतिम संस्कार किया

गया। जवाहरलाल ने मुखाग्नि दी, तो इंदू फूट-फूटकर रोने लगी। सांझ का अंधेरा घिर रहा था। चिता से उठती लपटें उसे काट रही थी। मोतीलाल का पार्थिव शरीर भस्म होकर मिट्टी का अंग बनता जा रहा था। इंदू कभी चिता को देखती थी, तो कभी गांधी जी को और कभी उसकी नजर अपने पिता जवाहरलाल पर टिक जाती थी।

अपने जीवन में इंदू ने यह पहली मौत देखी थी। वह भी उनकी जिनसे उसका लगाव इतना ज्यादा था।

पांच दिन बाद मोतीलाल की अस्थियों को संगम में विसर्जित कर दिया गया। श्रद्धांजलि देने के लिए लोग अब भी आ-जा रहे थे, पर आनंद भवन में सूनापन छाया हुआ था।

इकतालीस साल के जवाहरलाल कुछ दिनों में ही बुजुर्ग लगने लगे थे, सिर के बाल तो पहले से ही उड़ चले थे, अब आंखों के नीचे काले गड्ढ़े भी दिखाई पड़ने लगे।

ऐसे ही एक शाम को आनंद भवन के ड्राइंग रूम में चाय के समय जीवराज मेहता गंभीरता से कह उठे, ''पंडित जी! आपकी सेहत को देखकर मुझे कुछ चिंता हो रही है, मेरी राय से अब आपको थोड़े दिन आराम करना चाहिए।''

इस पर डॉ. अंसारी ने कहा, ''अब गांधी-इर्विन समझौता तो हो ही गया है, जिसको लेकर हम सभी, पर आप खासतौर से फिक्रमंद थे। आप इस डॉक्टर की राय समझ लीजिए। वालिद के इंतकाल से आपको गहरा सदमा लगा है। जीवराज का कहना ठीक है। आप कुछ दिन आराम कर लीजिए।''

कमला नेहरू ने भी गंभीरता से कहा, ''आराम यहां इलाहाबाद में तो मिलने से रहा। मैं सोचती हूं थोड़े दिन को कहीं बाहर चले जाएं। इंदू भी उदास रहती है। वह अपने दादू को भूल नहीं पाती। जगह बदलने से माहौल बदलेगा।''

मायूस-सी बैठी इंदू ने बुझे-बुझे से लहजे में कहा, ''मुझे यहां बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। हर जगह दादाजी नजर आते हैं,'' और फिर अपने पापा की ओर मुड़ती हुई बोली, ''कहीं भी, कहीं भी चले चलिए पापू।''

''ठीक है भई,'' जवाहरलाल मान गए, ''लंका और दक्षिण भारत की यात्रा का कार्यक्रम बनाते हैं।''

दिन-रात की राजनीतिक गतिविधियों से दूर लंका में जवाहरलाल, कमला और इंदू वहां के प्राकृतिक सौंदर्य व दूर-दूर तक फैली हरियाली तथा चाय के बागानों में रम गए थे। वे तीनों लंका के अनुराधापुर जैसे ऐतिहासिक स्थलों और बौद्ध विहारों में गए। सुबह-सुबह सैर को निकलते, लोगों से मिलते और पेड़ों की छांव में विश्राम करते थे।

बौद्ध भिक्षुओं और विहारों को देख इंदू को उनके बारे में जानने की उत्सुकता हुई, ''पापू, बौद्ध धर्म यहां लंका में कैसे फैला।''

''सम्राट अशोक के कारण!''

''वह कैसे?''

''बौद्ध धर्म अंगीकार करने के बाद अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को धर्म प्रचार के लिए विदेशों में भेजा और लंका में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।''

इंदू की जिज्ञासा और बढ़ी, ''पापू! बौद्ध धर्म का हमारे देश में जन्म कैसे हुआ?''

''भारत में बौद्ध मत का प्रारंभ ईसापूर्व छठी शताब्दी में हुआ। वास्तव में उस समय की रूढ़ियों और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध यह एक सामाजिक और आध्यात्मिक क्रांतिधर्मी आंदोलन था। इसने देश के आम लोगों में एक नई चेतना पैदा की और दुनिया को समझने का एक नया नजरिया भी दिया।''

उन्होंने आगे बताया, ''बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध का जन्म

हमारे इलाहाबाद से थोड़ी ही दूर उत्तर में हुआ था। थोड़े समय बाद ही सम्राट अशोक के संरक्षण में इस बौद्ध धर्म का भारी प्रसार-प्रचार हुआ और यह भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण धर्म बन गया। भारत ही क्यों, बौद्ध धर्म हिंदुस्तान के बाहर भी तेजी से फैला था। जिन देशों में यह फैला उनमें लंका का महत्त्वपूर्ण स्थान है।''

ऐसे ही चर्चाएं करते, घूमते-फिरते, तरह-तरह के लोगों से मिलते और वहां के रीति-रिवाजों से परिचित होते हुए ये लोग भारत के दक्षिणी घाटों में बसे कोचीन पहुंचे। वहां वे सायनामॉग और सीरियाई क्रिश्चियन चर्च गए और जब वे लोग अचानक नेस्टोरिय ईसाइयों की बस्ती में पहुंचे, तो जवाहरलाल को बड़ी हैरानी हुई। उस सम्प्रदाय के लोग दुनिया के अधिकांश हिस्सों से गायब हो चुके थे।

कोचीन से त्रिवेंद्रम पहुंचने पर रेलवे स्टेशन पर स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उनका भारी स्वागत किया, हर ओर उनकी जय-जयकार हो रही थी। उनके साथ पुराना नौकर हरी भी था और यहां इंदू भारत की एक अमानवीय परंपरा का प्रत्यक्ष अनुभव कर हैरान हुई थी।

हरी के सहित पूरा परिवार मोटरगाड़ी में एक स्थानीय कार्यकर्ता, जो नंबूदरी ब्राह्मण था, के साथ उसके घर जा रहे थे कि गाड़ी अचानक एक मोड़ पर रुक गई। कार्यकर्ता ने हरी को देखकर कहा, ''इस पूरी सड़क पर कोई अछूत नहीं जा सकता, केवल ब्राह्मण जा सकते हैं।''

हतप्रभ से जवाहरलाल और कमला खामोशी से एक दूसरे का मुंह देखने लगे, तभी इंदिरा तपाक से बोल पड़ी, ''आगे चलिए। ये अछूत नहीं ब्राह्मण हैं,'' जवाहरलाल और कमला एक दूसरे को देखकर मुस्कराने लगे।

गाड़ी एक घर के आगे रुकी। दोपहर के खाने का समय था। घर में जमीन पर सभी लोगों को एक साथ केले के पत्ते पर भोजन परोसा गया। उस नंबूदरी कार्यकर्ता ने केरल के नंबूदरी ब्राह्मणों की अनोखी

रीति के बारे में बताया, "यहां केरल में नंबूद्रियों में केवल बड़े बेटे की ही शादी नंबूद्रियों में होती है।"

"और अन्य क्या क्वारे रहते हैं?" इंदू ने पूछा।

"दूसरे बेटे की शादी नीच जाति में करनी होती है।"

"यहां इतनी छुआछूत है, फिर बेटे की शादी निम्न जाति में...क्या तब..."

"उसे भी समाज की मान्यताओं को तो मानना ही पड़ता है," फिर उत्सुकता से बताया, "वह पति और पिता होकर भी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ खाना नहीं खा सकता!"

इंदू के लिए यह नया पाठ था। उसने कार्यकर्ता की ओर आश्चर्य से देखा।

"मैं भी नंबूदरी हूं...पर अपने पिता का दूसरा बेटा।" सब खाना खा रहे थे। नंबूदरी कार्यकर्ता फिर बोल उठा, "देखिए कल हैदराबाद में मेरे पिता मिलेंगे, कृपया उन्हें मत बतलाइए कि हम सबने एक साथ खाना खाया था, वे नाराज होंगे।"

"कितना विविध और विचित्र है ये देश! कितनी बुरी और ग लत हैं इसकी कुछ परंपराएं!" इंदू ने सोचा।

हैदराबाद पहुंचने पर एक दिन दोपहर बाद वहां की प्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारत चारमीनार पर एक सभा आयोजित की गई। महिलाओं की इस आम सभा की प्रमुख वक्ता कमला नेहरू थी। सामने फर्श पर बैठी लगभग सारी महिलाएं बुरके में थी, सिवाय तीन चार के जो खादी की साड़ी पहने थी।

कमला नेहरू जब इंदू और तीन चार स्थानीय महिला कार्यकर्ताओं के साथ गाड़ी से उतरकर मंच की ओर बढ़ी, तो वहां उपस्थित श्रोता उनकी जय-जयकार करने लगे।

"कमला नेहरू जिंदाबाद..."

"भारत माता की जय..."

मंच पर उन दोनों को फूलों से लाद दिया गया।

उपस्थित महिला श्रोताओं को संबोधित करती हुई कमला नेहरू बोली, "आप सब घरों की चार दीवारी को लांघकर आजादी की मुहिम में शिरकत करें। आजाद मुल्क की नई तहजीब की तामीर केवल मर्दों से नहीं हो सकती...

"आज के युग में पर्दा प्रथा से काम नहीं चलेगा, आज का युग पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने का है।"

पांच-छह औरतों ने अपनी चिलमन हटा दी थी।

कमला नेहरू के हैदराबाद में दिए गए भाषण की प्रतिक्रिया स्वरूप किसी ने इलाहाबाद एक खत भेजा। वह जिस सरगर्मी से महिलाओं का आह्वान कर रही थीं, उस पर अनेक पति जाहिरातौर पर आक्रोशित थे।

चाय पीते हुए बी.एन. पांडेय ने कहा, "अब जल्दी ही ऐसे खत उत्तर भारत से भी आने लगेंगे।"

पर कमला नेहरू की चिंता कुछ और थी, वह जवाहरलाल की ओर मुखातिब होकर बोली, "अब अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया है। क्या पता कब गिरफ्तार हो जाएं हम लोग? इंदू की पढ़ाई रेगुलर होना जरूरी है।"

"जब पिताजी जिंदा थे, इंदू तभी पूना जाना चाहती थी," पंडित जवाहरलाल ने कहा, "हम इसे वहां भेज देते हैं। मिसेज वकील 'चिल्ड्रेंस ओन स्कूल' को 'प्यूपिल्स ओन स्कूल' कर लेगी, इसमें इतना सोचने की क्या बात है!"

विशंभरनाथ पांडे ने पूछा, "पूना क्यों?"

जवाहरलाल ने धीरे से कहा, "...इंदू चाहती है, वहां जाना...और आजकल गांधी जी भी पूना जेल में हैं।"

मई 1931 को 16 वर्ष की इंदू को पूना के पीपुल्स ओन स्कूल में दाखिल करा दिया गया। उस स्कूल को जहांगीर वकील नाम से एक पारसी दंपती चलाते थे, जो गांधी जी के नजदीकी थे। उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर के शांतिनिकेतन में शिक्षा प्राप्त की थी। जहांगीर वकील ऑक्सफोर्ड से शिक्षा प्राप्त समाजवादी और जवाहरलाल की ही तरह अनीश्वरवादी थे। उनकी पत्नी कुंवरबाई एक अच्छी गायिका और बूटिक कलाकार थीं। उनका स्कूल कांग्रेस के सदस्यों के बच्चों के लिए था। बच्चे और कर्मचारी सभी खादी पहनते थे। शांतिनिकेतन की शैली पर चलने वाले इस स्कूल में बच्चों को दसवीं परीक्षा के लिए तैयार किया जाता था।

लंबी पतली इंदू की आंखों के नीचे काले धब्बे थे और बाल बेतरतीब। वह शीघ्र ही वकील दंपती की बड़ी लड़की जय की दोस्त बन गई, पर घर की याद उसे लगातार घेरे रहती थी। स्कूल में इंदू ने इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और भौतिकी तथा रसायनिकी विषयों को चुना। वहां वह संस्कृत और फ्रांसीसी भी पढ़ती थी।

एक दिन रात को सोने से पहले श्रीमती वकील छात्रावास में आईं जहां सब लड़कियों के साथ इंदू भी अपना बिस्तर फर्श पर लगाकर सोती थी। उसने इंदू से कहा, ''कल हम जेल में बापू से मिलने जा रहे हैं, क्या तुम चलोगी?''

''जरूर मैडम!,'' इंदू ने उत्साहित होकर जवाब दिया, ''मैं जरूर चलूंगी आपके साथ!''

यरवदा जेल की एक छोटी-सी कोठरी में कृशकाय और दुर्बल गांधी जी एक चौकी पर बैठे थे। जब वे सब गांधी जी के पास पहुंचे, तो उन्होंने अपने पास एक ओर इंदू व दूसरी ओर जय को बिठा लिया। श्रीमती वकील सामने बैठ गई। इंदू का हाथ अपने हाथ में लेते हुए

गांधी जी ने प्यार से पूछा, ''परीक्षाएं समाप्त हो गईं?''

इंदू ने थोड़ी देर उनकी ओर देखा और फिर कहा, ''...जी! बापू! ...बापू आप बहुत दुबले हो गए हैं न...!''

''और यू आर इ पजेशन ऑफ मोर फ्लेश। (और तुम बहुत मोटी हो गई हो)'' गांधी जी ने हंसते हुए कहा और फिर इंदू और जय दोनों को आदेशित किया, ''परीक्षाएं हो गई हों, तो अब कुछ रचनात्मक काम करो...मेहतरों की बस्तियों में जाओ...उनसे मिलो।''

''जी!'' दोनों ने एक साथ हामी भरी। अगले ही दिन सुबह-सुबह दो अन्य लड़कियों के साथ वे मेहतरों की बस्ती पहुंची। चारों ओर गंदगी का साम्राज्य था। उन्होंने सफाई की, कूड़े को एक ओर लगाया और इंदू ने बच्चों को नहलाया। पता चला कि वहां कोई बच्चा पढ़ने नहीं जाता। इंदू ने एक छोटी-सी लड़की के अभिभावक से बात की, ''इस लड़की को तुम हमें दे दो। हम इसे अपने पास रखकर पढ़ाएंगे।''

''अगर ये चली जाए तो ले जाइए,'' मेहतर ने कहा, ''इस नर्क से तो अच्छी रहेगी।''

इंदू जब स्कूल गई तो उसके साथ एक लड़की और थी।

दोपहर से कुछ पहले स्कूल की कक्षा में छात्राओं के साथ इंदू बैठी थी। अखबार में मैट्रिक का रिजल्ट निकला था। कक्ष में श्रीमती वकील ने प्रवेश करते ही इंदू से कहा, ''बधाई हो इंदू, तुमने मैट्रिक पास कर लिया है।''

''धन्यवाद मैडम!''

सभी छात्राओं ने भी इंदू को बधाई दी, ''बधाई हो इंदू...''

तभी कक्ष में डाकिया ने प्रवेश किया तो श्रीमती वकील ने पूछा, ''तार किसके नाम है?''

''इंदिरा प्रियदर्शिनी नेहरू के नाम।''

डाकिया ने जैसे ही तार इंदू को थमाया, तो श्रीमती वकील ने

पूछा, "किसका तार है?"

"पापू का...लिखा है, दूसरे 'घर' जा रहा हूं।"

सुबह होने वाली थी। अपनी साथी छात्राओं के साथ इंदू अभी सोई पड़ी थी। अचानक दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनकर वह उठ बैठी, "कौन है सुबह ही सुबह...सोने भी नहीं देते..." आंखें मलती हुई ने द्वार खोला तो उसकी नजर कमला नेहरू, फिरोज और मिसेज वकील पर पड़ी, "अरे मम्मी आप! आपने आने की खबर तक नहीं दी!"

"बस, अचानक ही प्रोग्राम बन गया," कमला ने इंदू को सीने से चिपकाते हुए कहा, "फिरोज को भी बंबई आना था...इसलिए हम लोग साथ ही...।"

"अच्छा किया..."

"तुम्हारा मैट्रिक क्लीयर हो गया," कमला ने कहा, "बड़ी खुशी हुई।" फिर मिसेज वकील की ओर मुड़कर उनका शुक्रिया अदा किया, "यह तुम्हारी वजह से मैट्रिक पास कर पाई है।"

'कांग्रेचुलेशंस मिस मैट्रिक' फिरोज ने जब शरारती अंदाज में कहा तो सब हंसने लगे।

सुबह छः बजने वाले थे। कमरे में दो लड़कियां चाय लेकर आयी। सब लोगों ने कमरे में ही बैठकर चाय पी और बातें की।

"मिसेज वकील, आपने तो स्कूल को पूरा आश्रम बनाया हुआ है।" कमला ने स्कूल की तारीफ की।

"शुक्रिया!"

फिर कमला ने इंदू से कहा, "इंदू! कल तुम्हारे पापू से मिलने कलकत्ता चलना है। कल सुबह की गाड़ी है। फिरोज बंबई चले जाएंगे।"

"जी मॉम।"

उसी दिन शाम को एक कमरे में कमला नेहरू, इंदू और फिरोज बैठे हुए थे। फिरोज ने गंभीरता के साथ कुछ अटक-अटककर इंदू के सामने शादी का प्रस्ताव रख दिया, जिसे इंदू ने अस्वीकार कर दिया, "इट्स नॉट पॉसिबल।" कहते हुए इंदू घबरा-सी गई और उसकी आंखों से आंसू की धारा बह निकली।

"रोओ मत बेटी!" कमला ने इंदू को चुप करने की कोशिश की और फिर फिरोज की ओर मुखातिब होकर कहा, "नहीं फिरोज! अभी इंदू बहुत छोटी है...अभी शादी का तो सवाल ही नहीं उठता।"

"...मैं इंतजार कर लूंगा।" कुछ उदास होते हुए फिरोज ने कहा।

कलकत्ता में वे रामकृष्ण मठ में ठहरे और वहां से साढ़े ग्यारह बजे जेल पहुंचे। इंदू को देखते हुए जवाहरलाल ने हंसते हुए कहा, "बापू ने तार से मुझे तो यह बताया था, 'इंदू इज इन पजेशन ऑफ मोर फ्लेश...' पर अब क्या इरादा है आगे का?"

इंदू से पूछे गए सवाल का जवाब कमला ने दिया, "...मैं सोचती हूं कि इंदू को गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के पास विश्वभारती शांति निकेतन छोड़ती जाऊं।"

"अपनी धरती और तहज ीब को जानना और समझना बहुत जरूरी है," इंदू की ओर देखते हुए नेहरू ने कहा, "और यह सब तुम विश्वभारती में रहकर अच्छी तरह जान सकोगी।"

इंदू ने अभी 'जी पापू' ही कहा था कि जेल के संतरी ने आकर मिलाई का वक्त खत्म होने का ऐलान किया, "मिलने का वक्त खत्म हो गया है।"

पंडित जवाहरलाल ने कमला से कहा, "अपनी सेहत का ख्याल रखना।"

उन्होंने एक-दूसरे का देखते हुए विदा ली।

शांतिनिकेतन में प्रवेश करने से पहले परिवार के अन्य सदस्यों—अपनी बुआ विजयालक्ष्मी, फूफा रंजीत पंडित और उनकी तीन बेटियों चंद्रलेखा, नयनतारा और रीता के साथ इंदिरा चार सप्ताह के लिए कश्मीर गई थी।

वह अपने दादू, दादी और माता-पिता से कश्मीर के बारे में अरसे से सुनती रही थी। यहां आकर इंदू बर्फ से ढकी चोटियों और वादियों में पूरी तरह खो गई। जवाहरलाल के नाम अपने एक पत्र में उसने लिखा, 'जब से मैंने चिनार देखा है, मैं इसकी दीवानी हो गई हूं। यह शानदार पेड़ है।'

अपनी बुआ की बेटियों के साथ इंदू घंटों तक जंगलों में घूमती चिड़ियों का चहचहाना, पेड़ों के बीच से गुजरती हवा की आवाजें और बौद्ध भिक्षुओं के दूर से आते मंत्रोच्चार सुनती और इनमें रम जाती थी इंदू। चिनार को जब इंदू ने पहली बार देखा तो उसके एक पत्ते को उठाकर अपने पास उसे शगुन के तौर पर रख लिया।

तब से इंदू के लिए कश्मीर शांति और सौंदर्य का दूसरा नाम बन गया था।

जुलाई 1934 में इंदू का दाखिला शांतिनिकेतन में कला विभाग की पहली कक्षा में हो गया था। शांतिनिकेतन का जीवन अनुशासित और सादा था। तीन अन्य लड़कियों के साथ इंदू चूने के पुते एक कच्चे कमरे में रहती, बिस्तर जमीन पर लगते और भोर होने के साथ ही वे उठ जातीं तथा बिस्तरों को लपेटकर रखतीं।

वहां एक जर्मन अध्यापक फ्रैंच ओबेर ड्रोफ इंदू के व्यक्तित्व से काफी प्रभावित हुए। वह इंदू को फ्रांसीसी पढ़ाते थे। शांतिनिकेतन में इंदू को चित्रकला में रुचि उत्पन्न हो गई और उसने प्रख्यात चित्रकार नंदलाल बोस से चित्रकला सीखी।

एक दिन दूसरी छात्राओं के साथ इंदू शाम को गुरुदेव रवींद्रनाथ

के निवास पर गई।

"...इंदू! तुम मेरे पास क्यों नहीं आतीं!"

"गुरुदेव! आना तो चाहती हूं, पर...?"

"पर क्या?...आया करो।"

"जी!"

"तुम नंदलाल बोस से चित्रकला तो सीख ही रही हो, मेरे विचार से तुम मणिपुरी नृत्य भी सीखो। तुम्हारी कद-काठी के लिए यह उपयुक्त है...यहां कक्षाएं चलती हैं, तुम सीखा करो...साहित्य, कला और संगीत एक बेहतर इंसान बनने में बहुत सहायक हैं।"

"जी!" आंखें नीचे किए हुए इंदू ने कहा।

इंदू पर गुरुदेव का विशेष स्नेह था और वह इसका पूरा ध्यान रखते थे कि वह क्या सीख-समझ रही है।

इंदू दूसरे दिन से ही मणिपुरी नृत्य की कक्षाओं के लिए जाने लगी, जो गुरुदेव के निवास पर लगती थी। शांतिनिकेतन के पूरे वातावरण और अपनी शिक्षा-दीक्षा में इंदू पूरी तरह से रम गई थी। वह अप्रैल में जब मणिपुरी नृत्य का अपना पहला एकल प्रदर्शन प्रस्तुत कर रही थी कि गुरुदेव ने उसे अपने स्टूडियो बुलाकर कहा, "जेल से मुझे आपके पिता का तार मिला है। आपकी मां की तबीयत बहुत बिगड़ गई। आपको तत्काल उनके साथ यूरोप जाना होगा।"

अगले दिन जाने की तैयारी करके इंदू गुरुदेव से विदा लेने के लिए अपनी संगी-साथियों के साथ उनके निवास पर गई। गुरुदेव ने कहा, "इंदू तुम जा रही हो। मैं तुम्हारी मां के शीघ्र स्वस्थ होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करूंगा। मुझे आशा है कि सब अच्छा ही होगा।"

उसके साथ आई लड़कियों की डबडबाती आंखों को देखकर उन्होंने फिर कहा, "हम सब तुम्हें बोझिल मन से विदा कर रहे हैं। तुम इस विश्वभारती की संपदा हो। मैंने तुम्हारे पिताजी को आज यही लिखा है, आशा है पढ़ने के लिए तुम यहां जल्दी ही लौटोगी।"

परंतु विश्वभारती में उसकी शिक्षा का अध्याय सदा के लिए बंद

हो चुका था।

इंदू कलकत्ता से सीधे अल्मोड़ा के भुवाली सेनेटोरियम में पहुंची थी। कमला नेहरू बिस्तर से लग गई थी। उनकी चिकित्सा में लगे डॉक्टर मदन अटल ने बताया, ''कमला नेहरू का बायां फेफड़ा पूरी तरह तबाह हो चुका है।'' तभी फिरोज आ पहुंचा और उसने बताया, ''...इंदू! तुम्हारे पापा का ट्रांसफर यहीं अल्मोड़ा जेल में हो गया है और उनको सप्ताह में एक बार सेनेटोरियम आकर मम्मी को देखने की इजाजत भी मिल गई है।''

डॉ. मदन अटल के साथ इंदू और फिरोज डॉ. सीरीन से सलाह लेने गए। डॉ. सीरीन ने राय दी, ''इस हालात में कमला नेहरू को फौरन बर्लिन ले जाना चाहिए। यहां इलाज की वहां जैसी सुविधाएं नहीं हैं।'' और फिर, डॉ. सीरीन ने डॉ. मदन अटल को संबोधित किया, ''आपकी तो वहां जान-पहचान भी होगी...आप तो चीन में मेडीकल मिशन भी लीड कर मम्मी से मिलने आ रहे हैं।''

जवाहरलाल नेहरू सेनेटोरियम आए थे। उन्हें देखने वालों की भीड़ लग गई थी। कमला नेहरू से मिलने के बाद डॉ. अटल और डॉ. सीरीन से बात करके यह निर्णय ले लिया गया कि कमला नेहरू को तत्काल बर्लिन भेज दिया जाए और उनके साथ डॉ. अटल और इंदू का जाना जरूरी है।

कुछ दिनों बाद इंदिरा और कमला ट्रेन से बंबई पहुंची। उनके साथ फिरोज भी था। 23 मई 1935 को कमला नेहरू, इंदिरा और डॉ. मदन अटल जहाज से जर्मनी रवाना हुए। तीन जून को पहुंचते ही एंबुलेंस से तीनों को वियना के लिए रेलवे स्टेशन ले जाया गया। वियना पहुंचकर इंदू और डॉ. मदन अटल ने अनेक डॉक्टरों से परामर्श किया।

वियना में साड़ी में लिपटी इंदू को लोग लगातार घूरते रहते थे।

उसे बड़ा अजीब लगता था। इससे बचने के लिए इंदू ने दो पश्चिमी ड्रेसें खरीदीं और अपने बाल भी कटवाकर छोटे करा दिए। वियना में उसकी मुलाकात सुभाषचंद्र बोस और नाम्बियार से हुई। सुभाष ने इंदू के परिधान पर टिप्पणी की, "इंदू! यह क्या पहन रखा है?"

"जैसा देश, वैसा वेष!"

"वह तो ठीक है, लेकिन यह हमारी परंपरा नहीं है, हमें इस तरह के वस्त्र नहीं पहनने चाहिए, जो हमें हमारी जड़ों से काट दें।"

"वस्त्र और जड़ों का क्या संबंध है नेताजी?" फिर उन्होंने बताया, "जानते हो पापू को मेरा नया पहनावा बहुत पसंद है। उन्होंने मुझे लिखा है कि 'मुझे खुशी है कि तुमने अपने बाल कटवा दिए हैं, फ्रॉक पहनना ही ठीक है...साड़ी कामकाजी ड्रेस नहीं, यह तो आराम तलबी की पोशाक है।' "

बर्लिन के अस्पताल में सफल ऑपरेशन के बाद कमला नेहरू तेज बुखार में पड़ी थी। इंदू बेचैन थी। उसने डॉ. मदन अटल से पूछा, "डॉक्टर क्या कर रहे हैं?"

तभी सुभाषचंद्र बोस और नाम्बियार आ पहुंचे। उन्होंने दिलासा दिलाते हुए कहा, "बुखार भी धीरे-धीरे चला जाएगा। चिंता न करें, कमला जी की तबीयत ठीक हो जाएगी..."

खुद पश्चिमी लिबास में बोस और नाम्बियार ने पुनः इंदू के पहनावे पर अपनी अरुचि प्रकट की और कहा, "हमें अपनी पहचान नहीं बदलनी चाहिए। हम इंडियन हैं, हमारी अपनी ड्रेस है।"

इंदू कुछ देर चुप रही और फिर कहा, "खबर मिली है कि पापू जेल से दो-चार दिन में रिहा कर दिए जाएंगे।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।" सुभाष के चेहरे पर मुस्कान थी।

जेल से रिहा होने के बाद जवाहरलाल नेहरू सीधे सेनेटोरियम

पहुंचे। ऑपरेशन के बाद डॉक्टर की सलाह पर कमला नेहरू को जर्मनी के दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र के एक गांव में ले जाया गया। उनके साथ डॉक्टर मदन अटल और इंदिरा आदि थे। जवाहरलाल को कमला नेहरू की सेहत में कोई सुधार नहीं दिखाई पड़ा। वह बेहद कमजोर हो गईं थीं, दूसरी ओर इंदिरा भी बीमार-सी दिखने लगी थी।

"तुम बीमार मां के साथ बहुत रह चुकी हो," नेहरू ने इंदू से कहा, "अब तुम्हें ज्यादा नहीं रहना चाहिए...मैं तुम्हारी मां को लेकर लूसान चला जाता हूं और तुम बेक्स जाकर 'इकोले नोबेल' में अपनी पढ़ाई फिर शुरू कर दो।"

1935 के मध्य तक जर्मनी में नाजीवाद ने अपनी जड़ें मजबूत कर ली थीं। हिटलर सत्ता में आ गया था और नस्लवाद आर्य नस्ल की श्रेष्ठता के सिद्धांत का जहर नीचे तक फैल चुका था। इंदू पिता से पूछ बैठी, "यह हिटलर आखिर चाहता क्या है?"

"पूरी दुनिया पर राज करना।"

"वह तो अंग्रेज भी कर रहे हैं, परंतु इसका तो मानना ही कुछ और है।"

"यह केवल आर्य जाति को ही सर्वश्रेष्ठ मानता है, परंतु आर्य का अर्थ तक जानता नहीं।"

"बड़ी अजीब बात है!"

इस बीच फिरोज भी आ पहुंचा और वह इंदू के साथ घूमने-फिरने चला गया। उन दोनों की बढ़ती निकटता की चर्चा कमला ने जवाहर लाल से की, "इन दोनों का मिलना-जुलना कुछ ज्यादा ही हो गया है।"

"शायद उसके पीछे इंदू का अकेलापन हो...खुद समझदार है।"

इस बीच डॉ. अटल आ गए उन्होंने कमला को दवाई दी और टेम्प्रेचर लिया।

कमला ने जवाहरलाल से आग्रह किया, "यहां से मुझे स्वीट्जरलैंड

ले चलिए...इस डरावने जंगल में मेरा मन नहीं लगता।''

''ठीक है चले चलते हैं।''

कमला इंदू और डॉ. मदन अटल लूसान स्वीट्ज़रलैंड पहुंचे। कमला अपनी अंतिम लड़ाई लड़ रही थी। 8 फरवरी 1936 को अपनी शादी की बीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर नेहरू जी लंदन से स्वीट्ज़रलैंड पहुंचे। कांग्रेस की वार्षिक मीटिंग में भाग लेने के लिए उनको भारत जाना था। उनको कांग्रेस का नया अध्यक्ष चुन लिया गया था। 28 फरवरी का टिकट बुक था।

''तो मैं चला जाऊं?'' उन्होंने कमला से पूछा था।

''नहीं...मुझे छोड़कर तुम चले जाओ, मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगेगा।''

''तो मैं कार्यक्रम बदल लूं!''

''मैं तुमसे नहीं कहती।'' उन्होंने आंखें बंद कर ली थी, शायद कमला को नींद आ रही थी।

अपने स्कूल से इंदिरा हर सप्ताह दोनों से मिलने आती थी। एक सप्ताह का इंतजार उसे बेहद खलता था। इस बीच कमला की तबीयत बद से बदतर होती गई। उनको बुखार बढ़ता गया। वह गुमसुम होती गई। उसको दिमागी दौरे पड़ने लगे। नेहरू जी ने अपनी उड़ान रद्द कर दी। पर अब कमला की देखभाल की जरूरत खत्म हो चुकी थी।

28 फरवरी 1936!

सुबह 5 बजे कमला जी की मृत्यु हो गई, जवाहरलाल और इंदू दोनों ही उनके पास थे। जवाहरलाल मानो जम से गए। इंदू उनसे लिपटकर फूट-फूटकर रो पड़ी, ''मम्मी...अब मुझे कौन पढ़ने को कहेगा ...कौन...?''

''चुप हो जाओ बेटी,'' नेहरू ने इंदू को सांत्वना दी, ''रोने से जाने

वाला वापस आ जाए तो मेरे एक आह्वान पर हिन्दुस्तान के सारे लोग रोने लग जाएंगे।''

इंदू सुबकती ही रही।

1 मार्च को अंतिम संस्कार के बाद फिरोज लंदन चले गए।

5 मार्च को जवाहरलाल नेहरू कमला के अस्थि कलश को लेकर ट्रेन से बर्लिन के लिए रवाना हुए। गुमसुम नेहरू जी और इंदू ने एक-दूसरे को डबडबाई आंखों से देखा। ट्रेन ओझल होती चली गई।

उसी दिन शाम को 6 बजे की ट्रेन पकड़कर इंदू बेक्स पहुंची। वहां वह अगाया हेरिसन के साथ रुकी।

''मैं ऑक्सफोर्ड में प्रवेश परीक्षा की तैयारी के लिए इंग्लैंड जाना चाहती हूं।''

''इंग्लैंड ही क्यों?'' अगाया ने पूछा।

''मेरे पिताजी चाहते हैं कि इंग्लैंड में रहकर ही पढ़ाई करूं...वह वहां बहुत से लोगों को जानते हैं...और फिर मेरे एक दोस्त भी हैं इंग्लैंड में।''

ब्रिस्टल में बेडमिंटन स्कूल की प्रिंसिपल मिस बेकर ने इंदू को ऑक्सफोर्ड परीक्षा की तैयारी करने का सुझाव दिया।

एक दिन सुबह अपने कमरे में इंदू पढ़ रही थी, तभी फिरोज के आने की खबर पाकर जल्दी से लाउंज में आई, जहां फिरोज उसके इंतजार में बैठे थे।

''वीक एंड में लंदन आने वाली थीं, मैंने काफी इंतजार किया'' फिरोज ने शिकायत की।

''आजकल कभी-कभी मैं कुछ तय नहीं कर पाती हूं,'' इंदू भावुक हो गई, ''...अजीब-सा अकेलापन मुझे सालता रहता है...इंग्लैंड में पढ़ने का निर्णय मैंने शायद इसलिए लिया कि तुम वहां हो...''

''भई ये शायद क्यों? मैं तो हूं ही।'' फिरोज हंसा।

"देश के क्या हाल चल रहे हैं?"

"बहुत अच्छे! यह गांधीजी का जादू है कि आजादी की लडाई में अब किसान मजदूर पूरी ताकत से शामिल हो रहे हैं। हां! एक बात और, अगले महीने तुम्हारे पापू भी लंदन आने वाले हैं।"

"ऑक्सफोर्ड प्रवेश परीक्षा देने के बाद मैं लेबर पार्टी के नेताओं से मिलना चाहती हूं।"

"क्यों?"

"फिरोज! अब इस क्यों का जवाब तो मेरे पास है नहीं।"

"ठीक है...मैं तुमको इंडिया लीग के ऑफिस ले चलूंगा, जहां उनसे मुलाकात हो जाएगी, वे लोग हमारी आजादी के आंदोलन का समर्थन कर रहे हैं।"

इधर-उधर की बातें करने के बाद इंदू के प्रस्ताव पर दोनों घूमने निकल पड़े।

बेडमिंटन स्कूल में इंदू ऑक्सफोर्ड परीक्षा की तैयारी कर रही थी। उसकी उन्नीसवीं सालगिरह के अवसर पर जवाहरलाल नेहरू की ओर से उसे एक तोहफा मिला। उसने उत्सुकता से पार्सल खोला। उसमें कालीदास के 'मेघदूत' की सुंदर प्रति के साथ पापू का पत्र मिला।

जवाहरलाल अपनी बेटी का बहुत ध्यान रखते थे।

यूरोप में उनके अनेक मित्र थे। जिसमें लंदन स्कूल ऑफ इकनोमिक्स के प्रख्यात अर्थशास्त्री हैराल्ड लास्की भी थे। एक दिन प्रो. लास्की हैरिसन बेडमिंटन स्कूल आए और उन्होंने इंदिरा को बताया, "आपके पिता का पत्र मिला है।"

"पापू को पत्र लिखने का बहुत शोक है," इंदू ने पूछा, "क्या लिखा है उन्होंने?"

"उन्होंने तुम्हारा ध्यान रखने को लिखा है। यदि तुम्हें किसी चीज की जरूरत हो तो बताना, परेशान नहीं होना, मैं प्रबंध कर दूंगा।"

"धन्यवाद!"

"अरे भई आप," अगाया हंसी, "आप भी इसके गार्जियन हैं, मैं तो समझती थी मैं ही हूं...गांधीजी ने मुझे ही दी है इसकी जिम्मेदारी।"

"अभिभावक के नाते नहीं, कर्तव्य के नाते भी तो इंदू का ख्याल रखना आवश्यक है।" उन्होंने अगाया से कहा।

"कहते तो ठीक हो!"

फिरोज के साथ इंदिरा लंदन से इंडिया लीग कार्यालय पहुंची। वहां उनकी मुलाकात कृष्णा मेनन, शील रे, भंडारी और लेबर पार्टी के दो नेताओं से हुई।

"आइए, इंदू! आपका स्वागत है।" कृष्णा मेनन ने इंदिरा का स्वागत किया।

"धन्यवाद!"

"आगे क्या विचार है?"

"प्रगतिशील छात्रों के विचारों को जानना।"

"तो प्रत्येक सप्ताह के अंत में लंदन आते रहो और सतीश कक्कड़ के कमरे पर भारत के प्रगतिशील विचारों के छात्रों से मिलते रहो। साथ में निखिल चक्रवर्ती भी होंगे, जो लंदन स्कूल ऑफ इक्नोमिक्स में फिरोज के साथ ही पढ़ते हैं।"

"अच्छी बात है।"

कुछ दिनों बाद इंदू और फिरोज पेरिस घूमने गए। वहां वे किताबों की दुकानों में नये विचारों और लेखकों के सम्पर्क में रूचि लेते, म्यूजियमों में जाते, सांस्कृतिक दुनिया का जायजा लेने नाटकों आदि में जाते थे।

मार्च के मध्य में इंदिरा ब्रिस्टल से ट्रेन द्वारा ऑक्सफोर्ड गई और प्रवेश परीक्षा में बैठी तथा पास हो गई। अब वह बेडमिंटन स्कूल छोड़

सकती थी। उसका भविष्य सोमरविला कॉलेज था, लेकिन पहले उसको अपने घर आनंद भवन, इलाहाबाद आना था। 31 मार्च को वह के. एल. एम. के. विमान पर सवार हुई। वास्तव में विमान में यह उसकी पहली यात्रा थी। चार दिन बाद जब वह आनंद भवन पहुंची, तो अपने आंसू छिपाने में उसको खुद से बहुत संघर्ष करना पड़ा, वहां की हर चीज उसको अपनी मां कमला की याद दिलाती थी। वह अब उन्नीस वर्ष की थी, अधिक समझदार, पर अधिक उदास भी थी।

इंदिरा के भारत लौटने से कुछ समय पूर्व ही 1937 में कांग्रेस के फैजपुर अधिवेशन में नेहरू जी दोबारा अध्यक्ष चुन लिए गए थे। आनंद भवन में इंदिरा ने पाया कि उसके पापू की तबियत ठीक नहीं है, जो आमतौर पर चुस्त-दुरुस्त और स्वस्थ रहते थे।

"कैसे हैं पापू?"

"जब से तुम इंग्लैंड से लौटी हो, तभी से तुझसे बात करने की सोच रहा था, पर वक्त ही नहीं मिला..." फिर कमला नेहरू की तस्वीर पर निगाहें गड़ाते हुए कहा, "...दक्षिण पूर्व-एशिया के और कुछ यहां के भी दोस्तों की राय है कि तुम्हारी मम्मी की याद को कायम रखा जाए।"

"जी।"

"मेरे ख्याल से हम लोगों को सबसे पहले मलय प्रायद्वीप चलना चाहिए...। वैसे मुझे कुछ पैसा यहां से भी मिला है...यहां का काम पद्मजा नायडू देख ही रही हैं...।"

"कब चलना होगा?"

"बनाते हैं मिलकर कार्यक्रम!"

कलकता से बर्मा घूमते हुए वे मलय प्रायद्वीप पहुंचे। वहां उनका भारी स्वागत हुआ। लोग तिरंगा हाथों में लिए नारे लगा रहे थे, 'लौंग लिव इंडिया, लौंग लिव-गांधी-नेहरू!'

स्थानीय लोगों ने दोपहर से पहले एक सभा का आयोजन किया।

नेहरू जी और इंदिरा जैसे ही मंच पर पहुंचे, हड़कंप मच गया। श्रोता उनको नजदीक से देखना चाहते थे।

"कृपया शांत बैठ जाइए!" नेहरू के कहते सभी चुप हो गए।

"हमें विश्व से साम्राज्यवाद का नाश करके लोकतंत्र को लाना है, तो पहले संयम बरतना होगा और अपने आंदोलन अहिंसात्मक ढंग से चलाने होंगे।"

भाषण के बाद नेहरू जी को कमला नेहरू स्मारक के लिए एकत्र की गई धनराशि भेंट की गई। श्रोताओं और आयोजकों के आग्रह पर इंदिरा वहीं रुक गई और कमला नेहरू स्मारक के बारे में बताने लगी। श्रोताओं में से महिलाएं उठ-उठकर स्मारक के लिए अपनी चूड़ियां और हार इंदिरा के सामने रखने लगीं। बहुत से लोगों ने अपने पर्स खाली कर दिए।

मलय प्रायद्वीप से नेहरू जी का कार्यक्रम चेकोस्लोवाकिया की राजधानी बुडापेस्ट जाकर विजय लक्ष्मी पंडित से मिलने का था और फिर स्पेन जाने का। इंदिरा इंग्लैंड लौटकर ऑक्सफोर्ड की परीक्षा देना चाहती थी।

इंग्लैंड पहुंचने के कुछ दिन बाद इंदिरा को मिडिल सेक्स के अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। डाक्टरों ने जांच करके इंदिरा को प्लूरिसी बताया और स्वीट्जरलैंड के टीन वैली स्थित सेनेटोरियम में दाखिल होने की सलाह दी। पर उनकी परीक्षा सिर पर थी और साथ ही फिरोज ने कहा, "और फिर जब युद्ध चल रहा है, तो यह कैसे संभव है।"

"पर यहां इनकी देखभाल...?" डॉक्टर ने कहा।

"मैं करूंगा!" फिरोज का कहना था।

"इस बीमारी के लिए जिम्मेदार मैं खुद हूं," इंदिरा ने स्वीकारा, "चेकोस्लोवाकिया में सर्दी लग गई थी। जिसकी परवाह नहीं की मैंने...मुझे लगता है कि इस बार भी मैं ऑक्सफोर्ड न जा सकूंगी... एग्जाम रह जाएगा।"

"पहले ठीक हो जाओ...," फिरोज ने दिलासा देते हुए कहा,

''एग्जाम के बारे में बाद में सोचना...।''

एक दिन उसकी मामी शीला अस्पताल में मिलने आई। उनकी निगाहें फिरोज पर पड़ी, ''यह कौन है?''

''मेरा मित्र है।'' इंदिरा ने उसका परिचय दिया।

तभी फिरोज बाहर चला गया, तो इंदिरा के बेड पर बैठते हुए शीला कौल ने कहा, ''तुम्हारा वेट बहुत कम हो गया है...बस सत्तर पौंड...'' थोड़ी देर खामोश रहने के बाद इंदिरा के चेहरे की ओर देखते हुए पूछा, ''यह पारसी नौजवान बड़ा ख्याल रखता है...कहीं प्यार तो नहीं है इससे...?''

''हम लोग सिर्फ अच्छे दोस्त हैं।'' इंदिरा ने जल्दी से उत्तर दिया।

''मुझे तो कुछ दाल में काला...''

स्वस्थ होकर इंदिरा अस्पताल से 2 सप्ताह बाद अक्टूबर में अपने समविला कॉलेज वापस आ गई। अब कॉलेज में वह वहां की ड्रेस एकेडमिक गाउन, कैप, सफेद टॉप, काली टाई और काला स्कर्ट पहनती थी। उसकी क्लासमेट के. डेविस से उसकी गहरी छनती थी। ''सुनते ऊंचा हैं और नकली दांत ज्यादा दिखाते हैं...'' के. डेविस एक ट्यूटर का मजाक उड़ाने लगी, ''दीन-दुनिया का अता-पता भी नहीं रखते।''

''हां,'' इंदू ने कहा, ''पूरे कॉलेज में केवल वे ही नहीं जानते कि मैं जवाहरलाल नेहरू की बेटी हूं।'' दोनों दिल खोलकर हंस पड़े।

के. डेविस फिर उसे ऑक्सफोर्ड में इंडियन स्टूडेंट्स यूनियन के बारे में बताने लगी, ''यूनियन के सारे सदस्य 'लेफ्ट माइंडिड' हैं और वे यूनियन को मजलिस कहते हैं।''

''मुझे इसकी जानकारी है।'' इंदिरा ने कहा।

''फिलहाल क्या गतिविधियां हैं, इंदू?''

''बहरहाल मजलिस और लेबर पार्टी की युवा शाखा की संयुक्त मीटिंगों में भाग लेती हूं।''

''वहां तो देशी गुड़िया-सी लगती होंगी...''

"सिल्क की साड़ी में जाती हूं!"

"क्यों?"

"क्योंकि सिल्क मेरी खास पसंद है।"

"और..."

"समय-समय पर आवश्यकतानुसार इंडिया लीग के ऑफिस जाना होता है!"

"वहां भी कोई जिम्मेदारी?"

"जब कृष्णा मेनन, अगाया हैरिसन, जैनी, निखिल चक्रवर्ती और फिरोज चर्चाओं में व्यस्त होते हैं, मैं और शांता गांधी मिलकर चिट्ठियां भेजने का काम करती हैं।"

फिरोज और इंदिरा अक्सर मिलते थे, पर अब उनकी बातचीत का दायरा बढ़ चला था। वे दोनों खासतौर से वामपंथी छात्रों की मीटिंग में जाते थे, जो सतीश केलकर के नेतृत्व में फासिज्म के खिलाफ वातावरण बनाने में लगे थे।

वह समझ नहीं पायी कि कृष्णा मेनन जवाहरलाल नेहरू को लॉर्ड लोथियन से क्यों मिलाना चाहते थे, जबकि वह फासिस्ट ताकतों और हिटलर के घोर समर्थक थे...इंदू ने फिरोज को बताया, "उसको लेकर मैंने पापू को लिखा था, पता है उनका क्या जवाब था?"

"क्या?"

"उन्होंने मुझसे सहमत होते हुए लिखा है, 'लॉर्ड लोथियन एक महत्वपूर्ण गुट के नेता होने के अलावा कुछ और भी हैं...और हिन्दुस्तान में मेरी जो पोजीशन है, उसके हिसाब से मेरी कुछ जिम्मेदारियां भी हैं...मुझे कुछ काम अपनी मर्जी के खिलाफ भी करने पड़ते हैं।' "

"उनका कोई पॉलिटिक कंपलशन होगा...।" फिरोज ने ध्यान से सुनने के बाद बताया।

अपनी 22वीं वर्षगांठ पर इंदिरा ब्रेनफोर्ड हास्पिटल में अपना इलाज करा रही थीं। गांधी जी की सलाह पर 16 दिसंबर 1939 को अगाया हैरिसन के साथ वह आल्प्स की पहाड़ियों से घिरे एक गांव में टीबी के उपचार के लिए पहुंची। दूसरे ही दिन अगाया वापस चली गई।

दुनिया से संपर्क रखने के लिए इंदिरा अपने साथ एक रेडियो रखती थी। और फिर नेहरूजी और फिरोज के पत्र तो उन्हें लगातार मिलते ही रहते थे। पर सेनेटोरियम में इंदिरा अपने को 'पिंजरे में बंद' महसूस करती थी। बी.बी.सी. से उन्हें खबरें मिलती रहती थी। दुनिया विश्व युद्ध के कगार पर थी।

1941 जनवरी की पहली तारीख को इंदिरा ब्रिस्टल पहुंची। जहां फिरोज उनका बेताबी से इंतजार कर रहे थे। ब्रिस्टल से ट्रेन पकड़कर इंदिरा सीधे फिरोज के एक कमरे के फ्लैट में पहुंची।

फिरोज और इंदिरा के लिए ये समय बेहद तनावपूर्ण था।

"लंदन पर जर्मन विमान बम बरसा रहे हैं।"

"हां इंदू! स्थिति बड़ी खराब हो चुकी है।"

"विश्व युद्ध नहीं यह तो साक्षात् विनाशलीला है।"

तभी एक बम उनके कक्ष से थोड़ी ही दूर एक मैदान में गिरा, जिस कारण वे दोनों भी बमबारी का शिकार होते-होते बचे।

इंदिरा और फिरोज ने समुद्री रास्ते से भारत आने की योजना बनाई, यह ईस्ट इंडिया कंपनी के जमाने का पुराना समुद्री रास्ता था, जो दक्षिण अफ्रीका के केप ऑफ गुड होप होकर भारत आता था। तब तक स्वेज नहर नहीं खुली थी।

अंग्रेज नौ-सैनिक के साथ यह यात्रा बेहद थकाऊ थी और फिर नौ-सैनिक का व्यवहार भी इंदिरा को रास नहीं आ रहा था।

केप टाउन पहुंचकर वे रंगभेदी गोरी सरकार के विरुद्ध संघर्ष कर

रहे लोगों से मिलना चाहते थे। केपटाउन पहुंचने पर यात्रा के उनके एजेंट और नेहरूजी के मित्रों ने उनको बंदरगाह पर रिसीव किया और अपने घर ले गये।

इंदिरा नेहरू और फिरोज ने रामाराव से पूछा, ‘‘हमारी इच्छा आन्दोलनकारियों से मिलने की है?’’

‘‘वे लोग अंग्रेजों से बड़े सचेत रहते हैं और फिर यू (फिरोज) एंड इंदिरा लुक लाइक ब्रिटिश...’’ रामाराव ने बताया।

इंदिरा पहले से ही साड़ी पहनती थी और उसने शीला से भी साड़ी पहनने को कहा, ‘‘आप साड़ी क्यों नहीं पहनती?’’

‘‘आप तो पहनती हैं, फिर मुझे क्या आवश्यकता है?’’

‘‘क्यों आप भारतीय नहीं हैं क्या?’’

‘‘...साड़ी और भारत का क्या संबंध?’’

‘‘साड़ी ही तो भारतीय सांस्कृतिक परिधान का अभिन्न अंग है।’’

फिरोज और इंदिरा, अशोक रे और शीला, एक अफ्रीकी महिला और ड्राइवर के साथ यूनिवर्सिटी गए। वहां उन्होंने एक अश्वेत नेता रिचर्ड का पता हासिल किया, जब वे वहां पहुंचे, तो उनको देखकर एक अफ्रीकी महिला ने उस अश्वेत नेता रिचर्ड का पता बताने से साफ इंकार कर दिया, ‘‘हम नहीं बता सकते, हमें नहीं पता रिचर्ड कौन है?’’

‘‘हम भारतीय हैं, हमें उनका पता होना बहुत आवश्यक है?’’

‘‘मगर क्यों?’’

‘‘क्योंकि जिस मार्ग पर वे चल रहे हैं, हम भी वही...’’

‘‘क्या तुम वाकई भारतीय हो?’’

‘‘हां.. कोई शक!’’

‘‘शक नहीं...पर भारत की सबसे पवित्र नदी कौन-सी है?’’

‘‘गंगामाता!’’

"ओह! ठीक कहा, तुम वाकई भारतीय हो, नदी को माता तो भारतीय ही कहते हैं। हम तुम्हें उनका पता अवश्य बता देंगे।"

इस प्रकार जब उनको यकीन आ गया कि वे भारतीय हैं, तो वह उनको रिचर्ड के घर ले गई, "यह रहा रिचर्ड का घर," फिर अंदर प्रवेश करते हुए बोली, "आप लोग तो अंग्रेज जैसे लगते हैं...दरअसल आप लोगों के जाते ही हमें परेशान किया जाता है। इस तरह की बातों के लिए हमें गिरफ्तार करके जेलों में ठूंस दिया जाता है।"

आखिर उनकी मुलाकात अश्वेत नेता रिचर्ड से हो ही गई।

डरबन के होटल में जहां वे रुके थे, वहां उनको रंगभेद का एक और अपमानजनक अनुभव हुआ। कोई उनसे मिलने आया, पर क्योंकि वह इंडियन था, इसलिए बैलबॉय ने उसे लाउंज में बैठने की इजाजत नहीं दी।

डरबन के एक भारतीय नेता मनीलाल गांधी ने कुछ अफ्रीकी साथियों के साथ इंदिरा के स्वागत का कार्यक्रम बनाया।

हॉल में अश्वेतों और भारतीयों की भारी भीड़ जमा हुई। खुशी की लहर दौड़ गई थी। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सभा के अध्यक्ष ने अफ्रीका के जुझारू का प्रतीक चिन्ह भेंट किया।

इंदिरा ने पहले तो कह दिया कि वे भाषण नहीं देंगी, परंतु वहां उत्साहपूर्ण माहौल देखकर वह स्वयं श्रोताओं को संबोधित करने उठ खड़ी हुई, "मेरे भाइयों और बहनो! आज अफ्रीकी कामगारों और दूसरे अश्वेतों की बदतर जिंदगी देखकर मुझे रोना आता है, लेकिन इससे ज्यादा मुझे इस बात का भी दुख है कि कुछ अपने ही लोग अपने मजदूर भाइयों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते।

"हमें अपने भाइयों की समस्याओं का समाधान करना चाहिए और दुःख-दर्द में सबका साथ देना चाहिए।"

उनके इस प्रकार के भाषण से डरबन के कुछ भारतीय नाराज भी हो गए। भाषण की अखबारों में खूब चर्चा हुई।

अप्रैल 1941 में बंबई पहुंचने के बाद इंदिरा कुछ दिनों तक अपनी छोटी बुआ कृष्णा के साथ रहीं और फिर गांधीजी से मिलने वह सेवाग्राम चली गईं।

गांधीजी इंदिरा को नए रूप में देख रहे थे। वह सिल्क की साड़ी पहनें हुए थी, और होठों पर हल्की लिपिस्टक तथा लम्बे-लम्बे बालों की चोटी बंधी थी।

गांधीजी ने चरखा कातना रोककर इंदिरा को घूरकर देखा, "इंदिरा! इंग्लैंड में छह साल रहकर क्या तुम इस गरीब देश के गरीब इंसान को भूल गई...?"

"नहीं तो बापू।"

"नहीं तो...जाओ तो फिर इस साड़ी को बदलकर मुंह-हाथ धोकर आओ।"

"जी बापू।"

इसी दौरान इंदू ने बापू को बताया कि वह फिरोज के साथ विवाह करना चाहती हैं, कुछ विचार-विमर्श के बाद बापू ने पूछा, "क्या तुमने नेहरू जी से बात की है?"

"यहां से सीधे मैं उनके पास देहरादून जाऊंगी...मैं चाहती हूं कि शादी बिना किसी आडंबर के हो...।"

"इस शादी में तुम्हें लोगों को बुलाना चाहिए, ताकि लोग यह न कहें कि शादी घर वालों की मरजी के खिलाफ हुई है।"

"जी।"

"मैं फिरोज से मिलना चाहता हूं।"

"आज ही मिलने आ जाएंगे।"

"बहुत अच्छा।"

सेवाग्राम में कुछ दिन बिताने के बाद इंदिरा नेहरूजी से मिलने देहरादून पहुंची। जेल अधिकारी ने उनको स्टेशन से लेने गाड़ी भेजी।

इंदिरा को देखते ही नेहरूजी ने कहा, ''तुम काफी कमजोर हो गई हो।''

''लंदन पर दिन-रात होने वाली बमबारी के चलते मैं लगातार तनाव में रहती हूं।''

''जब तनाव हो एक गिलास जल पी लिया करो।''

''जी पापू।''

''मैं चाहता हूं कि तुम गर्मियां मसूरी में बिताओ, क्योंकि इलाहाबाद में बेहद गर्मी होगी।''

''पर मैं तो मई की भयंकर गर्मियां भी इलाहाबाद में ही काटना चाहती हूं। पापू! मैं आपसे कुछ बात करना चाहती हूं...पर समझ में नहीं आ रहा...आपसे कैसे कहूं।''

''क्या कहना चाहती हो मैं जानता हूं,'' नेहरूजी ने अपनी निगाहें ऊंची कर इंदिरा को देखा, ''डॉक्टरों ने तुम्हें वार्निंग दे रखी है कि सेहत पर सबसे पहले ध्यान देना है...अपनी मां वाली बीमारी की मार तुमने भी झेली है। उससे तुम्हारी जिंदगी को खतरा है...मेरी राय है कि सबसे पहले तुम अपनी सेहत दुरुस्त करो...।''

कुछ दिनों बाद इंदिरा अपने पापू से देहरादून जेल में मिलने गई। दोनों गंभीर और तनाव में थे। थोड़ा भावुक होते हुए नेहरूजी ने कहा, ''मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा और अगर तुम फिरोज से शादी करना चाहती हो, तो मुझे कोई एतराज नहीं...मेरा कोई इरादा तुम्हारे इरादे में बाधक बनने का नहीं।''

इंदिरा उनकी ओर देख रही थी। फिर एक गहरी सांस लेकर नेहरूजी ने कहा, ''तुम्हें लेकर मैंने भी बहुत से सपने देखे थे...मैं सोचता था कि अपनी पढ़ाई पूरी करके तुम रूस जाओ...बहुत-सी भारतीय भाषाएं सीखो, जिनसे तुम्हें अपने मुल्क को अंदर से जानने में मदद मिलती...मैं तुम्हारी मदद करना चाहता था कि आगे चलकर तुम

मेरी मदद कर सको...।"

"मैंने यह निर्णय लंबे सोच विचार के बाद लिया है...," इंदिरा भी भावुक हो गई।

इलाहाबाद लौटकर इंदिरा और फिरोज राजनीतिक गतिविधियों में लग गए। नेहरूजी की रिहाई होने वाली थी। कंग्रेस कार्य समिति की मीटिंग के लिए प्रस्ताव के मसौदे पर बात चल रही थी। लाल बहादुर शास्त्री और फिरोज चाहते थे कि आगे का कार्यक्रम नेहरूजी की रिहाई के बाद तय किया जाए। इंदिरा अपनी छोटी बुआ कृष्णा हथीसिंह से मिलने बंबई चली गई थी।

"दूसरे विश्व युद्ध में एक नया मोड़ आ गया।"

"क्या?"

"अमरीका ने जर्मनी, इटली और जापान के धुरी राष्ट्रों के खिलाफ युद्ध में उतरने की घोषणा कर दी है।"

"विश्व पर एक नई आफत!"

"हां, एक नई आफत तो आ ही गई है। पर्लहार्बर पर जापान ने हमला कर अमरीका के पेसिफिक बेड़े को तबाह कर दिया है।"

बातें करते-करते नेहरूजी ने इंदिरा को कहा, "बारदौली की कार्य समिति की बैठक में चलोगी।"

"बैठक का एजेंडा क्या है?"

"एजेंडा गांधीजी से बात करके वहीं तय होगा।"

नेहरू जी इंदिरा को बंबई के नेताओं और साथियों से मुलाकात कराने ले गए। बारदौली कार्य समिति की बैठक में गांधीजी और जवाहरलाल नेहरू के साथ देश के जाने-माने कांग्रेसी नेताओं ने भाग लिया। इनमें सरदार पटेल, मौलाना आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खां,

शेख अब्दुल्ला और लाल बहादुर शास्त्री प्रमुख थे। इंदिरा अपनी राजनीतिक दीक्षा के एक नये चरण में प्रवेश कर रही थी।

बैठक में बोलते हुए जवाहरलाल नेहरू ने कहा, ''मैं सोचता हूं कि ब्रिटेन के लिए अब भारत में राज करना आसान नहीं। मैं अब आर पार की लड़ाई का हिमायती हूं...चाहे कुछ भी नतीजा निकले। मैं अब इनके साथ कोई सहयोग नहीं करना चाहता कि अंग्रेज अब और यहां रहें। उनको अब जाना ही होगा... हर हालात में उन्हें खदेड़ना ही होगा। हिन्दुस्तान के अवाम की आंखों में आजादी का सपना साफ चमक रहा है... अब आजादी उन्हें कल नहीं...आज ही चाहिए और कोई इंतजार या दूसरी तरह का बंदोबस्त उन्हें कबूल नहीं... ।''

शाम को नेहरूजी ने इंदिरा से बात करते समय इशारा किया, ''तुम, लोगों के साथ मिलने-जुलने में शर्माती हो,'' उन्होंने कहा, ''तुम जो सोचती हो उसे लोगों के साथ बांट दिया करो,'' फिर उन्होंने अपनी राय जाहिर करते हुए कहा, ''ब्रिटिश सरकार लड़खड़ा गई है। यह मौका है जब ब्रिटिशर्स से कह देना चाहिए–भारत छोड़ो।''

इंदिरा ने झिझकते हुए कहा, ''आपके प्रस्ताव से तो यह बात साफ है, लेकिन कार्यसमिति के सदस्य हिचक क्यों रहे हैं आन्दोलन करने से...''

''आजादी की लड़ाई का आन्दोलन गांव-गांव जा चुका है...यह आम आदमी की लड़ाई बन गई है। मेरी राय है कि तुम्हें अब गांवों का दौरा करना चाहिए...जिसमें तुम असली हिन्दुस्तान को समझ सको।''

''मैं खुद भी यही चाहती हूं...पर इसके लिए मुझे अपनी तरफ का एक साथी चाहिए।''

''फिरोज के साथ जिदंगी जीने के और अपने भावी जीवन के बारे में तुमने तय कर ही लिया है,'' नेहरूजी इंदिरा का इशारा समझ गए थे, ''ठीक है...मेरी दुआएं और सपोर्ट तुम्हारे साथ हैं...इलाहाबाद पहुंचकर शादी की तारीख तय कर लेते हैं... ।''

अंततः इंदू और फिरोज की शादी तय हो गई। इस पर और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा चल रही थी।

"रामनवमी का दिन तो बड़ा ही शुभ है।" बी. के. नेहरू ने कहा, "इंदू की शादी के लिए यही तिथि ठीक रहेगी।"

"हां, इन्हीं दिनों क्रिप्स मिशन भी भारत आ रहा है।...कार्य समिति की बैठक यहीं बुला लेते हैं," नेहरूजी ने आगे कहा, "गांधीजी की राय है कि इस मौके पर बड़ी पार्टी होनी चाहिए..." और फिर बी. के. नेहरू की ओर मुखातिब होकर कहा, "बृज...मैं इनवीटेशन का ड्राफ्ट बना देता हूं...इसे रोमन में छपवा लो।"

शादी में शामिल होने वालों की सूची में एक प्रमुख नाम अप्रत्याशित रूप से जुड़ गया था : विश्वख्यात भौतिक विज्ञानी फ्रांस की मेरी क्यूरी की बेटी ईव क्यूरी का। वह आकर आनंद भवन में ही ठहरी और उसने शादी से पहले रस्मों को कौतूहल और चाव से देखा।

विवाह की रस्म मार्च सन् 1942 रामनवमी के दिन सुबह हुई। दुल्हन बनी इंदिरा अपने कमरे से सुबह 9 बजे बाहर आई। वह खादी की गुलाबी रंग में रंगी हुई साड़ी पहने हुए थी, जिसके बॉर्डर पर चांदी की सुंदर कढ़ाई हुई थी। यह साड़ी सूत से तैयार की गई थी, जिसे नेहरूजी ने जेल में काता था। उनकी कलाइयों पर परंपरागत सोने के भारी कड़ों के बजाय ताजे फूलों और कांच की रंगीन चूड़ियां थीं। लंबी छरहरी और उनका रंग पके हुए गेहूं की तरह सुनहरी हो रहा था। उनके अति सुंदर नाक-नक्श यूनानी सिक्कों पर अंकित तस्वीर जैसे लग रहे थे। फिरोज गांधी कांग्रेस की परंपरागत पोशाक खादी की शेरवानी और चुड़ीदार पाजामे में थे और उन्होंने भी फूलों का हार पहन रखा था।

समारोह आनंद भवन के ग्राउंड फ्लोर के बरामदे के सामने वाले

लॉन में लगे शामियाने के नीचे हुआ। जिसे फूलों और पत्तों से सजाया ग़या था।

इंदिरा और फिरोज के पास खादी की धोती-कुर्ता पहने जवाहरलाल संगमरमर की चौकी पर बनाए गए हवन कुण्ड के इर्द-गिर्द बैठे थे। नेहरूजी की बगल का खाली आसन कमला की अनुपस्थिति को इंगित कर रहा था।

विवाह की रस्में प्रोफेसर काला ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ संपन्न कराई। इसके साथ इंदिरा ने अपनी पंसद से एक और अन्य संस्कृत श्लोक भी शपथ के रूप के रूप में पढ़वाया। दरअसल, यह श्लोक सन् 1942 के राजनीतिक माहौल की भावनाओं से भरा श्लोक था :

"दुनिया के चारों कोनों में से अगर कोई व्यक्ति हमें हमारी स्वतंत्रता से वंचित करने का साहस करता है, तो ध्यान रखो खड्ग हाथ में लिए मैं यहां उनका अंत तक सामना करने को तैयार हूं, मैं प्रार्थना करती हूं कि स्वाधीनता का प्रकाश फैले। मैं कामना करती हूं कि यह हमें हर ओर से आवृत करे।"

वैवाहिक अनुष्ठान में दो घंटे लगे। दोपहर तक पूरे कार्यक्रम के दौरान अतिथियों का तांता लगा था। आनंद भवन के लॉन में और उसके बाहर भारी भीड़ थी। इनमें खास और आम दोनों तरह के मेहमान थे।

सुबह विवाह के अवसर पर नेहरू परिवार के सभी सदस्यों विजयालक्ष्मी पंडित, कृष्णा हथीसिंह और उनके परिवार के साथ-साथ फिरोज की मां थीं। अन्य विशिष्ट लोगों में सरोजनी नायडू और उनकी बेटी पद्मजा, लाल बहादुर शास्त्री, गोविंद बल्लभ पंत, सीमांत गांधी, बी. एन. पांडे तथा अन्य कांग्रेसी नेता और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना आजाद ट्रेन लेट होने के कारण शाम को रात्रि भोज पर पहुंच पाए थे। गांधीजी क्रिप्स से मीटिंग के सिलसिले

में दिल्ली में थे। गांधीजी बाद में आए थे और ऐसे ही क्रिप्स भी।

दोपहार तक विवाह की रस्में पूरी हो गई। शाम को एक भारी रात्रि भोज का आयोजन हुआ। अमेरिकी फिल्म निर्माता हेन ने इस पूरे कार्यक्रम का फिल्मांकन किया।

विदा के बाद आनंद भवन में कांग्रेस के नेताओं नेहरूजी, सरोजनी नायडू, शेख अब्दुल्ला, खान अब्दुल गफ्फार खां और बी.के. नेहरू तथा अन्य ने क्रिप्स मिशन के बारे में चर्चा की। गांधीजी क्रिप्स से मिलने दिल्ली गए हुए थे।

बाहर पंडाल में शाम के रात्रिभोज की तैयारियां चल रही थी, रिसेप्शन के समय तक मौलाना आजाद भी पहुंच गए थे और फिरोज व इंदिरा को शुभकामनाएं दी।

मई 1942, कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन, इलाहाबाद में होना तय हुआ था। फिरोज और इंदिरा भी उसकी तैयारियों में लगे थे, तभी एक समस्या खड़ी हो गई। लालबहादुर शास्त्री को कार्यालय के लिए कोई ऐसी जगह नहीं मिल रही थी, जो अधिवेशन स्थल के नजदीक हो। फिरोज और इंदिरा ने अपने घर के एक हिस्से को कार्यालय बनाने का प्रयास किया।

कार्यालय में कार्यसमिति की बैठक की तैयारियां तेज हो गई। अन्य कार्यकर्ताओं और नेताओं के साथ इंदिरा और फिरोज ने भी अपना-अपना काम संभाल लिया था।

बैठक समाप्त होने के कुछ दिन बाद नेहरूजी, इंदिरा और फिरोज गांधी तथा कृष्णा हथीसिंह बैठक के नतीजों पर बात कर रहे थे।

"अब फैसला दो महीने बाद बंबई में होने वाली 7-8 अगस्त की कार्यसमिति की मीटिंग में होगा" नेहरू ने फिर इंदिरा को संबोधित करते हुए कहा, "मैं कुछ दिनों के लिए मनाली जाकर रूसी पेंटर

निकोलस रोरिक से मिलना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि फिरोज और इंदू तुम भी साथ चलो।''

''मैं तो नहीं जा सकूंगा।'' फिरोज ने असमर्थता जताई।

''और तुम!'' नेहरू ने इंदिरा से कहा।

''...'' वह कुछ नहीं बोली, क्योंकि बीच में ही कृष्णा ने उन्हें बंबई आने की याद दिला दी, ''इन्हें बंबई भी तो जाना है!''

मनाली में इंदिरा, निकोलस रोरिक और स्थानीय कांग्रेसी नेताओं के साथ बैठे नेहरूजी ने इलाहाबाद की कार्यसमिति की बैठक के बाद की स्थिति का जायजा लेते हुए कहा, ''आम आदमी आंदोलन से जुड़ गया है। सारे देश में लोग अपने-अपने ढंग से ब्रिटिश सरकार के खिलाफ अपनी नाराजगी प्रकट कर रहे हैं, बिजली के तार काटे जा रहे हैं। रेल की पटरियां उखाड़ी जा रही हैं।

''जनता में ऐसा उभार सन् 1857 की क्रांति के बाद पहली बार आया है, पर मुझे चिंता है कहीं ये हिंसा की ओर न मुड़ जाए। अराजकता का माहौल न पैदा हो...इस पर निगाह रखनी होगी।''

मनाली में इंदिरा और नेहरूजी निकोलस रोरिक की पेंटिंग्स देखने गए। वे कांग्रेस कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों से मिले। इंदिरा पहाड़ी औरतों से भी मिलने गई।

अपने पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार फिरोज और इंदिरा मई के अंत में कश्मीर गए। वहां वे शेख अब्दुल्ला के मेहमान बने। कश्मीर में वे दोनों हजरतबल की मजार पर गए और पहलगांव, सोनमर्ग, ग्लेशियर घूमे। वे लद्दाख के दुर्गम रास्तों पर चले और डल झील के शिकारे में भी समय बिताया। वहां से नेहरूजी को उन्होंने एक पत्र के साथ कुछ फूल भेजे। उन्होंने लिखा, ''फूलों से भरी इन वादियों, मीठी सुगंधित ताजी हवाओं...बहते हुए चश्मों की तुलना में स्वीट्जरलैंड में

कुछ भी नहीं है।"

रेडियो और अखबार के बगैर इंदिरा और फिरोज ने कश्मीर में दो महीने बिताए। कश्मीर से लौटकर इंदिरा और फिरोज बंबई चले गए और कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में भाग लिया।

8 अगस्त, सन् 1942, गोवालिया टैंक बंबई।

कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना आजाद, जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी, आचार्य नरेन्द्र देव, प्रफुल्ल चंद्र घोष, गोविंद बल्लभ पंत सहित कांग्रेस के तमाम वरिष्ठ नेता और फिरोज गांधी और इंदिरा मौजूद थे।

बैठक में दूसरे विश्व युद्ध की स्थिति का और अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय घटनाओं का जायजा लिया गया। भारत की आजादी के प्रति अंग्रेज सरकार के रवैये और भारतीय जनता के आक्रोश का मूल्यांकन करने के बाद जवाहरलाल नेहरू ने प्रस्तुत किया, "अब हमें सिर्फ आजादी चाहिए...आजादी... आजादी के अलावा कुछ नहीं...जब मैं कह रहा हूं कि अंग्रेजों भारत छोड़ो! तो इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि यहां से फौज को वापस बुला लो। हमें सत्ता के साथ संप्रभुता भी चाहिए..." सभास्थल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजने लगा।

उत्साही कार्यकर्ता बीच में उठ खड़े होकर नारा लगाने लगे, 'अंग्रेजों भारत छोड़ो...।' सारा हॉल नारे को दोहराने लगा।

अध्यक्ष मौलाना आजाद ने प्रस्ताव पारित होने की घोषणा करने के साथ गांधीजी से दो शब्द कहने का अनुरोध किया, "मैं बापू से निवेदन करता हूं कि वे हमें अपने कुछ अमूल्य शब्द कहें।"

बापू ने माइक ठीक किया।

"यहां से मैं पूरे देश को एक छोटा-सा मंत्र दे रहा हूं, जिसे सब दिल से जोड़ लें और हर सांस के साथ उसे याद करें...यह मंत्र है... 'करो या मरो'...Do or Die...भारत या तो अब स्वतंत्र हो अथवा

आजादी हासिल करने की कोशिश में हम अपनी जान दे देंगे, अब हम इस चली आ रही गुलामी को ढोते जिंदा रहने से इनकार करते हैं।''

तालियों की गड़गड़ाहट के साथ महात्मा गांधी की जय के नारे गुंजने लगे।

उसी रात को एक बैठक में कार्यसमिति के सदस्यों का विचार-विमर्श हुआ। रात के बारह बजे तक विचार-विमर्श के बाद सब सोने चले गए।

9 अगस्त 1942!

सकीना मेंशन / कृष्णा हथीसिंह के फ्लैट में सब लोग सोए पड़े थे। तभी अचानक पुलिस आ धमकी, ''नेहरू और हथीसिंह कहां हैं?'' एक कार्यकर्ता को जगाते हुए पूछा।

''वहां...वहां...'' उसने संकेत से बताया और फिर पुलिस पंडित नेहरू और राजा हथीसिंह को गिरफ्तार करके ले जाने लगी। इसी बीच सभी जाग गए थे। नेहरू जी ने संकेत से इंदिरा को अपने पास बुलाया और एक कागज देते हुए उससे कहा, ''बेटा, यह मेरे बैंक से लेन-देन करने का अधिकार पत्र है।''

इंदिरा ने उसे ले लिया और नेहरू जी को पुलिस गाड़ी की ओर लेकर बढ़ी। पुलिस की जिस गाड़ी में नेहरूजी और राजा हथीसिंह थे। उसके पीछे-पीछे एक दूसरी कार में इंदिरा-फिरोज और कृष्णा विक्टोरिया टर्मिनल्स पहुंचे। पुलिस ने कार वहीं रोक दी।

10 अगस्त के अखबार महात्मा गांधी, आसफ अली, आचार्य नरेन्द्र देव, कृपलानी, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, पी.सी. घोष, शंकर राव देव, जी.बी.पंत, कस्तूरबा गांधी, सरोजनी नायडू...जवाहरलाल नेहरू सहित कार्य समिति के सभी सदस्यों की गिरफ्तारी की खबर से रंगे पड़े थे।

इंदिरा ने जल्दी से इलाहाबाद जाने का कार्यक्रम बनाया। तभी

एक ओर खबर पर नजर पड़ी कि इलाहाबाद में सरूप और नैन को भी गिरफ्तार कर लिया गया है और स्वराज भवन पर फौज तैनात कर दी गई। आनंद भवन में हथियारबंद पुलिस डेरा डाले हुए है। पुलिस लाल बहादुर शास्त्री और फिरोज की तलाश में है। फिरोज और शास्त्री जी अडंरग्राउंड हो गए। सावधानी के साथ शास्त्री जी ने इंदिरा से भेंट की, "कैसी हो बेटी!"

"जिसके पिता जेल में हो और पति पुलिस से छिपता फिर रहा हो, वह कैसी हो सकती है!"

"मैं तुम्हारी भावना समझता हूं बेटी, परंतु..."

"परंतु क्या?"

"तुम्हें चुपचाप काम करते रहना चाहिए।"

"मगर करूं क्या?"

"कार्यकर्ताओं के घर जाकर उन्हें सरकार विरोधी पर्चे, साहित्य तथा खर्च का पैसा देने का काम करो और पार्टी साहित्य व प्रचार सामग्री संयुक्त प्रांत के विभिन्न जिलों के कार्यकर्ताओं के साथ दिल्ली भी भेजने की व्यवस्था करो।"

"ऐसा ही होगा शास्त्री जी।"

इंदिरा ने यह सब कार्य बड़ी कुशलता से किया और इस दौरान उनका संपर्क अरूणा आसफ अली से भी बना रहा।

उनकी गुप्त गतिविधियों पर पुलिस की नजर रहती थी। खुफिया पुलिस के कुछ अफसर भारत छोड़ो आंदोलन का अंदर से समर्थन करते थे। एक दिन उनको सी.आई.डी. के एक मित्र और आंदोलन समर्थक से सूचना मिली, "मैडम, सावधान रहिए।"

"क्यों?"

"आपको शीघ्र गिरफ्तार किया जाने वाला है।"

उसी रात गुपचुप तरीके से फिरोज ने भी इंदिरा से भेंट की, "कैसी हो इंदू!"

"जैसे तुम हो!"

"बहुत खूब, और कुछ खबर?"

"ऐसे संकेत मिले हैं कि मुझे भी गिरफ्तार किया जाने वाला है।"

"यह तो होगा ही...परंतु तुम्हें आनंद भवन नहीं लौटना चाहिए ...खामोशी से गिरफ्तार होने का कोई अर्थ नहीं, कुछ करके गिरफ्तार होना चाहिए, जिससे कुछ दोहरा लाभ तो हो।"

दूसरे दिन दोपहर बाद इलाहाबाद घंटाघर चौक पर लोगों की भारी भीड़ जमा थी। आसपास पुलिस भी लगी थी। एक दुकान के छज्जे पर बड़ी-बड़ी मूछों में फिरोज लोगों के बीच चुपचाप खड़े थे। सबको इंदिरा के आने की प्रतीक्षा थी। तभी लोगों के बीच से निकलकर इंदिरा आई और अभी वह कुछ आगे ही बढ़ पाई थी कि बंदूक ताने पुलिस वालों ने उनको घेर लिया। इंदिरा ने नारे लगाने शुरू कर दिए, 'अंग्रेजों भारत छोड़ो!'

विशाल जनसमूह उनको दोहराने लगा। सिपाही संगीन तानकर इंदिरा की ओर बढ़े, उसकी संगीन इंदिरा को छूने लगी थी, फिरोज भी उत्तेजित होकर छज्जे से कूदकर सामने आ गया और संगीन को हटाने लगा। दरोगा ने उन्हें पहचान लिया। सभा में मौजूद जनसमूह इंदिरा को गिरफ्तार होने से रोकने के लिए धक्का-मुक्की करने लगा, लेकिन अंततः इंदिरा, फिरोज और कुछ अन्य कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करके पुलिस की गाड़ी में लाद दिया गया।

गाड़ी में इंदिरा ने पुलिस वालों को डांट लगाई, "क्या तुम्हें ऐसा सलूक करना चाहिए?"

"कैसा?"

"जो मेरे साथ किया है। कांग्रेसियों और खासतौर पर महिला कार्यकर्ताओं के साथ...यह मुल्क आपका भी है। अपने ही भाइयों-बहनों के साथ आप क्या कर रहे हैं? कभी सोचा है...मुल्क के प्रति क्या आपका कोई फर्ज नहीं है?"

दरोगा ने अपना साफा उतारकर इंदिरा के पैरों में रखकर कहा, "हम क्या करते...नौकरी का सवाल था।"

"क्या तुम ये नौकरी नहीं छोड़ सकते?"

"नौकरी छोड़ दी तो बाल-बच्चे भूखो मर जाएंगे मैडम!"

नैनी जेल में इंदिरा ने अपना समय एक कैदी महिला की बच्ची को पढ़ाते हुए और खुद पढ़ते हुए बिताया। वहां उन्होंने बालजाक, रूसो, जे.एस.मिल और थामस डे क्वेंसी के कन्फेंश ऑफ ए इंग्लिश ओपिनियन ईटर, के साथ-साथ अन्य अनेक पुरानी पुस्तकें पढ़ीं। उसने बर्नाड शां और स्क्लियर तथा चीनी उपन्यासकार लिन यूं वांग को भी पढ़ा।

सात महीने तक इंदिरा को पत्र लिखने या प्राप्त करने की इजाजत नहीं मिली। यह अनुमति उनको 25 मार्च 1943 को मिली और उन्होंने जेल से अपना पहला पत्र नेहरूजी को लिखा। इंदिरा और नेहरूजी के पत्रों पर सरकार की कड़ी नजर रहती थी और कभी-कभी तो पेज काले कर दिये जाते थे। खासतौर पर यदि उनमें जेल के हालात पर या उनके निजी जीवन से परे की चर्चा होती। जेल में उनकी सेहत बिगड़ती गई, जिसकी खबर जेल के बाहर तक पहुंच चुकी थी। लखनऊ के आदेश पर उनका चैकअप कराया गया, परंतु उनके इलाज की कोई व्यवस्था नहीं की गई। हालांकि फिरोज भी उसी जेल में थे, पर उन्हें इंदिरा से नहीं मिलने दिया जाता था।

एक दिन जिस बैरक में इंदिरा बंद थीं, उसमें सांप दिखाई पड़ा। कैदियों में हड़कंप मच गया, मगर इंदिरा ने सांप उठाकर दीवार से बाहर फेंकते हुए कहा, "जब एक सांप से इतना डरते हो, तो अंग्रेजों को कैसे भगाओगे?"

जेल से रिहा होने के बाद इंदिरा 21 मई को फिरोज से मिलने फैजाबाद जेल गई, जहां उन्हें तनहाई में रखा जा रहा था और वह बेहद कमजोर हो गए थे। जेल से निकलते समय वह रो पड़ी।

इलाहाबाद आकर वह बीमार पड़ गई। उनको बुखार, खांसी और

सीने में दर्द था। चार दिन अस्पताल में रहने के बाद वह आनंद भवन लौटी। पर उनको बुखार बना हुआ था। इसी बीच उनको और नान पंडित को अल्मोड़ा के पास एक अनाम-सी बस्ती में ज़ाने का और नए आदेश तक वहीं रुकने का हुक्म मिला।

"वहां क्यों जाना है?" इंदिरा ने पूछा।

"यह सरकारी आदेश है।" अधिकारी ने उन्हें बताया।

"मैं वहां जाना जरूर पसंद करती, जो यहां से कहीं अधिक ठंडा है, पर मैं सरकार का हुक्म नहीं बजा सकती, इसलिए मैं वहां नहीं जाऊंगी।"

"यदि वहां नहीं जाओगी, तो हमें तुम्हें पुनः गिरफ्तार करने का आदेश है।"

"अंग्रेजी हुक्म मानने से बेहतर मैं गिरफ्तार होना ही पसंद करती हूं।"

इंदिरा के वहां से जाने से इंकार करने पर दोनों की गिरफ्तारी के पुनः आदेश हो गए। नान पंडित को दोबारा जेल भेज दिया गया, परंतु इंदिरा की सेहत की जांच के बाद उनको गिरफ्तार नहीं किया गया।

आनंद भवन में इंदिरा का चैकअप करने पर उनकी मित्र डॉक्टर वत्सला सामंत ने बताया, "मुबारक हो मैडम!"

"किस बात की?"

"आप मां जो बनने वाली हैं!"

"मैं और मां..." उसके चेहरे पर ख़ुशी छलकी, परंतु फिर उदास सी बोली, "पर क्या मेरा स्वास्थ्य मां का बोझ उठाने के योग्य है?"

"आपको बंबई जाकर डॉ. पुरंदरे को दिखाना चाहिए।"

इंदिरा मुंबई चली गई, परंतु डॉ. पुरंदरे ने सुरक्षित प्रसव की गारंटी नहीं ली, तब शिरोड़कर को दिखाया गया। आठवें माह में परीक्षण करने के बाद डॉ. शिरोड़कर ने आश्वासन दिया कि प्रसव सुरक्षित होगा।

फिरोज अगस्त के मध्य में बंबई पहुंचे। 20 अगस्त 1944 को रात

को तीन बजे इंदिरा को प्रसव पीड़ा हुई। उनको पास के ही बैल-व्यू नर्सिंग होम ले जाया गया, डॉ. शिरोडकर को बुला लिया गया। सुबह आठ बजकर दस मिनट पर इंदिरा ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसके सिर पर अतिसुंदर काले बाल थे और बच्चे का वजन साढ़े छह पौंड था। मां और बेटा दोनों स्वस्थ थे।

इलाहाबाद लौटकर इंदिरा और फिरोज आनंद भवन में ही रुके। जब बच्चा दो महीने का हो गया, तो इंदिरा ने उसका नाम रखा – राजीव रत्न।

उसने फिरोज को बताया, "जानते हो मैंने यह नाम क्यों चुना है?"

"क्यों?"

"मैंने पापू को बताया है कि इसका नाम मैंने राजीव रत्न क्यों रखा है?... असल में इस नाम से जेल की अंधेरी दुनिया में उनको राहत मिलेगी...मेरी मां का नाम कमल था यानी कमल और राजीव का मतलब भी कमल होता है और रत्न मायने जवाहर...इसलिए उन दोनों की प्रतिमूर्ति होगा राजीव।"

इसी बीच इंदिरा को खबर मिली कि नेहरूजी और गोविंद बल्लभ पंत को अहमदाबाद जेल से बरेली ले जाया जा रहा है। रात को वे इलाहाबाद नैनी जेल में रखे जाएंगे।

रात को इंदिरा और फिरोज नन्हें से राजीव को लेकर नैनी जेल के फाटक पर पहुंचे और पंडित नेहरू जब पुलिस जीप से उतरकर जेल के फाटक की ओर बढ़ रहे थे, तब इंदिरा ने लैंपपोस्ट की रोशनी में राजीव को ऊपर उठाए आवाज़ दी, "पापू! राजीव!"

नेहरूजी ने कुछ सैकिंड को राजीव को वहीं से देखा और जेल के अंदर चले गए।

राजनीतिक वातावरण गरमा रहा था। वेवल नए वायसराय बनकर

आए थे। उन्होंने अंतरिम सरकार की योजना तैयार की थी। वह गांधी और जिन्ना सहित दूसरे दलों के नेताओं की मीटिंग बुलाने जा रहे थे। मुस्लिम लीग दो राष्ट्र के सिद्धांत पर अड़ी थी। हिन्दू महासभाई लीग इन दावों को मानती नहीं थी। स्थिति पेचीदा थी। इंडिया सैक्रेट्री एमरी पहले ही गांधी की मांगों को हाउस ऑफ कामंस में मंजूर करा चुके थे। लेबर पार्टी पहले ही ब्रिटेन के चुनाव में कह चुकी थी कि यदि सत्ता में आती है, तो उनकी पार्टी भारत के राजनीतिक गतिरोध को दूर कर देगी।

केबिनेट मिशन भारत आने वाला था...

आनंद भवन में कांग्रेसी नेताओं के बीच इन्हीं प्रश्नों के इर्द-गिर्द बातें चलती रहती थी।

इस बीच इंदिरा अपने दस ग्यारह महीने के राजीव को लेकर कश्मीर चली गई, वहां वह बी. के. नेहरू के यहां ठहरीं। उनको वहीं खबर मिली कि ब्रिटिश केबिनेट मिशन भारत पहुंच गया है और उनसे बातचीत करने के लिए मौलाना आजाद और नेहरू जी रिहा किए जा रहे हैं। राजीव को रामेश्वरी नेहरू के पास छोड़कर इंदिरा इलाहाबाद के लिए रवाना हो गई।

जून के तीसरे सप्ताह के अंत में नेहरू जी रिहा होकर इलाहाबाद पहुंचे। वहां उनका भारी स्वागत हुआ, इंदिरा उनकी अगवानी को आनंद भवन में थी, "कैसे हैं पापू!"

"अच्छा हूं! आप और राजीव कैसे हैं?"

"जैसे आप वैसे ही हम भी हैं।" दोनों के बीच फिर राजनीति को लेकर काफी बातें हुई।

कुछ दिन इलाहाबाद रहने के बाद नेहरूजी के साथ इंदिरा फिर कश्मीर चली गई। बहुत अरसे के बाद पिता और पुत्री एक साथ अकेले थे। राजीव की पहली वर्षगांठ बी.के. नेहरू के घर पर मनाई गई और औपचारिक तौर पर नामकरण संस्कार हुआ। राजीव के लिए नेहरूजी ने जेल में अपने हाथ से काते गए सूत से बने कपड़े की एक

छोटी-सी कमीज ली। इस छोटे से आयोजन में शेख अब्दुल्ला भी मौजूद थे। राजीव को रामेश्वरी के साथ छोड़कर इंदिरा और जवाहरलाल दस दिन के लिए कश्मीर के पहाड़ों पर ट्रैकिंग के लिए निकल पड़े।

इलाहाबाद लौटकर जवाहरलाल, लालबहादुर शास्त्री, बी.एन.पांडे तथा फिरोज और इंदिरा के साथ विचार-विमर्श करके 'नेशनल हेराल्ड अखबार को दुबारा शुरू करने की योजना बनाई गई। फिरोज को पत्रकारिता से सक्रिय रूप से जुड़ने को कहा गया।

"पत्रकारिता देश में जागरुकता लाने का सबसे बड़ा अस्त्र-शस्त्र है।" नेहरूजी ने कहा।

"और अपनी बातों को जनता तक पहुंचाने का भी।" फिरोज ने उसमें जोड़ा।

"तो फिर कमर कस लो।"

"मैंने तो कमर कस ही रखी है पापू।"

और इस प्रकार सितंबर 1946 में अंतरिम सरकार का गठन होने के बाद नेशनल हेराल्ड फिर शुरू हो गया। फिरोज को 600 रुपया प्रतिमाह पर उसका प्रबंध निदेशक नियुक्त किया गया। इंदिरा, फिरोज और छोटा-सा राजीव लखनऊ चले गए। वहां हजरतगंज क्षेत्र में उन्होंने एक बंगला किराए पर ले लिया। दोनों ने मिलकर उसे सजाया। एक माहिर शौकिया बढ़ई के तौर पर फिरोज ने अति सुंदर फर्नीचर बनाया और इंदिरा ने अपनी सुरुचि से उसको सजाया। बंगले के बाहर 1857 की आजादी की प्रथम लड़ाई के जमाने की कब्रों के आसपास की हरियाली और फलों के पौधों से बंगले के रंग-रूप को बदल दिया गया।

नेहरूजी अंतरिम सरकार के प्रधानमंत्री बने, उसी के साथ कलकत्ते में दंगे भड़क उठे...सैकड़ों लोग मारे गए...गांधीजी पाकिस्तान बनाने की मांग मानने को तैयार नहीं थे।

प्रधानमंत्री बनने के कुछ समय बाद इंदिरा को अपने साथ रहने को दिल्ली बुला लिया गया।

कुछ दिनों बाद इंदिरा के एक और बेटा हुआ। बच्चा स्वस्थ था, पर इंदिरा की जान पर बन आई। अंग्रेज डॉक्टर ने उसको बड़ी मुश्किल से बचाया।

14 अगस्त 1947 नेहरूजी, इंदिरा, फिरोज और पद्‌मा नायडू प्रधानमंत्री निवास में खाना खा रहे थे। लाहौर से फोन पर सूचना आई कि वहां मुस्लिम बलवाइयों ने मार-काट शुरू कर दी है। उन्होंने इंदिरा से कहा, ‘‘हमारे सबसे कठिन दिन अब शुरू हुए हैं।’’ नेहरूजी बुरी तरह से परेशान और दुखी हो गए, लेकिन स्वाधीनता समारोह के सारे कार्यक्रम तयशुदा प्रोग्राम के अनुसार चले।

आधी रात होने वाली थी। संसद के केंद्रीय कक्ष में भारी भीड़ थी राजनीतिक नेताओं, विशिष्ट अतिथितियों तथा प्रेस वालों के साथ जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा, फिरोज तथा परिवार के अन्य सदस्य मौजूद थे। बाहर से पटाखों, आतिशबाजी और बैंड बाजों की आवाजें आ रही थी। जैसे ही 12 बजे, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने खड़े होकर बोलना शुरू किया, ‘‘कितने ही साल पहले हमने नियति से मुलाकात करने का वायदा किया था, अब उस वादे को पूरा करने का वक्त आ गया है ...लेकिन अभी यह पूरी तरह से संपूर्ण नहीं है...

‘‘आधी रात के वक्त इस अंधेरे में जब सारी दुनिया सोई पड़ी है, भारत जागकर आजादी की रोशनी में एक नई जिंदगी की शुरुआत करेगा। इतिहास में एक बहुत मुश्किल लम्हा आता है। जब हम अपने बीते हुए कल से निकलकर ‘आज’ में दाखिल होते हैं...एक युग का अंत हो जाता है...और अर्से से दबी हुई राष्ट्र की आत्मा प्रकट होने लगती है...इसलिए यह बहुत मुनासिब ही है कि इसी लम्हे में हम भारत और इसमें रह रही जनता की और पूरी इंसानियत की खिदमत करने का अहद लें। प्रतिज्ञा करें...।’’

भाषण की समाप्ति पर पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट और

जय-जयकार में डूब गया। सब खड़े हो गए और राष्ट्रगान की धुन बजने लगी।

15 अगस्त 1947 को सुबह साढ़े आठ बजे राष्ट्रपति भवन के दरबार में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद तथा अन्य नेतागण और इंदिरा उपस्थित थे।

बिगुल बजा और भारत के पहले गवर्नर जनरल और लेडी माउंटबेटन के आने की घोषणा हुई। माउंटबेटन की पोशाक पर सुनहरी और रूपहला काम हुआ था। जिन कुर्सियों पर वे बैठे थे, उनके ऊपर लाल और हरी मखमल का चंदोला लगा था। पैरों के नीचे कीमती कालीन बिछा था।

माउंटबेटन ने उठकर शपथ ली, ''आज से मैं आजाद भारत का वैधानिक गवर्नर जनरल हूं...आपसे अनुरोध है कि आप मुझे अपने में से ही एक व्यक्ति मानें जो भारत के समग्र विकास में आपकी ही तरह शामिल है...''

इसके पश्चात संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने स्वतंत्रता प्राप्ति की घोषणा करते हुए कहा, ''भारत पर अंग्रजों का अधिपत्य समाप्त हो गया है। अब ब्रिटेन के साथ हमारे संबंध बराबरी के हैं। आपसी सद्भाव और अपने-अपने हित का ख्याल अब हम स्वतंत्र रूप में रखेंगे।''

इक्कीस तोपों की सलामी के साथ राष्ट्रपति भवन पर तिरंगा फहराया गया!

इंडिया गेट पर सुबह के समय शहीद स्मारक पर नेहरूजी ने तिरंगा फहराया। वहां विशाल जन-समुदाय के बीच राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना आजाद और इंदिरा सहित अन्य नेता उपस्थित थे। झंडा फहराने के बाद नेहरूजी ने भाषण दिया,

"सुख और दुख दोनों में भारत ने अपनी खोज बंद नहीं की और अपने महान आदर्शों को नहीं छोड़ा...अब हमारी बदकिस्मती का दौर खत्म हुआ...अब भारत ने अपने आपको पुनः खोज लिया है।

"आज हम जो उत्सव मना रहे हैं, वो केवल एक कदम है...। यह हमको इससे बड़ी कामयाबी और उन उपलब्धियों की ओर ले जाएगा जो राह देख रही हैं...

"वक्त की निगाह हम पर है कि क्या हम इतने बुद्धिमान और बहादुर हैं कि इस मौके को हाथ में लिए हुए हम भविष्य की चुनौतियों को स्वीकार करेंगे और आगे बढ़ेंगे..."

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच थोड़ी देर इंतजार करने के बाद उन्होंने फिर शुरू किया, "भविष्य आसान नहीं और यह वक्त आराम का नहीं...यह लगातार मेहनत करते रहने का है। तब ही हम उन वादों को पूरा कर सकेंगे, जो हमने किए हैं और आज करने वाले हैं।"

उसी दिन प्रधानमंत्री आवास पर दिनभर टेलीफोन की घंटियां बजती रहीं, शाम को नेहरूजी के सचिव ने उनको बताया, "सर! लाहौर में जबरदस्त मारकाट हो रही है...उधर कलकत्ते में भी दंगे शुरू हो गए हैं।"

नेहरूजी ने फौरन सरदार पटेल और मौलाना आजाद से बात की, "बहुत खून बहाकर हमने आजादी ली है, अब हमें अपनों के बहते खून को रोकना होगा।"

इधर बाहर लॉन में फिरोज दस-पंद्रह मुस्लिमों से बात कर रहे थे कि एक कर्मचारी ने आकर खबर दी, "साब! लखनऊ से इंदिरा मैम का फोन है।"

"क्या संदेश है?"

"वे दिल्ली आना चाहती हैं।"

फिरोज ने जाकर फोन सुना और अपनी बात कही, "इंदू! यहां हालात बहुत खतरनाक हैं, हमारे पास खाने के लिए भी सामान नहीं है...तुम बच्चों को नहीं ला सकती...।"

"अगर वहां हालात खराब हैं," इंदिरा ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया, "तब तो यहां अकेले बैठे रहने के बजाय मुझे वहां होना ही चाहिए। रही खाने-पीने की बात तो मैं अपने साथ यहां से आलू ले आती हूं, आलुओं पर जिंदा रहा जा सकता है..."

"जैसी तुम्हारी मर्जी!" कहकर फिरोज ने फोन रख दिया।

इंदिरा ट्रेन से रवाना हुई। दिल्ली के बिल्कुल पास शाहदरा रेलवे स्टेशन पर सुबह-सुबह दंगाइयों की भीड़ एक दाढ़ी वाले व्यक्ति का पीछा कर रही थी। इंदिरा ने उस अधेड़ का हाथ पकड़कर उसे अपने डिब्बे में खींच लिया और प्लेटफार्म पर कूदकर दंगाइयों को चुनौती दी, "तुम मेरे होते हुए इसे मार नहीं सकते...।"

इस बीच गाड़ी चल दी...इंदिरा अपने डिब्बे में चढ़ गई।

प्रधानमंत्री निवास पर सब लोग इंदिरा के साथ आए उस अधेड़ मुस्लिम को देख रहे थे। भीतर आकर फिरोज ने उनसे उसके बारे में पूछा, "यह सब क्या है इंदू?"

"कुछ लोग इसे मारना चाहते थे," इंदिरा ने सारा वाकया बयान किया, "मैंने इसे बचा लिया...दूसरा थोड़ी दूरी पर था उसे बचा नहीं पाई...उसे उन्होंने लाठी में लगी गुप्ती से गोद दिया...अब इसे इसके घर पहुंचाना है..."

तभी नेहरू जी भी आ गए, "इंदिरा, तुम रिफ्यूजी कैंप जाकर वहां के हालात देखो और राहत कार्य में मदद करो, कुछ हाथ बटाओ।"

"जी पापू।"

पद्मजा उनको देखती रह गई...

पुरानी दिल्ली का इलाका था। शाम का समय था। नेहरूजी के निजी सचिव जॉन मथाई की पत्नी के साथ इंदिरा कार में वापस लौट रही थी। अचानक उनकी निगाह एक भागते हुए आदमी पर पड़ी,

जिसके पीछे आठ-दस लोगों की भीड़ और दंगाई गुप्तियां लिए भाग रहे थे। इस व्यक्ति के सिर से खून बह रहा था। इंदिरा ने अपने मुस्लिम ड्राइवर से गाड़ी रोकने को कहा, "नसीम! गाड़ी रोको!"

"नहीं मैम! गाड़ी नहीं रुकेगी," मुस्लिम ड्राइवर ने घबराई आवाज में कहा, "वे मुझे भी मार देंगे।"

"यदि तुमने गाड़ी नहीं रोकी, तो मैं चलती गाड़ी से कूद जाऊंगी।"

इंदिरा की चलती गाड़ी से कूद पड़ने की धमकी से ड्राइवर ने गाड़ी धीमी कर दी। इंदिरा नंगे पांव उतरकर उस घबराए भागते हुए मुस्लिम के आगे खड़ी हो गई, "डरो मत!"

एक दंगाई ने गुस्से में कहा, "ये क्या कर रही हो?"

इंदिरा ने दृढ़तापूर्वक कहा, "...मैं इस आदमी की जान बचा रही हूं...अब मुझे मारने के बाद ही तुम इसे मार सकते हो..."

दंगाई ने व्यंग्य और कड़वाहट से कहा, "क्या आप ये सोचती हैं कि हम आपको नहीं मार सकते?"

"...हां। मुझे कोई भी मार सकता है, पर तुम लोग नहीं...तुम बुजदिल हो...तुममें हिम्मत नहीं कि मुझे मार सको..." कहते हुए वह घायल मुस्लिम से, जिसने डर के मारे उसकी साड़ी पकड़ रखी थी, कहा, "मैं इन्हें रोके हूं...तुम गाड़ी में जाकर बैठो" इसी बीच फिरोज गाड़ी से उतरकर तेजी से आया और उसे अपने साथ ले जाकर गाड़ी की अगली सीट पर ड्राइवर के पास बिठा दिया। जल्दी से इंदिरा आई, पिछली सीट पर बैठी और ड्राइवर से कहा, "नसीम! गाड़ी सीधे अस्पताल ले चलो...इसको काफी चोट आई है।"

29 जनवरी 1948 को इंदिरा, राजीव और पद्मा नायडू के साथ शाम को गांधीजी के निवास स्थल बिड़ला भवन उनसे मिलने गई।

गांधीजी ने इंदिरा से कहा, "तुमने शाहदरा रेलवे स्टेशन पर एक आदमी की जान बचाई थी, पर तुमने हमें यह बात नहीं बताई।"

"इसमें बताने की क्या बात थी बापू!"

"क्यों, क्या हम बहादुरी के किस्से जानने के अधिकारी नहीं।"

इंदिरा मुस्करा दी और कहा, "मैं क्या आपको रानी झांसी लगती हूं।"

"और नहीं तो क्या," फिर पूछा, "और अब क्या कर रही हो?"

"आजकल मैं रिफ्यूजी कैंपों में जाकर राहत काम करती हूं।"

"तुमको खासतौर से मुस्लिम इलाकों में जाना चाहिए और हालात का जायजा लेना चाहिए।"

इंदिरा को दिल्ली के बारे में कुछ पता नहीं था। वह नहीं जानती थी कि मुस्लिम इलाके कौन-कौन से और कहां हैं? वे किसके साथ जाएं। पर हालात के साथ-साथ गांधीजी की बात को टाला भी नहीं जा सकता था, तबीयत खराब होने के बावजूद मुस्लिम इलाकों के बारे में जानकारी मौलाना आजाद से मिली।

"स्थिति बहुत खराब हो गई है।"

"क्या हुआ?"

"सरकारी तंत्र का भी सांप्रदायीकरण हो गया है।"

आपूर्ति मंत्री रफी अहमद किदवई भी आते दिखाई पड़े, उन्हें सुनाते हुए कहा, "मुस्लिम को राशन भी नहीं मिल पा रहा है, इलाकों में गंदगी के ढेर लगे हैं।"

मौलाना आजाद से मिली जानकारी के आधार पर इंदिरा टाउन हॉल के पास पहुंची। जहां उनकी भेंट दिल्ली की एक कार्यकर्ता सुभद्रा जोशी से हुई। वह कपड़ा मिल मजदूरों के बीच काम करती थी। इंदिरा के कहने पर वह उनके साथ मुस्लिम बस्तियों में जाने को राजी हो गई।

इंदिरा और सुभद्रा मुस्लिम इलाकों में राशन व राहत का अन्य सामान बांट रही थी कि एक मुस्लिम युवक ने उनको खबर दी, "मैम! टाउन हॉल पर दंगाई लूटमार कर रहे हैं।"

"अब नहीं करेंगे।" और फिर वे वहीं पहुंची।

इंदिरा और सुभद्रा ने जामा मस्जिद इलाके में उर्दू बाजार में सफाई

कराई।

"ये सब काम करके हम अपना वक्त दंगाइयों और नफरत फैलाने वालों का पता लगाने और गिरफ्तार कराने में लगा रहे हैं," सुभद्रा ने कहा, "परंतु, इन्हीं बुरे लोगों के बीच सारा वक्त जाया हो रहा है, इससे बेहतर क्या यह नहीं होगा कि हम उन लोगों को तलाशें, जिन्होंने इन हालात के बावजूद अपनी इंसानियत बचाकर रखी है..."

"कहती तो ठीक हो।" इंदिरा उनसे सहमत हुई।

दोनों ने आगे बढ़कर मस्जिद की सीढ़ियों से नीचे उतर रहे एक बड़े मियां से पूछा, "तुम कुछ ऐसे हिन्दुओं को भी तो जानते होंगे जिन्होंने इस माहौल में भी अपनी इंसानियत को बरकरार रखा है..."

इस पर बड़े मियां ने संजीदगी से कहा, "ऐसे लोग फिलहाल यहां तो हैं नहीं...लेकिन ऐसे लोग न होते तो ये दुनिया ही गारत कर दी जाती।"

"हमें कुछ मुस्लिम दंगाईयों के बीच ले चलो।"

"यह बहुत खतरनाक होगा...बीबी! अब तो हालात इस हद तक पहुंच चुके हैं कि हिन्दू...हिन्दू दिखाई देता है और मुसलमान सिर्फ मुसलमान।"

परंतु दोनों ने हिम्मत नहीं छोड़ी, "यह सब कब तक चलेगा!"

"जब तक यह देश जहन्नुम नहीं बन जाता।"

"क्या जहन्नुम इस मारकाट के वातावरण से भी बुरा होता है?"

इंदिरा और सुभद्रा की इन गतिविधियों के विरुद्ध प्रतिक्रिया के तौर पर धमकी भरी चिट्ठियां आने लगी थी।

ऐसा ही एक पत्र नेहरूजी ने इंदिरा को दिया, "लो पढ़ो।"

"क्या लिखा है, आपने तो पढ़ ही लिया है पापू।"

"लिखा है यदि तुमने किसी मुस्लिम की सहायता की तो जिंदा दफन कर दिया जाएगा।"

"यह कोई नई धमकी नहीं।"

"पर इंदिरा की सुरक्षा बहुत जरूरी है," रफी अहमद किदवई ने इंदिरा के लिए सुरक्षा की जरूरत पर जोर दिया, "देश में भूचाल आया हुआ है, पता नहीं यह अभी कब तक रहेगा और कौनसी प्रलय को पीछे छोड़कर जाएगा।"

एक दिन इंदिरा और सुभद्रा के साथ कुछ सुरक्षाकर्मी टाउनहॉल पर बल्लीमारान के सामने खड़े था। शाम का वक्त था। अंधेरा घिरने वाला था, चारों ओर देखते हुए इंदिरा को चिंता हो रही थी, "ड्राइवर अभी तक गाड़ी नहीं लाया है...काफी देर हो गई।"

"हो सकता है उसने अगले चौराहे पर आने की बात सुनी हो।" सुभद्रा ने कहा।

"तो अगले चौराहे पर देखें गाड़ी।"

"मैं यहां अकेला नहीं रुक सकता।" गार्ड ने कहा।

"आपके हाथ में बंदूक नहीं है क्या?"

"इससे क्या होता है?" बंदूक के बावजूद वह बेहद सहमा और डरा हुआ था।

"लो मैं ही चली जाती हूं।" सुभद्रा हंसती हुई अकेली चली गई।

विभाजन के बाद का दौर बड़ा पीड़ादायी साबित हुआ! जनवरी 1948 की ठंडी सहमी हुई दिल्ली। दोनों समुदायों के बीच फैले अविश्वास और एक दूसरे की दहशत को हटाने और आपसी भाईचारा पैदा करने की कोशिश में लगी थी इंदिरा और उनकी साथी सुभद्रा। लोगों से अलग-अलग मिलतीं समझाने-बुझाने, उनके दिल से डर निकालने की कोशिशें करतीं, उनकी कोशिशों के परिणाम आने लगे। एक सुबह शांतिसभा में हिन्दू-मुसलमान दोनों समुदायों के प्रतिष्ठित लोगों के साथ आम लोगों का भारी जमावड़ा था, लगभग 5000 लोग थे। एक दूसरे से अब भी डरते, घबराते और संदेह से भरे लोग आपस

में मिलते थे। वातावरण कुछ हल्का हुआ था। इंदिरा गांधी ने उनको संबोधित करते हुए कहा, "देखिए! आप लोग यहां आकर आपस में मिले, कुछ अप्रिय नहीं हुआ। अपने अंदर डर को फटकने मत दीजिए। आप सब एक दूसरे को लंबे अरसे से जानते हैं...दोस्त हैं...आइए हम सब अच्छे लोगों को और ज्यादा इकट्ठा करें..." लोग हैरानी से एक-दूसरे का और इंदिरा का मुंह ताकने लगे...सभी लोग जहां से भी चाय बगैरह मिली, साथ-साथ पी और बतियाते रहे।

शाम के समय की सर्दी थी। बिड़ला भवन के प्रांगण में महात्मा गांधी की प्रार्थना सभा हो रही थी। साढ़े तीन साल का राजीव उनकी चादर से खेल रहा था।

इंदिरा पर नजर गाड़कर गांधीजी ने पूछा, "जो काम तुम्हें सौंपा गया था, कहां तक पहुंचा?"

"बापू! मैं उसी काम में लगी हूं...पर रिपोर्ट करने के बजाय मुझे काम पूरा करना ज्यादा इंपोर्टेंट लगा", उसने गांधीजी को तफसील से बताया, "मुसलिम इलाकों में जा-जाकर मैंने जानते हो क्या-क्या काम किए?"

"क्या-क्या काम किए?"

"लोगों के मन से डर भगाया, सौहार्द्र कायम किया और वहां साफ-सफाई की।"

"सुनकर अच्छा लगा।" गांधीजी ने कहा और इंदिरा को प्यार से देखा। उनकी नजर इंदिरा के हाथ के फूलों पर गई, "ये फूल?" उन्होंने पूछा।

"यह फूल मैं तुम्हारे लिए ही लाई हूं..."

"ठीक है, लेकिन बिना मतलब फूल नहीं तोड़ना चाहिए।"

"ठीक है बापू! आगे से ध्यान रखूंगी," इंदिरा ने आगे बताया, "बापू! मैं दो दिन पहले किला देखने गई थी।"

"तुम्हारे पापू ने आज आश्रम की लड़कियों को फिल्म देखने बुलाया है...।" फिर आगे कहा, "अपने पापू से कहना लड़कियों को फिल्म देखने की इजाजत न देकर मैंने ठीक ही किया...।"

फिर गांधीजी राजीव को खिलाने लगे।

यॉर्क रोड़ के बंगले के ड्राइंग रूम में इंदिरा, कृष्णा हथीसिंह और पद्मजा बैठीं शाम को चाय पी रही थीं। राजीव उनके आसपास खेल रहा था। उसी बीच कार्यालय में बिमला सिंधी भागती हुई आई और घबराई आवाज में बताया, "दीदी! गांधीजी को किसी ने गोली मार दी ...हत्यारे ने गांधीजी की जान ले ली।"

इंदिरा के हाथ से प्याला छूट गया। वह अवाक् पथराई आंखों से बिमला को देखने लगी। पद्मजा इंदिरा को देखती रह गई। कृष्णा हथीसिंह ने उठकर राजीव को गोद से चिपका लिया।

गांधीजी की हत्या की खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। हजारों लोग आनन-फानन में बिड़ला हाउस के अहाते में जमा हो गए। आने वालों का तांता लगा था। बहुत से लोग हतप्रभ थे। सदमे में बहुत से लोग रो-बिलख रहे थे। जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा, पद्मजा नायडू और कृष्णा हथीसिंह भीड़ को चीरते हुए गांधीजी के पार्थिव शरीर के पास पहुंचे। नेहरूजी की आंखें नम थी। वह गांधीजी के पार्थिव शरीर के सिराहने बैठ गए। सब स्तब्ध थे। राम धुन हो रही थी। उसी दिन-रात को यॉर्क रोड़ के ड्राइंग रूम में इंदिरा गांधी, पद्मजा नायडू और कृष्णा हथीसिंह ने रेडियो पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का राष्ट्र के नाम संबोधन सुना।

नेहरूजी की आवाज ग़मज़दा थी, "हमारी ज़िंदगी से रोशनी गायब हो गई है। चारों ओर अंधेरा बरपा होकर रह गया है...मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि मैं क्या कहूं...जिन्होंने हमें हर मोड़ पर रास्ता दिखाया, जिन्हें हम प्यार और सम्मान से बापू कहते थे...हमारे

राष्ट्रपिता अब नहीं रहे...''

सभी की आंखें भरी हुई थी। गले रुंधे थे। इसी बीच कमरे में फिरोज दाखिल हुआ, इंदिरा फफक-फफककर रो पड़ी। उन्होंने उनके कंधे पर हाथ रखकर सुबकते हुए कहा, ''नहीं बापू नहीं मर सकते ...वह अब भी जिंदा हैं...'' फिरोज ने उन्हें ढाढ़स बंधाया, ''इंदिरा! ऐसे लोगों की मौत जिदंगी का अंत नहीं होती...वो अब हम सबके अंदर जिंदा हैं।''

गांधीजी की हत्या ने सुरक्षा अधिकारियों को गंभीरता से चिंतित कर दिया था। सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टि से तय किया गया कि प्रधानमंत्री निवास को यॉर्क रोड़ से तीन मूर्ति भवन में स्थानांतरित कर दिया जाए।

सरकारी अधिकारियों के साथ नेहरूजी इंदिरा, पद्मजा के साथ तीन मूर्ति भवन देखने गए। हॉल में अंग्रेज जनरलों के बड़े-बड़े पोट्रेटों को देखकर इंदिरा ने उनको हटवाने को कहा, ''इन्हें हटा देना ही ठीक रहेगा।''

''क्यों?''

''...पापू इन्हें देखकर मुझे लगा कि जैसे हमारे हर काम पर ये अब निगाह रखेंगे...और मीनमेख निकालेंगे।''

तीन मूर्ति भवन में शाम को राजनयिकों और विशिष्ट लोगों का स्वागत किया गया, सारी व्यवस्था इंदिरा देख रही थी।

राजीव अब थोड़ा बड़ा और शरारती हो चला था, वह बात-बात पर चीखता, शोर मचाता और उछल-कूद करता था। एक दिन इंदिरा अपनी दोस्त पुपुल जयकर से बात कर रही थी। राजीव ने शोर मचाना शुरू कर दिया। इंदिरा को परेशानी हुई। उसने पुपुल से कहा, ''राजीव ये सब ऊल-जलूल हरकतें इलाहाबाद छूटने और संजय के जन्म व उसकी बीमारी के बाद से करने लगा है।''

''बच्चा इस नए माहौल में धीरे-धीरे एडजस्ट हो जाएगा।'' अपने बच्चों के पालन-पोषण के मामले में इंदिरा काफी गंभीर थी। पुपुल

जयकर ने उन्हें बच्चों पर खलील जिब्रान की एक रचना का अंश सुनाया :

"आप उन्हें प्यार दे सकते हैं
पर सोचने का ढंग नहीं
आप उनके शरीर की देखभाल कर सकते हैं
उनकी आत्मा की नहीं
उनकी आत्मा आने वाले कल में बसती है
जहां आप नहीं जा सकते
स्वप्न में भी नहीं..."

वे बातें कर रही थी कि इंदिरा को राजीव की रुलाई सुनाई पड़ी। इंदिरा ने उसे पास बुलाकर पुचकार कर रोने का कारण पूछा, "मेरा राजा बेटा क्यों रो रहा है?"

राजीव कुछ नहीं बता पाया।

इंदिरा ने उसे दुलारते हुए कहा, "अच्छा कोई बात नहीं...मैं तुम्हें एक तरकीब बताती हूं...देखो! बाहर बगीचे में एक सुन्दर-सा फव्वारा है न...। जब भी तुम्हें रोना आए...या तुम चीखना चाहो...दौड़कर वहीं चले जाया करो और रो-चीख लिया करो।" राजीव कूदकर दौड़ा और खेलने में लग गया।

इंदिरा और पुपुल दोनों के होठों पर मुस्कराहट आ गई।

स्वाधीन भारत के पहले आम चुनावों की घोषणा हो गई थी। इंदिरा ने इलाहाबाद पहुंचकर चुनाव अभियान की कमान संभाल ली। आनंद भवन पर पोस्टरों और बैनरों से सजी जीपें खड़ी थी। जीपों के एक ओर बना था, कांग्रेस का चुनाव चिन्ह, 'दो बैलों की जोड़ी' और दूसरी ओर जवाहरलाल नेहरू की तस्वीर। गाड़ी के आगे कांग्रेस का तिरंगा था, जिसके बीच में चरखा बना था। कार्यकर्ताओं के साथ वे फूलपुर और रायबरेली के गांव-गांव में जाकर प्रचार करती थीं। हर

जगह उनका भारी स्वागत होता था। रास्ते में वह जीप से उतरकर लोगों से मिलतीं और बुजुर्गों का आशीष लेती थी।

फूलपुर से चुनाव लड़ रहे थे नेहरू और रायबरेली से फिरोज गांधी।

राजीव और संजय के साथ इंदिरा लखनऊ के बंगले में पहुंची। फिरोज गांधी का चुनाव कार्यालय भी वहीं बना हुआ था। बाहर कांग्रेस के बैनर और पोस्टर लगे थे। टैंट में फिरोज कार्यकर्ताओं के साथ बात कर रहे थे। इंदिरा को आता देखकर वह उठे और उनको साथ लेकर अंदर कमरे में चले गए। जहां बच्चे खेलने लगे।

'फूलपुर निर्वाचन क्षेत्र के बारे में क्या समाचार हैं?'' फिरोज गांधी ने उनसे पूछा।

''लोग तो वैसे पापू के साथ हैं, पर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के मैदान में उतरने से चुनाव दिलचस्प हो गया है,'' फिर आगे पूछा, ''आपके क्षेत्र में किसका जोर...''

''छवि स्पष्ट नहीं, क्षेत्र बहुत बड़ा है। मैं हर जगह जाकर लोगों से मिल भी नहीं सकता।''

''लेकिन जाना तो होगा ही।''

''कुछ तुम मदद करो तो, बात बन सकती है।''

''हां...हां...क्यों नहीं, मैं कुछ इलाकों में जाऊंगी, लेकिन पहले मुझे पापू के साथ हिमाचल जाना है। वहां से लौटकर मैं फूलपुर और रायबरेली दोनों निर्वाचन क्षेत्रों को देखूंगी।''

पठानकोट रेलवे स्टेशन पर पहुंचते ही लोगों की भीड़ और हिमाचल के दूर-दराज इलाकों से आए कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने जय-जयकार और फूलों की मालाओं से नेहरूजी और इंदिरा का भारी स्वागत किया। उनके साथ राजकुमारी अमृतकौर भी थी।

वहां चंबा से आए एक कांग्रेसी कार्यकर्ता ने शिकायत की,

''नेहरूजी! आपका कार्यक्रम चंबा में नहीं है...ऐसे तो हम चुनाव हार जाएंगे,'' उसने लगभग रोनी सूरत से कहा, ''मेरा कोई यकीन नहीं करेगा...सब लोग चंबा में आपका ही इंतजार कर रहे हैं।''

राजकुमारी अमृतकौर की ओर देखते हुए नेहरूजी ने भरोसा दिलाया, ''मैं आपके यहां आऊंगा, चिंता न करें।''

पर उस कार्यकर्ता को यकीन नहीं हुआ...

जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा और राजकुमारी अमृतकौर हिमाचल में दौरे पर थे। इंदिरा ने कार ड्राइवर से पूछा, ''चंबा कितनी दूर है।''

''यही कोई 150 मील दूर।''

''चंबा के लोगों को मायूस करना ठीक नहीं,'' इंदिरा ने नेहरूजी से कहा, ''मैं आपकी ओर से चंबा जाना चाहती हूं।''

''ठीक है, जैसा तुम चाहो, लेकिन कल हवाई जहाज से चले जाना।''

''जी।''

इंदिरा अगले दिन चंबा पहुंची। स्थानीय कार्यकर्ताओं ने उनके ठहरने का प्रबंध सरकिट हाऊस में किया, पर इंदिरा उस सरकारी आवास में ठहरने को राजी नहीं हुई, ''मैं सरकारी आवास में नहीं ठहर सकती।''

''मैडम, क्यों?'' एक कार्यकर्ता ने पूछा।

''मैं किसी कार्यकर्ता के घर में रुकना चाहती हूं, क्योंकि मैं सरकारी कर्मचारी नहीं आपकी अपनी बहन हूं और अपने किसी भाई के घर में ही ठहरकर रक्षा बंधन का पर्व मनाना चाहती हूं।''

''यह तो हमारे लिए सौभाग्य की बात है,'' दूसरे कार्यकर्ता ने कहा, ''बहन मेरे घर चलें।''

इंदिरा उनके साथ चल दी।

चंबा में उस कार्यकर्ता के साधारण से घर के सामने कांग्रेस के

बैनर-पोस्टर और झंडे लिए लोगों की भीड़ जमा थी। वे लोग आपस में बात करते हुए हैरानी प्रकट कर रहे थे, ''पंडित जी की बेटी कैसे ठहर सकती है ऐसी जगह में...मुझे तो शक होता है कि ये पंडित जी की बेटी है भी या नहीं...''

एक अन्य कार्यकर्ता ने प्रतिवाद किया, ''नहीं भैया! ये जरूर पंडितजी की बेटी है...बड़े आदमी हैं...बड़ी सोच है...ये लोग हम जनता के बीच के लोग हैं, नहीं तो सरकिट हाऊस की आराम छोड़कर ये एक छोटे से घर में ठहरने नहीं आतीं...पूरे घर ने आजादी की लड़ाई लड़ी है...जेलें काटी हैं।''

तभी एक छोटी-सी बच्ची की उंगली पकड़े इंदिरा तैयार होकर घर से बाहर आई।

दोपहर के समय पहाड़ी ढलान पर बने एक मंच पर उम्मीदवार, कुछ कार्यकर्ता तथा सामने विशाल जन समुदाय बैठा था। इंदिरा के आते ही लोगों ने 'पंडित नेहरू जिंदाबाद', 'महात्मा गांधी अमर रहे', 'जीतेगा भई जीतेगा, कांग्रेस वाला जीतेगा' आदि के नारों से उनका स्वागत किया। इंदिरा ने उनको संबोधित किया, ''मेरे भाइयों और बहनो! हमने गुलामी का चोला उतार दिया और आजादी की खुली हवा में आज हम सांस ले रहे हैं। नई सरकार हर भारतीय की सरकार होगी, हर किसी की उसमें हिस्सेदारी होगी, इसलिए अपने मताधिकार का प्रयोग कांग्रेस को जिताने के लिए करें, इसी में देश और आपकी भलाई है।''

हिमाचल के अपने चुनाव अभियान के बाद इंदिरा ने रायबरेली और फूलपुर निर्वाचन क्षेत्र में अनेक छोटी-बड़ी सभाओं को संबोधित किया। हर जगह उनका जोरदार स्वागत हुआ।

आम चुनावों में कांग्रेस को भारी सफलता मिली। इंदिरा भी अब अपना ज्यादातर समय तीनमूर्ति भवन में जवाहरलाल नेहरू और अपने बच्चों राजीव और संजय के साथ व्यतीत करने लगी।

ऐसे ही एक दिन शाम को चाय पीते-पीते इंदिरा ने फिरोज से बच्चों की पढ़ाई के बारे में चर्चा की, "अब इन्हें स्कूल में डाल देना अच्छा रहेगा।"

"हां, विचार तो मेरा भी है, लेकिन दाखिला कहां दिलाएं?"

"इनको दून स्कूल में भर्ती कराना ठीक रहेगा।"

"मगर कराएगा कौन?"

"कौन कराएगा, मतलब!"

"तुम्हें प्राइममिनिस्टर ऐस्टेट और दीगर कामों से ही फुरसत नहीं," फिरोज ने कुछ व्यंग्य के साथ इंदिरा की व्यस्तता की बात की, "कि देहरादून चलकर इनका दाखिला कराए।"

"गणतंत्र दिवस के बाद एक-दो दिन के लिए हम दोनों देहरादून चलते हैं।"

"ठीक है भई।" फिरोज ने सहमति जताई, तभी इंदिरा की नजर कुछ कागजों पर पड़ी, जिस पर फिरोज के कुछ नोट्स भारतीय बीमा निगम को लेकर थे, "यह सब क्या है?"

"जीवन बीमा निगम के कच्चे चिट्ठे।"

"मतलब!"

"रामकृष्ण डालमिया ने जीवन बीमा को सट्टा बाजार बना रखा है।"

"तो तुम क्या चाहते हो?"

"इन्हें पार्लियामेंट में पेश करूंगा...।"

"इस बारे में पापू से बात कर लेनी चाहिए।"

"पापू प्राइममिनिस्टर हैं...हर चीज की तो उनसे डिस्कस नहीं की जा सकती...डिस्कशन के लिए तो पार्लियामेंट है..."

दोनों चुप हो चाय पीने लगे।

तीन मूर्ति भवन के लॉन में एक बड़े लंबे से शामियाने में कुर्सियों पर जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा, फिरोज, ऊषा भगत, पुपुल जयकर आदि

बैठे थे। उनके सामने गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने आए आदिवासी नर्तकों की एक टोली अपनी परंपरागत वेशभूषा में नृत्य प्रस्तुत कर रही थी।

नृत्य समाप्त होने और दूसरा प्रारंभ होने के बीच कार्यक्रम पर टिप्पणी करते हुए पुपुल जयकर ने कहा, ''इन नृत्यों को शामिल होने से गणतंत्र दिवस समारोह की रौनक और अधिक बढ़ गई है...।''

''इन ट्राइबल डांसिज...इनके कोस्ट्यूम्स से...इनके हाव-भाव और भंगिमाओं से हिन्दुस्तान को समझने में बड़ी मदद मिलेगी।'' इंदिरा ने गंभीरता के साथ कहा, ''यही असली भारत है।''

इंदिरा की बात पर पंडित नेहरू और फिरोज उनकी ओर देखने लगे।

दूसरा नृत्य शुरू हुआ। इस बार यह मणिपुरी था।

तीन मूर्ति भवन में एक सरकारी रात्रिभोज का आयोजन था। सांसदों के साथ भारी संख्या में विदेशी राजनयिक मौजूद थे। इंदिरा गांधी पंडित जवाहरलाल नेहरू की बगल में प्रमुखता से बैठी थी। विदेशी राजनयिकों के साथ उनका परिचय प्रथम महिला के रूप में कराया गया। सांसदों के साथ बैठे फिरोज गांधी उनको तल्ख नजरों से देख रहे थे।

दूसरे दिन सुबह-सुबह चाय पीते समय फिरोज उखड़े मूड में थे। उन्होंने कहा, ''इंदू! हम अब किसी सरकारी डिनर में शामिल नहीं होंगे...इट्स इनसल्टिंग!''

''मैं भी यह सब नहीं चाहतीं, पर प्रोटोकोल को बनाए रखना पड़ता है...,'' इंदिरा ने संयत स्वर में उत्तर दिया, ''मैं तो चाहती हूं...मेरा घर सिर्फ मेरा हो...पर क्या करूं?''

फिरोज संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने मुंह बिगाड़ते हुए कड़वाहट से कहा, ''इंदिरा मुझे इस माहौल में घुटन होती है...मैं सुबह ही अपने

बंगले पर निकल जाया करूंगा...यहां मुझसे मिलने वाले भी नहीं आ पाते। सिक्यूरिटी का अलग झमेला है...।''

हताश इंदिरा फिरोज को देखती रह गई।

इंदिरा की तबीयत ठीक नहीं थी। फ्लू के कारण तीव्र बुखार में थी। उन्हें देखने चिकित्सक उनके कमरे में आए, तो चिकित्सक ने कहा, ''यू.एन. ढेबर और लालबहादुर शास्त्री आपसे मिलना चाहते हैं?''

''क्यों, परंतु मैं बुखार की हालत में मिलना नहीं चाहती...।''

''वे इसलिए मिलना चाहते हैं, क्योंकि तुमने कांग्रेस संगठन की कार्यप्रणाली की आलोचना की है।''

दोपहर को इंदिरा अपने कमरे में थी। तभी एक नौकर ने उनको ढेबर और शास्त्री जी के आने की इत्तला दी। पास वाले कमरे में बिठाने की हिदायत देकर इंदिरा उनसे मिलने पहुंची। औपचारिक तौर पर तबीयत का हालचाल पूछने के बाद यू.एन. ढेबर ने उनसे कहा, ''आपको संगठन से बाहर रहकर कांग्रेस की आलोचना नहीं करनी चाहिए, अगर आप आलोचना करना चाहती हैं...तो बेहतर होगा, पहले आप देखें कि संगठन कैसे काम करता है।''

इंदिरा ने सहजता से कहा, ''जो मुझे लगा मैंने कह दिया... आपको बुरा लगा है तो...।''

बात को संभालते हुए शास्त्री जी बीच में बोल पड़े, ''बुरा लगने की कोई बात नहीं...आलोचना का हक़ सबको है...वही हक़ देने ढेबर जी खुद आये हैं...''

''ढेबर जी आप कांग्रेस अध्यक्ष हैं। हमारे सीनियर हैं...अगर मैं ठीक होती, तो आपसे मिलने खुद चली आती...।''

इस पर ढेबर ने कहा, ''हम तो यह कहने आए हैं कि मैं आपको कार्यसमिति में नोमीनेट कर रहा हूं...आप महिला और यूथ विंग

देखें।''

इंदिरा ने विन्रमतापूर्वक धीरे-धीरे कहा, ''देखिए! मुझ पर प्रधानमंत्री निवास की भारी जिम्मेदारी है...फिर बच्चे हैं...गांधीजी जब जिंदा थे। पंत जी ने यू.पी. पॉलिटिक्स में आने को कहा था...तब मैंने मना कर दिया, तो वह बहुत नाराज हुए थे और गांधीजी से मेरी शिकायत कर दी थी।''

यह कहते हुए इंदिरा अतीत में पहुंच गई।

बिड़ला हाऊस में अपने निवास में गांधीजी अधलेटे बैठे थे। इंदिरा आई। उन्हें देखकर गांधीजी ने उनको हाथ के इशारे से पास बुलाया। जब वह बैठ गई, तो गांधीजी ने कहा, ''पंडित गोविंद बल्लभ पंत तुमसे नाराज हैं...तुम्हारी शिकायत कर रहे थे...पंतजी इतने नाराज क्यों हो गए तुमसे...क्या तुम उनसे बेरुखी से पेश आई थीं...?''

''बापू! मैं किसी से बदतहजीबी नहीं करती, दरअसल वह चाहते थे कि यू.पी. पॉलिटिक्स में सक्रिय हो जाऊं...वह मुझे विधान सभा में लाना चाहते थे। विधायक बनने से मैंने मना कर दिया था बस...''

गांधीजी ने हंसते हुए कहा, ''समझा! समझ गया...तब ही वो मुझसे कह रहे थे...इस लड़की को देखिए! खुद को मुझसे ज्यादा चतुर समझती है।''

इंदिरा ने उसी सहजता से गांधीजी को बताया, ''मैंने पंत जी से यही कहा था कि अभी मैं इसके लायक नहीं हूं। तो वो कहने लगे कि मैंने सारे हालात और क्षमताओं का जायजा लेकर ही कहा है। बापू! मुझे इस तरह के कामों से डर लगता है...मैं इन कामों के लायक नहीं हूं बापू! फिर मेरे बच्चे भी अभी छोटे हैं...।''

गांधीजी ने हंसकर कहा, ''इस बात को ज्यादा गंभीरता से मत लेना। जानती हो, पंतजी ने यह बात नाराज होकर नहीं, परेशान होकर कही थी।''

तीन मूर्ति भवन में फिरोज गांधी, शांता गांधी और इंदिरा दोपहर के खाने के लिए मेज के इर्द-गिर्द बातें कर रहे थे।

इंदिरा ने यों ही शांता से उनके लंदन से वापस लौटने का कार्यक्रम पूछा और जब वह अचानक उठकर अंदर गई, फिरोज उठकर खिड़की पर आए और शांता को बुलाकर बाहर दिखाते हुए कहा, ''शांता! यह पूरा इलाका चाणक्यपुरी बनने जा रहा है...ए टाउन ऑफ इंट्रीग्स (षड्यंत्रों का नगर)।''

अंदर आते ही इंदिरा ने यह बात सुन ली थी।

खाना लग गया था। सबने चुपचाप खाया। इस बीच शांता ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा, ''तुम लोग यहां कैसे रहते हो? यह तो अच्छा खासा म्यूजियम है, घर तो नहीं लगता।''

गंभीर होते हुए उनकी व्यंग्यात्मकता में ही इंदिरा ने उत्तर दिया, ''हर कोई आपकी तरह भाग्यशाली नहीं, जो चाहा सो मिल गया।''

फिरोज दोनों को देखते रहे। इंदिरा नीची निगाह कर अपना खाना खाती रही।

चीन की सरकारी यात्रा के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ इंदिरा गांधी हवाई जहाज से भारत लौट रही थी। उसके साथ मथाई तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी थे।

इंदिरा बेहद उत्साहित थी चीन यात्रा से। उनको चीन के प्रधानमंत्री ने बहुत प्रभावित किया था, ''चाउ ए लाई...बेहद कल्चर्ड और विदेशी मामलों के जानकार हैं।''

''भारत और चीन के प्राचीन काल से चले आ रहे सांस्कृतिक संबंधों और बौद्ध धर्म के वहां पहुंचने के बाद हमारे साथ उनकी आत्मीयता बढ़ गई है।'' नेहरू ने इंदिरा को बताया।

इंदिरा चीनी राष्ट्रपति माओ त्से तुंग से भी अत्यधिक प्रभावित

थी, "उनके विचार मौलिक हैं...वह भारत आने के इच्छुक भी हैं, हमारे यहां उनका भारी स्वागत होगा...।"

बातचीत के बीच में मथाई आ टपके और नेहरू जी से कहा, "अगर सोवियत सरकार कुछ आर्थिक सहायता कर दे...तो मुल्क के लिए बड़ा अच्छा हो...।" फिर कुछ सोचते हुए, "न जाने सी.पी.आई. ने वहां के नेताओं को क्या बताया है?" कहकर वह इंदिरा की ओर देखने लगे।

पंडित जवाहरलाल नेहरू की पहली सरकारी सोवियत यात्रा के दौरान भी इंदिरा उनके साथ थी। दोपहर को भोजन से पहले क्रेमलिन में नेहरूजी और भारतीय प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्यों तथा सोवियत नेताओं और अधिकारियों की बातचीत चल रही थी। इंदिरा बाहर सिटिंग रूम में नेहरूजी का इंतजार कर रही थी। तभी अंदर से मथाई निकल कर आए। इंदिरा ने उत्सुकता से मीटिंग की प्रोग्रेस के बारे में पूछा, "सब ठीक तो है?"

"शायद... सी.पी.आई. ने कुछ गड़बड़ कर दी है...।"

इंदिरा चितिंत हो उठी। तभी सोवियत प्रधानमंत्री निकिता ख्रुश्चेव उधर आए और उन्हें देखकर बोले, "अरे आप यहां इंतजार कर रही हैं...बातचीत में गतिरोध है...और कुछ ज्यादा प्रगति नहीं हुई है।"

इस पर इंदिरा ने मुस्कराते हुए कहा, "देखिए...सोवियत सरकार को याद रखना चाहिए कि मेरे पिता की आवाज भारत की जनता की आवाज है...भारतीय कम्युनिस्ट भारत की जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं...।"

"चिंता न करें।" ख्रुश्चेव हंसकर अंदर वापस चले गए। इंदिरा फिर अकेली चिंतित बैठी रह गई। तभी मीटिंग खत्म हो गई। प्रतिनिधिमंडल बाहर आया तो वह प्रसन्न था। मथाई सबसे आगे था, उसने आकर इंदिरा से फुसफुसाकर कहा, "...हल निकल आया।"

तभी निकिता ख्रुश्चेव भी वहां आ गए और इंदिरा से हाथ मिलाकर कहा, "जानकारी के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद मिसेज गांधी।"

निकिता ख्रुश्चेव के निवास पर भारतीय प्रतिनिधिमंडल की चाय पार्टी चल रही थी। इंदिरा की सलाह के लिए ख्रुश्चेव ने उनका आभार प्रकट किया और एक मिंक कोट भेंट में दिया। इंदिरा ने उसको सहर्ष स्वीकारा।

सोवियत संघ से वह बहुत से नए विचार लेकर आई। अपनी मित्र पुपुल जयकर से बात करते हुए उसने बच्चों के लिए सोवियत संघ की तर्ज पर एक संस्था बनाने की बात चलाई, "बाल कल्याण की अध्यक्ष होने के नाते मैं ऐसा कर सकती हूं।"

"संस्था का क्या नाम होगा?"

"बाल भवन! और क्या?"

कनाट प्लेस के निकट एक मकान में 'बाल सहयोग' का काम शुरू हो गया था। वहां बच्चे अलग-अलग बढ़ईगीरी, सिलाई और बेंत का काम सीखते और करते थे। काम करते एक-एक बच्चा चौधरी ईश्वर सिंह का एक जब्तशुदा गीत गुनगुना रहा था। इंदिरा और पुपुल उसे सुनकर वहीं ठिठक कर खड़ी हो गई।

देखते ही मृग याद आती मृगलोचनी है,
फिर भूखे भारत के हम याद आते हैं
केकी के कलाप, कोकिला के गान में
विलाप विधवा सुन हम दुख पाते हैं।
अत्याचार पीड़ित किसान के रुदन में,
पपोद के विनोद हम भूल जाते हैं।
भोग सकते न सुख, भूल सकते न दुख,

यों ही दुविधा में पड़े जीवन बिताते हैं...

तीनमूर्ति भवन में नेहरू जी के कामकाजी कमरे में सुबह-सुबह पं. नेहरू इंदिरा और पद्मजा बैठे बात कर रहे थे।

इंदिरा ने बताया, ‘‘ढेबर साहब और शास्त्री जी ने मेरा नाम कार्यसमिति के चुनाव के लिए तय कर दिया है, पर मैं चुनाव लड़ने के पक्ष में नहीं हूं।’’

‘‘इस बारे में बात तो तुम्हें ढेबर और शास्त्रीजी से ही करनी चाहिए।’’

‘‘उन्होंने मुझसे पूछा नहीं,’’ और बात आगे बढ़ाते हुए उसने पूछा, ‘‘मलैया और निजलिंगप्पा में से वोट किसे देना चाहिए?’’

‘‘यह निर्णय तो तुम्हें अपनी मर्जी से करना चाहिए।’’

बात बदलने के लिए बीच में पद्मजा बोल पड़ी, ‘‘कमला नेहरू मेमोरियल में अब काफी पैसा है...अब क्या करना चाहिए?’’

इस पर नेहरूजी कहा, ‘‘इस बारे में इंदिरा और पद्मा को मेमोरियल के सभी सदस्यों की सलाह करके एक योजना तैयार करनी चाहिए और फिर विधिवत् प्रोजेक्ट शुरू करना चाहिए।’’

इंदिरा कांग्रेस कार्यसमिति का चुनाव भारी बहुमत से जीती। यू. एन. ढेबर के कमरे में ढेबर के साथ मलैया और लालबहादुर शास्त्री विचार-विमर्श कर रहे थे। इंदिरा के प्रवेश करते ही उन्हें बधाई दी, ‘‘बधाई हो, आपको केवल 4 सदस्यों ने वोट नहीं दिया है।’’

‘‘तो अब मुझे क्या करना है?’’

मलैया रास ने बताया, ‘‘ढेबर साहब ने आपको केंद्रीय चुनाव समिति में रख लिया है।’’

‘‘...आप लोग मुझे ज्यादा ही फंसाए दे रहे हैं...,’’ इंदिरा ने कहा, ‘‘मैं कैसे कर पाऊंगी ये सब...।’’

इस पर शास्त्री ने कहा, "आप मेरी मदद तो कर देंगी...न।"

सन् 1957।

दूसरे आम चुनाव की घोषणा हो गई थी। तीनमूर्ति भवन में लालबहादुर शास्त्री, इंदिरा और पद्मजा नायडू चुनाव प्रचार का कार्यक्रम तैयार कर रहे थे।

किसी एक कार्यक्रम को लेकर इंदिरा ने एतराज जताया, "उस दिन राजीव के आपरेशन के कारण मैं उस बैठक में शिरकत नहीं कर सकूंगी, जिसमें उ.प्र. के उम्मीदवारों की सूची तैयार होनी है।"

"लेकिन तुम्हें तो बैठक में शिरकत करनी ही होगी।" शास्त्रीजी ने कहा।

शास्त्रीजी के भारी आग्रह के बावजूद वह जाने को तैयार नहीं हुई, "नहीं यह कदाचित संभव नहीं, बेटे से बढ़कर मेरे लिए कुछ भी तो नहीं।"

"दरअसल यू. एन. ढेबर ने कहीं यह कह दिया है कि इंदिरा गांधी संसद का चुनाव लड़ने को तैयार हो गई हैं।"

"...नहीं मैं नहीं लडूंगी...इलेक्शन-विलेक्शन...।" इंदिरा ने साफ मना किया।

तभी इंदिरा गांधी की निगाह गलिहारे से बाहर गई। संयुक्त प्रांत के कुछ नेता वहीं आ रहे थे।

दूसरे आम चुनाव में इंदिरा गांधी फिर जोर-शोर से लग गई। आनंद भवन कांग्रेसी कार्यकर्ताओं से भरा रहता था।

वह नेहरू जी के निर्वाचन क्षेत्र फूलपुर में गांव-गांव जाकर प्रचार अभिनय में जुट गई।

आम चुनावों में कांग्रेस फिर विजय हुई, पर केरल का नेतृत्व चिंता का विषय बन गया था। वहीं ई. एम. एस. नम्बूदिरीपाद के नेतृत्व में

कम्यूनिस्टों को भारी जीत मिली और उन्होंने सरकार का गठन किया। दुनिया में पहली बार ऐसा हुआ कि कम्युनिस्टों ने जनतांत्रिक ढंग से निर्वाचन होकर सरकार बनाई थी।

तीनमूर्ति भवन में इसी को लेकर एक मीटिंग हुई, जिसमें पं. जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी के साथ-साथ यू. एन. ढेबर, लालबहादुर शास्त्री और गोविंदबल्लभ पंत उपस्थित थे।

नेहरूजी को छोड़कर सभी नेता केरल की कम्युनिष्ट सरकार के विरुद्ध थे। लालबहादुर शास्त्री, गोविंद बल्लभ पंत, ढेबर और इंदिरा सबके अपने-अपने तर्क थे। वे नेहरूजी की बात को समझना नहीं चाहते थे। यू.एन. ढेबर ने सुझाव दिया, ''इंदिरा केरल का दौरा करके सारे हालात पर रिपोर्ट दे, फिर तय किया जाए कि केरल में क्या करना है?''

''दौरे से क्या होगा?,'' नेहरू ने कहा, ''कम्यूनिस्टों ने लोकतांत्रिक तरीके से सरकार बनाई है, उसे बर्खास्त भी तो नहीं किया जा सकता।''

''परंतु यह ठीक नहीं है,'' शास्त्रीजी ने कहा, ''यह विश्व में शुरुआत है...''

बात केरल से घूमकर महाराष्ट्र और गुजरात पर आ गई, जिनके बारे में इंदिरा ने दौरा करके अपनी रिपोर्ट दे दी थी। इंदिरा ने कहा, ''मेरा मानना है कि यह मसला भाषा का है और भाषा के आधार पर बंटवारा गैर मुनासिब नहीं।''

''परंतु भाषा के आधार पर देश का बंटवारा उचित नहीं,'' नेहरू जी ने कहा, ''मैं राज्यों में देश के बंटवारे के पक्ष में नहीं हूं।''

''देश में छोटे-छोटे राज्य तो होने ही चाहिए,'' शास्त्रीजी ने पक्ष रखा, ''इसी से विकास होगा।''

''परंतु कितने राज्य बनाएंगे हम? चारो ओर हर कोई नए-नए राज्य बनाने की मांग कर रहे हैं। देश में साढ़े पांच सौ रियासतें थी, क्या साढ़े पांच सौ राज्य बनाएंगे हम?''

"साढ़े पांच सौ नहीं पचास तो बना ही सकते हैं।"

"नहीं, छोटे-छोटे राज्यों में देश को बांटना मुझे मंजूर नहीं।" नेहरू जी ने स्पष्ट कहा।

इस बीच यू.एन. ढेबर कांग्रेस अध्यक्ष पद छोड़ने का मन बना चुके थे। गोविंदबल्लभ पंत ने ढेबर के साथ मिलकर इंदिरा पर कांग्रेस अध्यक्ष पद स्वीकार करने को दबाव डाला।

रात को इस बात की सूचना इंदिरा ने जब नेहरू जी को दी तो उन्होंने कहा, "अपना फैसला तुमको खुद करना चाहिए।"

एक दिन लालबहादुर शास्त्री धीरेंद्र ब्रह्मचारी को इंदिरा से मिलाने तीनमूर्ति भवन लाए। वह योग की शिक्षा नेहरू जी को याद दिलाना चाहते थे :

"भारत की शिक्षा पद्धति में योग भी शामिल करना चाहिए।"

"योग तो भारत की संस्कृति का अंग है, शामिल करने की बात ही क्या यह तो दूर ही कहां हुआ है।" नेहरूजी ने कहा।

"हम चाहते हैं कि इसे पाठ्यक्रमों में स्थान मिले।" ब्रह्मचारी ने कहा।

"अवश्य मिलेगा, नैतिक शिक्षा के नाम से अलग पुस्तकें बनाई जा सकती हैं।"

"हां, ऐसा ही कुछ विचार मेरा था।" शास्त्रीजी ने कहा।

इंदिरा भी बैठी बातें सुन रही थी, उन्होंने बीच में दखल दिया, "पापू! मैं भी योग सीखना चाहती हूं।"

"हां...हां...क्यों नहीं।"

मथाई से कहकर दूसरे दिन सुबह से सूर्य निकलने से पहले से ही धीरेंद्र ब्रह्मचारी के तीनमूर्ति भवन में प्रवेश की व्यवस्था कर दी गई।

अध्यक्ष पद संभालने के मामले में इंदिरा अब भी अनिश्चय की स्थिति में थी। उसने गोविंद बल्लभ पंत को फोन पर अपनी असमर्थता

व्यक्त की, ‘‘मैं इतनी बड़ी जिम्मेदारी कैसे संभाल सकती हूं।’’

‘‘तुम्हारा पिता पूरा देश संभाल सकता है और तुम एक छोटी-सी संस्था की अध्यक्ष बनने से कतराती हो?’’

‘‘छोटी-सी संस्था,’’ इंदिरा ने गंभीरता से कहा, ‘‘कांग्रेस छोटी-सी संस्था नहीं है, जिसने देश को आजादी दिला दी, वह क्या आपको छोटी-सी संस्था लग रही है?’’

‘‘हां, यह तो मैं भी जानता हूं,’’ पंत जी बोले, ‘‘खबर प्रेस को दे दी गई है। उसका प्रतिवाद करने से तुम्हारी और कांग्रेस दोनों की जगहंसाई होगी।’’

धीरेंद्र ब्रह्मचारी अब नियमित रूप से तीनमूर्ति भवन आते और सीधे इंदिरा गांधी के कमरे में जाते थे, ‘‘कैसी हो इंदू!’’

‘‘मैं तो ठीक हूं, लेकिन...’’

‘‘लेकिन क्या?’’

‘‘संजय बहुत कमजोर हो गया है, उसकी चिंता सताए जा रही है।’’

‘‘इसमें चिंता की क्या बात है, योग में मनुष्य की हर कमजोरी का उपचार छिपा है।’’

‘‘सुना तो मैंने भी है, लेकिन इसका परिणाम अभी तक देखा नहीं।’’

‘‘परिणाम भी देख लेना, आज से संजय की सारी जिम्मेदारी मेरी। यदि उसे हिंद केसरी जैसा पहलवान न बना दिया तो मेरा नाम भी ब्रह्मचारी नहीं!’’

कांग्रेस के अधिवेशन में इंदिरा गांधी को कांग्रेस अध्यक्ष चुन लिया गया। उनका अनुमोदन एवं समर्थन क्रमशः लालबहादुर शास्त्री और के. कामराज ने किया था।

अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद इंदिरा गांधी ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया और प्रेस वालों के काफी तीखे सवालों का जवाब संतुलित ढंग से दिया, "मैं पूरी निष्ठा के साथ देश की सेवा करूंगी।"

"क्या आप नहीं समझती कि," एक पत्रकार ने प्रश्न किया, "इस महत्वपूर्ण पद के लिए अत्यंत वरिष्ठ व्यक्ति की नियुक्ति की जाती तो अच्छा रहता।"

"क्या आपको मुझपर विश्वास नहीं?"

"नहीं...नहीं...मेरे कहने का अर्थ यह नहीं था।"

"तो क्या था आपके कहने का अर्थ?" इंदिरा ने दृढ़ता से कहा, "सदियों की गुलामी के बाद भारत आजाद हुआ है। ऐसे में देश को आगे युवा नहीं बढ़ाएंगे तो और कौन बढ़ाएगा? बुजुर्गों के मार्गदर्शन और आशीर्वाद से युवा वर्ग असंभव को संभव कर दिखाएगा।"

पत्रकार महोदय की बोलती बंद हो गई।

नागपुर अधिवेशन के आर्थिक प्रस्ताव में सहकारी खेती की रूपरेखा बनाई गई। अधिकांश अखबारों ने सहकारी खेती के कांग्रेस प्रस्ताव की आलोचना की, इसको लेकर कांग्रेस का केंद्रीय नेतृत्व चिंतित था। इसी पर चर्चा के लिए एक बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता नेहरूजी ने की। बैठक का कोई परिणाम नहीं निकला, लेकिन बाद में जब चरणसिंह जैसे किसान नेताओं ने रुष्ट होकर अलग पार्टी बना ली, तो कांग्रेस ने सहकारी खेती का प्रस्ताव रद्द कर दिया, क्योंकि इससे पार्टी में ही एकराय नहीं बन पाई थी, उल्टे आपसी फूट ही बढ़ गई थी।

"पापू! मैं गांवों को करीब से देखना चाहती हूं।"

"क्या मतलब?" नेहरू ने इंदिरा से पूछा।

“किसान नेता चरणसिंह के कांग्रेस से अलग हो जाने के बाद मेरे अंदर भी किसानों के प्रति सहानुभूति जाग गई है।”

“तो फिर!”

“चरणसिंह ने ही तो सहकारिता का प्रबल विरोध करके हमें बताया है कि किसान भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।”

“हां... तो फिर?”

“कांग्रेस में नई जान डालने के लिए अर्थव्यवस्था की इस रीढ़ को मजबूत बनाना होगा। सहकारिता के शेषनाग से वे हमसे कट गए हैं, इसलिए उनके बीच जाकर उनमें विश्वास जगाना होगा कि किसानों की भूमि उनसे कोई नहीं छीन सकता।”

“वह तो ठीक है, लेकिन तुम करोगी क्या?”

“मैं गांवों में पद यात्रा करूंगी...बैलगाड़ियों में बैठूंगी...किसान पुत्रियों के साथ गन्ने चुखूंगी और बहुत कुछ...यह सब करने में बड़ा आनंद आएगा ना पापू...”

“आनंद भवन की आनंदिता...आनंद तो आएगा, लेकिन हमेशा कूलर की ठण्डी हवा में रहने वाली जेठ की दोपहरी में निकल सकेगी, कीमती सैंडल पहनने वाली क्या गांव वालों की तरह उनके साथ नंगे पैर चल सकेगी?”

“क्यों नहीं...क्या मैं भारत पुत्री नहीं?”

“तो ठीक है!”

तभी कमलापति त्रिपाठी आए तो नेहरू ने बात का रुख उनकी ओर मोड़ दिया, “त्रिपाठीजी, इंदिरा इलाहाबाद से पद यात्रा करने की योजना बना रही है।”

“यह तो बड़ी अच्छी बात है।”

“बात तो बड़ी अच्छी है,” नेहरूजी ने कहा, “लेकिन इस सबकी सारी जिम्मेदारी आपको उठानी होगी।”

“अर्थात...मैं कुछ समझा नहीं?”

“इंदिरा इलाहाबाद के आसपास के गांव राजा-पुरवा तथा अन्य

गांव में बैलगाड़ी से जाने की तैयारियां कर रही है। तुम और के. डी. मालवीय तथा अन्य स्थानीय नेताओं को इनकी यात्रा सफल करानी है और सारा प्रबंध आपको ही करना है।''

''जी हो जाएगा।''

''और ध्यान रहे, गांवों में किसानों के अलावा दलित और अल्पसंख्यक अन्य लोग भी रहते हैं। वहां ऐसी व्यवस्था कराना कि किसानों के साथ दलित मजदूरों और मुस्लिम कारीगरों के साथ भी इंदिरा की बैठकें हों।''

''आप चिंता न करें पंडित जी, सब ठीक हो जाएगा।''

इलाहाबाद से चलकर इंदिरा एक गांव से दूसरे गांव में जा रही थी। लोग उनका भारी स्वागत कर रहे थे। जिस गांव में जाती, वहां फूलों से लाद दी जाती और जयकारों से गगन गूंज उठता। अपनी यात्रा के दौरान एक सभा में उन्होंने कहा, ''मैंने बैलगाड़ी से यात्रा इसलिए की, ताकि असली भारत को देख सकूं। असली भारत तो मेरे इन गांवों में ही बसा हुआ है। मैं तो आनंद भवन जैसे महल में पली-बढ़ी, इसलिए जीवन में दुख-दर्द क्या होता है, इसका कभी पता भी नहीं चला। यहां गांवों में आपके बीच आकर पता चला कि गरीब लोगों को एक वक्त की रोटी भी नसीब नहीं। किसानों की फसल कभी टिड्डी दल चट कर जाता है, तो कभी नहरों में पानी न छोड़े जाने से वे सूख जाती हैं और कभी इंद्र देवता इतना मेहरबान हो जाता है कि बाढ़ के कारण गांव-के-गांव तबाह हो जाते हैं। मैं आप लोगों से वादा करती हूं कि गांवों की खुशहाली के लिए जो भी संभव होगा करूंगी।''

उनके साथ कमलापति त्रिपाठी, लालबहादुर शास्त्री तथा अन्य नेता और स्थानीय कार्यकर्ता थे।

अपने दौरे के दौरान इंदिरा बीमार पड़ गई। दिल्ली लौटने पर

उनको किडनी में स्टोन बताया गया।

"इंदिरा, तुम बंबई जाकर ऑपरेशन करा लो।" नेहरूजी ने इंदिरा को कहा।

"ठीक है, करा लूंगी।"

तीनमूर्ति भवन में यह बातें हो ही रही थी कि लालबहादुर शास्त्री तिब्बत की घटनाओं से चिंतित होकर आए, "चीन के हौंसले बहुत बढ़ गए हैं। तिब्बत पर उसने अधिकार कर लिया है और दलाई लामा जान बचाने के लिए भागे-भागे फिर रहे हैं। दलाई लामा और बौद्ध भिक्षुओं को शरण देने की बात..."

नेहरूजी पशोपेश में पड़ गए।

"दलाई लामा को शरण देकर हम चीन से संबंध बिगाड़ना नहीं चाहेंगे।"

"पापू!" इंदिरा ने अपना पक्ष रखा, "हम तो महात्मा बुद्ध के पथ पर चल रहे हैं ना! अशोक चक्र का अपनाया जाना क्या इसका प्रमाण नहीं है?"

"हां है तो..."

"दलाई लामा को शरण तो मिलनी ही चाहिए और तिब्बती शरणार्थियों के लिए एक सेंट्रल रिलीफ का गठन भी किया जाना चाहिए।"

"ठीक है, इस मसले पर बाद में विचार करेंगे, तुम ऑपरेशन के लिए मुंबई चली जाओ।"

इंदिरा गांधी के ऑपरेशन की बात सुनकर फिरोज दौड़े-दौड़े आए। दोनों में फिर सुलह हो गई। बंबई में आपरेशन के दौरान फिरोज लगातार मौजूद रहे।

दिल्ली लौटकर इंदिरा गांधी ने अपनी मित्र पुपुल जयकर को बताया, "मैंने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया है।"

"अच्छा किया, अब घर-गृहस्थी पर ध्यान दो और मतभेद भुलाकर प्रेम से रहो।"

इसी बीच, फिरोज ने बात करते हुए संजय से कहा, "मम्मी जैसे ही ठीक हो जाती हैं, एक सप्ताह को हम लोग कश्मीर चलते हैं।"

इंदिरा ने करवट बदलते हुए कहा, "मैं अब पापू और अपने परिवार के साथ रहूंगी और यह भी कि कांग्रेस में तरह-तरह के लोग हैं...सबके अलग-अलग विचार हैं।"

कश्मीर की सैर के दौरान इंदिरा और फिरोज को लंबे अर्से बाद एक-दूसरे के करीब आने और अपने-अपने को खोलने का अवसर मिला। श्रीनगर में कुछ दिन के लिए पूरा परिवार डलझील पर हाऊस बोट में ठहरा। बच्चे बाहर खेलने गए थे। इंदिरा और फिरोज अकेले सुस्ता रहे थे। इंदिरा ने कुछ सोचते हुए कहा, "मैं तुम्हारे साथ नहीं रह पाई, बच्चों की वजह से अलग भी नहीं रहना चाहतीं...।"

फिरोज भी खाई पाटने के मूड में थे, "मैंने महरौली में थोड़ी-सी जमीन खरीद ली है। वहीं अपना घर बनाएंगे, वहीं रहेंगे...ये सरकारी मकान घर नहीं बन पाते...ये तो ऑफिस ही रहते हैं।"

"हा! पापू भी अब दिन-ब-दिन कमजोर होते जा रहे हैं। कुछ दिन पहले प्रेस कांफ्रेंस में जाते-जाते गिर ही पड़े थे...मैंने थाम लिया ...अगर मैं न होती...।" फिर कुछ रुककर एक गहरी सांस लेकर कहा, "मैं सोचती थी मेरा घर होगा...मैं पापू के घर की होस्टेस कभी नहीं बनना चाहती थी...।"

नई दिल्ली में संसद और कनाट प्लेस के बीच स्थित गोल डाकखाने के पास एक विशाल भू-भाग पर विश्वयातन योग केन्द्र की स्थापना की गई।

धीरेंद्र ब्रह्मचारी की इस परियोजना के उद्घाटन के अवसर पर

भारत सरकार के सभी प्रमुख नेताओं—पं. जवाहरलाल नेहरू, मोरारजी देसाई, लालबहादुर शास्त्री आदि के साथ इंदिरा गांधी और पुपुल जयकर मौजूद थे। नेहरू जी ने विधिवत उद्घाटन किया।

कुछ समय बाद फिरोज गांधी को सीने में दर्द की शिकायत पर विलिंग्डन नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया। खबर मिलते ही इंदिरा भागकर वहां पहुंची, पर फिरोज होश में नहीं आए। इंदिरा की मित्र ऊषा भगत ने बताया, ''बेहोशी की हालात में फिरोज बस इतना कहते रहते हैं, 'व्हयेर इज इंदू...इंदिरा कहां है...''

दूसरे दिन तड़के फिरोज को होश आया। इंदिरा लगातार उनके पलंग के पास स्टूल पर बैठी रही। उन पर नजर पड़ते ही फिरोज टूटे-फूटे शब्दों में बड़बड़ाए, ''इंदिरा तुम रातभर जागती रही हो जाओ कुछ आराम कर लो...।''

इसी दिन साढ़े सात बजे सुबह फिरोज की सांस तेज होती गई। इंदिरा उनका हाथ पकड़े हुए थी। डॉ. खोसला भागे-भागे आए। तब तक फिरोज की सांसें थम चुकी थी।

पथराई आंखों से इंदिरा फिरोज के पार्थिव शरीर को टकटकी मारकर देखती रह गई। आंखों में आंसू झलकने लगे।

खबर मिलते ही जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री तथा अन्य नेता और प्रतिष्ठित लोग, फिरोज के मित्र व भारी भीड़ अस्पताल में जमा हो गई।

फिरोज के पार्थिव शरीर को तीनमूर्ति लाया गया। इंदिरा बेहद अकेली असहाय महसूस कर रही थी, ''पुपुल! अब मैं बिल्कुल अकेली रह गई हूं...मम्मी की मौत को मैंने फिरोज का साथ होने के सहारे सह लिया था...जब मम्मी हमारा साथ छोड़कर गई, उसके बाद हर परेशानी, हर दुख में फिरोज ही साथ आकर खड़े हो जाते थे। उन्हें चाहे कितनी ही दूर से...कहीं से आना पड़े...अब मुझे लग रहा है कि जैसे मेरे चारों ओर आंधी और तूफान है, जिसके बीच मैं अकेली रह गई हूं...एकदम तनहा।''

अंतिम संस्कार के लिए फिरोज के पार्थिव शरीर को तैयार करने के लिए अनेक लोग आगे आए। इंदिरा ने दृढ़ता से उन सबसे उसे अकेला छोड़ देने को कहा। वह फिरोज के शव के साथ कमरे में अकेली रह गई। थोड़ी देर बाद कमरा खुला। फिरोज का पार्थिव शरीर तिरंगे में लिपटा था, बराबर में इंदिरा खादी की साड़ी के पल्लू से आंखें पोंछती खड़ी थी।

तोप गाड़ी पर शव के साथ इंदिरा, राजीव, संजय और फिरोज की बहन तहमीना बैठी थी। गाड़ी के पीछे कारों का काफिला था।

यमुना के किनारे अंतिम संस्कार के अवसर पर इंदिरा, राजीव और संजय तथा नेहरू जी के साथ सभी गण्यमान्य नेता, व्यक्ति व परिवार के सदस्य उपस्थित थे।

अंतिम संस्कार की औपचारिकताएं राजीव ने पूरी की और मुखाग्नि दी।

हताश और उदास इंदिरा को नेहरूजी ने सांत्वना देते हुए कहा, ''अपने आपको संभालनो इंदिरा...।''

''कैसे संभालूं पापू...कैसे...'' और वह फूट-फूट का रोने लगी।

इंदिरा जल्दी ही सदमे से बाहर आ गई और मैक्सिको की अपनी यात्रा पर चली गई। वहां से लौटते हुए उन्होंने पेरिस में यूनेस्को की कार्यकारिणी की बैठक में भी भाग लिया। मैक्सिको में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम में उन्होंने पेंटर डोरोथी ब्रेट के स्टूडियो में जाकर उनकी कलाकृतियों को देखा, उनकी सराहना की और कलाकार को भारत आने का निमंत्रण दिया। वहां येल विश्वविद्यालय में आयोजित एक सभा को संबोधित किया।

पेरिस में यूनेस्को की कार्यकारिणी बैठक में भाग लेने जाते समय उनकी भेंट सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन से हुई। इंदिरा ने शिकायत की, ''मीटिंग में कोई काम की बात तो होती नहीं, बस फिजूल की बहसें

और डिनर...''

''आपको काफी काम करना चाहिए, अभी तो आपके पास काम कम है, आपको ज्यादा काम करना चाहिए...'' उनका सुझाव था।

जवाहरलाल नेहरू और लालबहादुर शास्त्री विचार-विमर्श कर रहे थे कि उत्तेजित इंदिरा ने आकर सूचना दी, ''जबलपुर में सांप्रदायिक दंगा भड़क उठा है,'' फिर आशंका व्यक्त की, ''दूसरे आम चुनाव होने वाले हैं, यह जनसंघियों की साजिश है, जो हिंदू वोट बटोरने को फिरकापरस्ती की आग सुलगा रहे हैं।''

''मुख्यमंत्री से बात करके वहां सेना तैनात कर दी जाएगी।''

''सेना से क्या होगा? मैं कल जबलपुर जाने का कार्यक्रम बना लेती हूं।''

''जैसी तुम्हारी मर्जी।''

दलाई लामा को भारत में शरण देने को लेकर चीन ने अपनी नाखुशी उत्तर-पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रों पर हमला करके प्रदर्शित की। भारत की फौजें बुरी तरह से हताहत होकर फंस गई थी। नेहरूजी को चीन की उस प्रतिक्रिया की आशंका पहले से थी।

पूरे प्रकरण पर शास्त्रीजी की प्रतिक्रिया बेहद कठोर थी, ''उस क्षेत्र में हमारी फौज तैयार नहीं थी। अक्साई चिन के भारतीय क्षेत्र में चीनियों ने 1959 से ही सड़क बनानी शुरू कर दी थी और हम तोपें-गोला बारूद बनाने की जगह प्रेशर कूकर और कॉफी परकोलेटर बना रहे थे।''

टी.टी. कृष्णमाचारी ने नेहरूजी की आलोचना की, ''नेहरू जी के रेडियो भाषण ने सेना और देश का मनोबल तोड़ दिया है...उत्तर-पूरब के सरहदी क्षेत्र में बड़ी बेचैनी है।''

''हां, हम हिन्दी-चीनी भाई-भाई का राग अलापते रहे और वे

भातृभाव की चिता जलाते रहें।"

प्रतिरक्षा मंत्री कृष्णा मेनन और सेना प्रमुख उठकर चले गए, तभी इंदिरा गांधी ने प्रवेश किया। शास्त्री जी ने बताया, "भारत के 50,000 वर्ग मील क्षेत्र पर चीन ने कब्जा कर रखा है और हमारे रक्षा मंत्री.." और उनकी बात पूरी होने से पहले कमरे में घुसती हुई इंदिरा गांधी ने बताया, "चीन ने युद्ध विराम कर दिया है।" फिर आगे कहा, "मैं तेजपुर जाना चाहती हूं।"

"हालात को समझो बेटी! तुम वहां नहीं जा सकती?"

"मगर क्यों?", इंदिरा ने कहा, "केंद्रीय परिषद की अध्यक्ष और प्रतिरक्षा परिषद की सदस्य होने के नाते मेरा तेजपुर जाना जरूरी है।"

इंदिरा गांधी और लालबहादुर शास्त्री गुवाहाटी हवाई अड्डे पर पहुंचे। शास्त्रीजी ने बताया, "हालात की नजाकत को देखते हुए मैंने मुख्यमंत्री को आने की सूचना नहीं दी है।"

बिना प्रतिक्रिया व्यक्त किए इंदिरा हवाई अड्डे से बाहर निकल पड़ी।

बाहर बेहद भयभीत कई असमी महिलाओं ने उन्हें पहचान लिया और इंदिरा गांधी के पैर पकड़ते हुए प्रार्थना की, "मैम, अगर आप दिल्ली जा रही हैं, तो हमको भी साथ ले चलें।"

"मैं दिल्ली नहीं तेजपुर जा रही हूं।" इंदिरा ने उनको ढाढ़स बंधाया, "भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, मैं तुम्हारे साथ हूं ना।"

तेजपुर हवाई अड्डे पर घबराए और परेशान युवाओं व महिलाओं का एक जत्था उनसे मिला।

किसी ने कहा, "हम क्या करें मैम!"

"हालात का मुकाबला बहादुरी से करो।"

और रोकने के बावजूद इंदिरा बाहर निकल पड़ी।

वह फौजियों से मिली और उनकी कठिनाइयां तथा जरूरतें पूछी। एक सेना अधिकारी ने बताया, ''युद्धबंदियों को लाने के लिए हमें जीपों तथा सफेद कपड़ों की जरूरत है। चीनियों की शर्त है कि युद्धबंदियों को लेने के लिए सफेद वर्दी में होना चाहिए।''

''ठीक है, आपकी जरूरतें पूरी कर दी जाएंगी।''

वापस दिल्ली लौटकर इंदिरा गांधी ने सुरक्षा समिति के सदस्यों और सुभद्रा जोशी से दो सौ सफेद वर्दियां सिलवाकर अगले दिन तक तेजपुर भिजवाने का आग्रह किया।

इस बीच सरकार में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो चुकी थी। मोरारजी देसाई, अतुल्य घोष, एस. के. पाटिल, के. कामराज और जगजीवनराम, कृष्णा मेनन को हटाने की मुहिम चला रहे थे। परोक्ष रूप से लालबहादुर शास्त्री और टी. टी. कृष्णमाचारी भी कृष्णा मेनन को हटाने के पक्ष में थे।

इंदिरा गांधी की सहज बुद्धि कहती थी कि सभी की निगाह प्रधानमंत्री की कुर्सी पर है। स्थिति को भांपते हुए नेहरूजी ने कृष्णा मेनन से त्यागपत्र लेने का निर्णय लिया, तब जाकर शास्त्रीजी और टी. टी. कृष्णमाचारी संतुष्ट हुए। अब सरकार के दक्षिणपंथियों के हौसले बढ़ गए थे। वे सब प्रधानमंत्री बनने के ख्वाब देख रहे थे। इंदिरा गांधी और उनकी मित्र सुभद्रा और पुपुल जयकर को पूरा विश्वास था। इधर नेहरूजी की सेहत बिगड़ गई थी। इंदिरा ने उनको आराम करने के लिए पहलगांव ले जाने का कार्यक्रम बनाया।

संसद का सत्र शुरू होने वाला था। चीनी हमले के बाद कांग्रेस के भीतर और बाहर नेहरूजी की नीतियों के विरोधी उनको उखाड़ फेंकने की कोशिशों में लगे थे। उधर लोकसभा उपचुनाव में मीनू मसानी, डॉ. राममनोहर लोहिया और जे.बी. कृपलानी के जीतने से दक्षिणपंथियों के हौसले बढ़े हुए थे। नेहरूजी चितिंत थे, राजनीतिक हालात को देखकर और इंदिरा उनके गिरते हुए स्वास्थ्य को लेकर। किस पर यकीन किया जाए, यही असमंजस था।

पंडितजी को पहलगांव ले चलने की तैयारियां हो रही थीं। भुवनेश्वर से नेहरूजी के पुराने मित्र और कांग्रेसी नेता बीजू पटनायक ने पहलगांव में नेहरूजी के साथ समय बिताने का कार्यक्रम बना लिया था।

पहलगांव रेस्ट हाऊस में इंदिरा गांधी से बात करते हुए बीजू पटनायक ने अपनी राय दी, ''नेहरूजी के गिरते स्वास्थ्य के मद्देनजर इनकी मदद के लिए आपको मंत्रिमंडल में शामिल हो जाना चाहिए,'' उन्होंने आगे कहा, ''मेरा यह भी सुझाव है कि मंत्रिमंडल में नए युवा चेहरे आने चाहिए और कामराज, अनुपम घोष तथा सी.बी. गुप्ता जैसे बुजुर्ग नेताओं को कांग्रेस संगठन के काम में लगना चाहिए।''

पहलगांव में नेहरूजी से मिलने पत्रकार रमेश थापर पहुंचे। नेहरूजी के आने से पहले इंदिरा गांधी से बात करते हुए रमेश थापर ने चिंता व्यक्त की, ''चीनी हमले के बाद सांप्रदायिक ताकतों ने सिर उठाना शुरू कर दिया है...उनको नियंत्रित करना जरूरी है।''

''इसका इलाज यही है कि कांग्रेस अपनी समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष नीतियों पर सख्ती के साथ चले। इस पर बहादुरी से काम करे।'' इंदिरा ने सहमति जताई।

रमेश थापर ने संदेह व्यक्त किया, ''कांग्रेस में पंडितजी या एक-दो को छोड़कर...कोई लोग नहीं है, जो समाजवाद चाहते हों।''

दिल्ली में नेहरूजी और इंदिरा गांधी के साथ एक बैठक के दौरान लालबहादुर शास्त्री ने बताया, ''तिरुपति कांग्रेस अधिवेशन के दौरान कांग्रेस के कुछ वरिष्ठ नेताओं की अनौपचारिक बैठक हुई थी। इसमें तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के. कामराज ने प्रस्ताव रखा है कि कांग्रेस के सभी नेता अपने सरकारी पदों से इस्तीफा देकर संगठन के काम में लगें।''

यह सुनकर इंदिरा गांधी को आश्चर्य हुआ कि यह बात तो उन्हें बीजू पटनायक ने पहलगांव में बताई थी, ''आपको यह सब कैसे मालूम?'' उन्होंने शास्त्रीजी से पूछा।

''उस बैठक में कामराज के साथ-साथ अतुल्य घोष, लिंगप्पा, संजीव रेड्डी, मोरारजी देसाई, सी.बी. गुप्ता के अतिरिक्त बीजू पटनायक भी मौजूद थे। यही है कामराज योजना!''

तीनमूर्ति भवन के अध्यक्ष कक्ष में इंदिरा एक उपन्यास पढ़ रही थी। मन उचाट था। तभी दोपहर बाद पुपुल आई। उनको देखते ही इंदिरा ने किताब को मेज पर रखकर पुपुल से कहा, ''पापू की हालत बिगड़ती जा रही है, डॉक्टरों ने उन्हें लम्बा चौड़ा परहेज बता रखा है। मैं देखभाल कर रही हूं...पर पापू कुछ बताते ही नहीं...।''

उसी बीच पी.एम.ओ. कार्यालय के कर्मचारी ने आकर एन.बी.सी. के एक पत्रकार वेल्स हैंगन के आने की सूचना दी। इंदिरा ने उसको वहीं बुला लिया। औपचारिक बातों के बाद वेल्स हैंगन ने पूछा, ''आफ्टर नेहरू हू? (नेहरू के बाद देश कौन संभालेगा?)''

इंदिरा ने तपाक से उत्तर दिया, ''श्री लालबहादुर शास्त्री!''

''क्यों?''

''क्योंकि शास्त्रीजी को कांग्रेस पार्टी का समर्थन प्राप्त है। हमारा तरीका भी यही है...नेता का चुनाव करने के लिए पार्टी में मतदान होता है...और फिर वह समर्थ व्यक्ति हैं।''

पुपुल को हैरानी हुई।

तभी बंबई से कृष्णा हथीसिंह ने फोन पर नेहरूजी की तबीयत के बारे में पूछा, ''कैसे हैं जवाहर?''

''वह बीमार ही नहीं, उनकी हालात बहुत खराब है...यहां के डॉक्टरों को कुछ पता ही नहीं चल पा रहा है...कि क्या बात है...मुझे लगता है...धीरे-धीरे ही इज कोलेप्सिंग...।''

नेहरूजी की हालत बेहद बिगड़ चुकी थी। इंदिरा सुबह-सुबह लालबहादुर शास्त्री के घर पहुंची। वह अत्यधिक घबराई और बेहाल थी। उनके कमरे में पहुंचते ही इंदिरा ने कहा, "मैं नहीं जानती कि मुझे क्या करना चाहिए...हरेक नेता को बताना चाहिए या नहीं...पापू की हालत बहुत खराब है।"

"अभी दूसरों को मत बताइए...," शास्त्रीजी भी घबरा गए और वे भी परेशान दिखे, पर खुद को संभालते हुए कहा, "मैं पहुंच रहा हूं ...आप चलें...।"

27 मई 1964 की सुबह 6.30 बजे के करीब सूचना मिलते ही इंदिरा डॉक्टर के साथ नेहरूजी के कमरे में पहुंची। उनको देखते ही नेहरूजी ने पूछा, "क्या बात है?" और फिर अचेत हो गए। उनकी महाधमनी फट गई थी। डॉक्टर ने इंदिरा का खून लेकर, जिसका ग्रुप उसके पिता वाला ही था, नेहरूजी को चढ़ाया और उनके बचाने का प्रयास किया। पर कुछ लाभ नहीं हुआ। वह पूरी तरह से अचेतावस्था में पहुंच चुके थे। दोपहर को 1.44 मिनट पर उनकी सांसें रुक गईं। जब वह अचेतावस्था में थे, इंदिरा ने राजीव को इंग्लैण्ड और संजय के लिए कश्मीर संदेश भिजवाया। अपनी दोनों बुआओं को बंबई फोन किया और अंत में कृष्णा मेनन को फोन किया, जो तत्काल तीनमूर्ति पहुंच गए थे।

मृत्यु का समाचार सुनते ही तीनमूर्ति पर मंत्रिमंडल के तमाम सदस्य जगजीवन राम, टी.टी. कृष्णमाचारी, गुलजारी लाल नंदा, मोरारजी देसाई, लाल बहादुर शास्त्री तथा के. कामराज एकत्र होने लगे। ऑल इंडिया रेडियो से समाचार प्रसारित हुआ, "..भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू नहीं रहे..."

खबर सुनते ही हर वर्ग के लोग भारी संख्या में तीनमूर्ति पर जमा

होने लगे। जनसमुदाय को व्यवस्थित करने के लिए पुलिस के साथ उपमंत्री शाहनवाज खां ने घोड़े पर सवार होकर भीड़ नियंत्रित की।

विदेशी राजनयिक अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने कतार बांधे चले जा रहे थे।

भीड़ नारे लगा रही थी, ''चाचा नेहरू—अमर रहे, अमर रहे, पं. नेहरू—जिंदाबाद, जिंदाबाद...शांतिदूत—अमर रहे, अमर रहे।''

बहुत से लोग हिचकियां भर-भरकर रो रहे थे।

तीनमूर्ति भवन के जिस कमरे में उनका पार्थिव शरीर दर्शनों के लिए रखा था, उसकी बगल के कमरे में मंत्रिमंडल की बैठक हो रही थी। कृष्णा हथीसिंह, विजयालक्ष्मी पंडित, पद्मजा तथा अन्य रिश्तेदारों और मित्रों का पहुंचना शुरू हो गया था।

इंदिरा नेहरूजी के शव के पास बैठी उसे अपलक देख रही थी।

अगले दिन सुबह से नेहरूजी के अंतिम दर्शन के लिए आने वालों का तांता लगा था। इंदिरा गांधी शव के पास से उठकर रसोई में गई। वहां सारे नौकर-चाकर उदास, दुखी और परेशान बैठे थे। घर का पुराना सेवक नाथूराम भी बिना शेव किए, बिना नहाए धोए बैठा था। उसे देखकर इंदिरा ने दुख और हैरानी के साथ कहा, ''अरे! यह क्या? नाथूराम...पापू को कभी यह अच्छा नहीं लगा...तुम लोग तैयार हुए बिना किचिन में घुसो...फिर आज क्यों...गंदे-संदे बैठे हो...बिना शेव किए...चलो उठो, सब नहा धोकर तैयार हो आओ...''

इंदिरा लौटकर शव के पास पहली वाली जगह पर बैठ गई। शांति पाठ चल रहा था। इतने में संजय कमरे में घुसा और इंदिरा के पास पहुंचा। इंदिरा ने उठकर उसे सीने से चिपका लिया।

तोप गाड़ी पर तिरंगे में लिपटा पं. जवाहरलाल नेहरू का फूलों से ढका शव शांतिवन की ओर जा रहा था। शव की अगल-बगल तोप गाड़ी पर इंदिरा के साथ कृष्णा हथीसिंह, विजयालक्ष्मी पंडित, संजय

और पद्मजा नायडू तथा परिवार के कुछ अन्य सदस्य बैठे थे।

तोप गाड़ी के पीछे विशिष्ट लोगों की गाड़ियों की लंबी कतार थी। सड़क के दोनों ओर दूर-दूर तक खड़ा जनसमूह पं. नेहरू जिंदाबाद, चाचा नेहरू जिंदाबाद, शांति दूत–अमर रहे! आदि नारे लगा रहे थे। बहुत से लोगों की आंखों में आंसू थे।

इंदिरा सूनी-सूनी निगाहों से उधर बार-बार देख रही थी।

शांति वन में एक ऊंचे चबूतरे पर बनी चिता पर नेहरूजी का शव रखा गया। वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच संजय ने चिता की परिक्रमा की। भीड़ नारे लगा रही थी, आंखें छलछलाई हुई थी।

संजय ने मुखाग्नि दी, नारों की आवाज के बीच मंत्रों के स्वर खो गए। शरीर पंचतत्व में विलीन होने लगा।

इंदिरा टकटकी लगाए देख रही थी।

तीनमूर्ति भवन के मुख्य हाल में नेहरूजी के चित्र के सामने दीपक जल रहा था। वहीं एक सफेद चादर पर इंदिरा गांधी, कृष्णा हथीसिंह और पद्मजा बैठी थीं। तभी लालबहादुर शास्त्री वहां आए और और इंदिरा के पास बैठकर बोले, ''...अब मुल्क की बागडोर आप संभाल लीजिए।''

लालबहादुर शास्त्री की ओर देखती हुई इंदिरा गांधी ने कहा, ''मेरे लिए यह मुमकिन नहीं है शास्त्री जी, अभी तो मैं पापू की मौत के सदमे से उभर भी नहीं पाई हूं...'' फिर शास्त्रीजी को देखते हुए कहा, ''आप संभालिए...मैं आपके साथ हूं...शास्त्रीजी!''

''...पंडितजी इतने बड़े इंसान थे और मैं...कहां, पंडितजी और कहां मैं...।'' शास्त्रीजी ने विनम्रता से कहा।

''आपको मेरा पूरा सहयोग और समर्थन मिलेगा शास्त्रीजी! इस समय देश की बागड़ोर संभालने के लिए आपसे ज्यादा योग्य इस देश

में और कोई नहीं।"

नेहरूजी की अस्थियों को संगम में विसर्जित करने के लिए उनको एक विशेष रेलगाड़ी से ले जाया गया। जिस डिब्बे में अस्थिकलश रखा था, उसमें इंदिरा गांधी के साथ राजीव, संजय, कृष्णा हथीसिंह और अन्य संबंधी बैठे थे।

गाड़ी जहां-जहां रुकती थी, वहां-वहां अस्थिकलश के दर्शन और अपने प्रिय नेता को श्रद्धांजलि अर्पित करने अपार जनसमूह एकत्र होता था और नारे लगाता था।

इंदिरा गांधी दरवाजे पर आकर लोगों का अभिवादन करती थी।

इलाहाबाद गाड़ी पहुंचने पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने को भीड़ उमड़ पड़ी। वे नारे लगा रहे थे और अनेक अपना रोना नहीं रोक पाते थे।

एक फूलों से सजी नौका पर अस्थिकलश को संगम में ले जाया गया। वहां राजीव, संजय और इंदिरा ने अस्थिकलश विसर्जित किया। विशाल जनसमूह नारे लगाकर अपने नेता के अवशेषों को अंतिम विदा दे रहा था।

तीनमूर्ति भवन को, जहां प्रियनेता पंडित जवाहरलाल नेहरू अपने प्रधानमंत्रित्व काल के अधिकांश समय रहे थे, नेहरू स्मृति में बदलने की तैयारियां चल रही थी।

पुपुल जयकर और पद्मजा के साथ बात करते हुए इंदिरा गांधी ने कहा, "पापू की हर चीज अब नेहरू स्मारक को सौंप दी जाएगी। फाइलें और कागजात की देख-रेख इतिहासकार एस. गोपाल करेंगे। नेहरू स्मारक की ओर से वो ही पापू की संग्रहीत रचनाओं के खंडों का संपादन करेंगे...।"

पद्मजा ने पूछा, "एस. गोपाल कौन हैं?"

"वे डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के पुत्र, युवा इतिहासकार हैं और पापू उन्हें बहुत पसंद करते थे।" इंदिरा ने बताया।

प्रधानमंत्री पद के अनेक दावेदार थे। इनमें एक मोरारजी देसाई भी थे। तीनमूर्ति भवन में वह इंदिरा से समर्थन मांगने आए, "आप यदि अपना समर्थन दे दें, तो मेरा प्रधानमंत्री चुना जाना तय है?"

"मैं तो पहले ही लालबहादुर शास्त्री से वादा कर चुकी हूं...लोग उन्हें ही चाहते हैं...पूरा सिंडीकेट उन्हें समर्थन दे रहा है।"

मोरारजी मायूस हो गए।

विधिवत निर्वाचित होने के बाद लालबहादुर शास्त्री इंदिरा गांधी से मिलने तीनमूर्ति भवन आए। वहां के नेहरू स्मारक की रूपरेखा तैयार करने में व्यस्त थे। तभी नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री ने विनम्रतापूर्वक उनसे कहा, "सरकार में शामिल होकर विदेश विभाग संभालने का दायित्व ग्रहण करें इंदिरा बेटी!"

"मुझे खेद है शास्त्रीजी, मैं मंत्रिमंडल में शामिल नहीं हो सकती।"

"पर क्यों?"

"अब इस क्यों का मेरे पास कोई उत्तर नहीं है।"

"मेरे पर यह जिम्मेदारी आपने ही डाली है, इसलिए सरकार बनाए रखने के लिए मंत्रिमंडल में नेहरू परिवार के सदस्य का होना जरूरी है।"

"यह आवश्यक नहीं...सारा देश ही मेरा परिवार है, किसी और को बना लें..." इंदिरा ने कोई अन्य नाम सुझाने का प्रस्ताव रखा।

"नेहरू परिवार के नाम पर हर किसी को स्वीकार नहीं किया जाएगा...फिर पंडितजी के साथ आपने तो सब कुछ देखा भी है..."

"आप लोगों से कह सकते हैं कि इंदिरा मंत्रिमंडल में शामिल होने को तैयार तो हो गई हैं, परंतु पिता के शोक के कारण वह अभी

नहीं बल्कि दो महीने बाद शामिल हो जाएंगी, तब तक आपको पता भी चल जाएगा कि आपकी सरकार स्थिर है या नहीं...अगर स्थिर हो जाती है, तो मेरे शामिल होने की जरूरत नहीं रह जाएगी...हां अगर कोई परेशानी होती है तो मैं शामिल हो जाऊंगी...पर कोई अहम जिम्मेदारी नहीं लूंगी...

"वैसे भी मेरी पहली पसंद 'शिक्षा' है। यह विभाग छागलानी देख रहे हैं...उन्हें हटाना ठीक न होगा...सूचना प्रसारण मंत्रालय हो सकता है। पर शामिल तब ही होऊंगी, जब आपको कोई परेशानी पैदा हो जाएगी...अभी बिल्कुल नहीं...।"

लेकिन शाम को जब आकाशवाणी से समाचार प्रसारित हुए तो कहा गया कि कल सुबह ग्यारह बजे श्री लालबहादुर शास्त्री भारत के दूसरे प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करेंगे...प्राप्त जानकारी के अनुसार नेहरू मंत्रिमंडल के सभी पूर्व मंत्रियों को शामिल किया गया है। मंत्रिमंडल में श्रीमती इंदिरा गांधी को भी शामिल किया गया है। वह भी कल शपथ ग्रहण करेंगी...।

इंदिरा को आश्चर्य हुआ। उसने रेडियो बंद कर दी और कहा, "अरे! मैंने तो साफ मना कर दिया था।"

उनके कमरे में रमेश थापर, पुरुषोत्तम पंत और पुपुल बैठे थे। रमेश थापर ने कहा, "संभवतः शास्त्रीजी को लगा होगा कि अभी ही शामिल होना ठीक रहेगा।"

"आप शामिल हो ही जाएं तो देश के लिए अच्छा रहेगा।" पुरुषोत्तम पंत ने उनको शामिल होने की सलाह दी। पुपुल को थोड़ी हिचक थी।

इंदिरा गांधी ने लालबहादुर शास्त्री को फोन करके उनके साथ हुई अपनी बात की याद दिलाई। इस पर शास्त्रीजी ने कहा, "लौटते वक्त इस पर कार में मैंने विचार किया और मुझे लगा कि आपकी बात मानने से भ्रम फैल जाएगा कि आप दो महीने क्यों ठहर रही हैं, अगर आप शामिल होने वाली हैं, तो अभी क्यों नहीं..."

सूचना प्रसारण मंत्री बनने के बाद उनका सरकारी निवास 1, सफदरजंग रोड हो गया था।

एक रात को पुपुल जयकर और रमेश थापर के साथ बातचीत के दौरान इंदिरा गांधी ने बताया, "मुझे ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त जीवराज मेहता का पत्र मिला है। इसमें लिखा है, 'ट्रिब्यूट टू नेहरू' प्रदर्शनी करने को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री राजी हो गए हैं और उनको तथा पुपुल को वहां होस्ट की हैसियत से मौजूद रहना है।"

रमेश थापर ने पूछा, "आज संसद में क्या हंगामा हुआ था?"

इंदिरा ने संसद में विजयालक्ष्मी पंडित द्वारा शास्त्री पर किए गए हमले के बारे में बताया और कहा, "इसीलिए मैं सरकार में शामिल नहीं होना चाहती थी...ये एक तरह की कैद है...सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि हर कोई नेता बनना चाहता है...जब अपने ही लोगों द्वारा सरकार पर हमला किया जाता है, तो जवाब तो देना ही पड़ेगा...।"

लंदन में उच्चायुक्त डॉ. जीवराज मेहता के घर पर शाम को पुपुल जयकर और इंदिरा गांधी बात कर रही थी। इंदिरा एक पत्र भी पढ़ रही थी। पत्र पढ़ने के बाद पुपुल को बताया, "राजीव का खत बहुत दिलचस्प है...आज वह किसी से मिलवाना चाहता है।"

दोपहर को लंदन में एक रेस्ट्रा में राजीव ने सोनिया को इंदिरा गांधी से मिलवाया। साथ में पुपुल भी थी। सोनिया से मिलकर और बात करके इंदिरा खुश हुई, "बहुत सुंदर...अति सुंदर...जैसे स्वर्ग से अप्सरा उतर आई हो।"

"थैंक्स।" सोनिया शरमा गई।

चारों ने लंच लिया।

दिल्ली लौटकर अपने निवास पर इंदिरा गांधी ने पिछले अखबारों

पर नजर डाली। उसके माथे पर चिंता की रेखाएं उभर आई। उसने पी. ए. से शास्त्रीजी को फोन मिलाने को कहा।

उस समय शास्त्रीजी और के. कामराज बात कर रहे थे।

"शास्त्रीजी! मद्रास में चल रहे भाषाई दंगों की चिंता के कारण मेरा सिरदर्द बढ़ता ही जा रहा है।"

"हां, वहां दंगे काफी चिंता का विषय तो बन ही गए हैं, परंतु अभी रिपोर्ट तो आने दो।"

"वहां किसी को जाना चाहिए।"

"पर रिपोर्ट का इंतजार तो...।"

"यदि आप रिपोर्ट के इंतजार में रहे, तो रिपोर्ट तो नहीं आएगी मुझे ही वहां जाना होगा और मैं वहां स्वविवेक से सरकार की ओर से आश्वासन दे दूंगी।"

"मगर..."

"मगर क्या शास्त्री जी," इंदिरा ने कहा, "...नहीं तो हालात क्रिटीकल हो जाएंगे...सी. सुब्रमण्यम ने इस्तीफा दे दिया है क्या?"

"उनका इस्तीफा मिल गया है। मैं विचार कर रहा हूं, लेकिन इंदिरा जी! वहां जाने से कोई भी लाभ नहीं होगा, मैंने कामराजजी से भी बात की है।"

"ठीक है, पर मेरा भी तो कुछ कर्तव्य है...।"

"जैसी आपकी इच्छा।"

अगले दिन दोपहर को मद्रास पहुंचकर इंदिरा गांधी ने हिंदी विरोधी आंदोलनकारी छात्रों से बात की, "हिन्दी का इतना विरोध क्यों?"

"क्योंकि हिन्दी के कारण हमारी अपनी क्षेत्रीय भाषा मिटाई जा रही है।"

"नहीं क्षेत्रीय भाषा कोई नहीं मिटा सकता, हर राज्य में कम-से

कम तीन भाषाएं अवश्य पढ़ाई जाएंगी, उनमें से एक क्षेत्रीय भाषा होगी और पूरा पाठ्यक्रम क्षेत्रीय भाषा में ही होगा।''

''यही तो हम चाहते हैं।'' छात्र नेता ने कहा और उन्होंने इंदिरा को विदाई के समय फूलमालाओं से लाद दिया।

वापस आकर इंदिरा थकी सी लग रही थी, उन्हें देखकर पुपुल ने कहा, ''पंडितजी की मृत्यु के बाद इंदिराजी लगातार बहुत व्यस्त रही हैं, मेरी राय में थोड़े दिन के लिए कश्मीर जाकर थोड़ा आराम कर लीजिए...''

''सोच तो कुछ मैं भी ऐसा ही रही हूं।'' इंदिरा गांधी ने कहा।

अगले ही दिन छुट्टियां बिताने के लिए इंदिरा गांधी अपने कनिष्ठ पुत्र संजय और जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री जी.एम. सादिक के साथ विमान में रवाना हो गई।

''कश्मीर में मैंने पाकिस्तानी घुसपैठ के बारे में सुना था,'' इंदिरा गांधी ने सादिक से पूछा, ''पर गृह-मंत्रालय और प्रतिरक्षा मंत्रालय तो इसको महज अफवाहें बता रहे हैं।''

''मैं उन लोगों को यकीन नहीं दिला पाया,'' सादिक ने बताया, ''पर हमले का खतरा बहुत ज्यादा है, और मैं नहीं जानता कि हमले का मुकाबला करने के लिए हमारे पास अब कितना वक्त बचा है?''

''सच में।'' इंदिरा ने हैरानी प्रकट की।

''मैडम,'' सादिक ने इंदिरा गांधी से अनुरोध किया, ''अभी दोपहर का खाना आप मेरे साथ लें, ताकि इस मुद्दे पर वक्त गंवाए बिना जरूरी बातचीत की जा सके।''

''मैं बहुत थकी हुई हूं और गेस्ट हाऊस पहुंचकर सीधे बिस्तर पर जाकर सो जाना चाहती हूं,'' इंदिरा गांधी ने विनम्रता से इंकार किया, ''...यहां भी आपने मीटिंगों और मेल-मुलाकातों में फंसा दिया तो आराम कहां मिलेगा?''

“जी...”

“परंतु...”

“परंतु क्या मैडम?”

“भाग्य में आराम कहां?” इंदिरा को जैसे पूर्वाभास हो गया था।

दोपहर को श्रीनगर हवाई अड्डे पर उतरते ही घबराए हुए डी.पी. धर और सादिक मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों ने लपककर इंदिरा गांधी को घेर लिया। डी.पी. ने घबराई हुई आवाज में इंदिरा गांधी को बताया, “मैडम! आज पाकिस्तानियों ने जबरदस्त घुसपैठ की है...लड़ाई पूरी तरह शुरू हो चुकी है और यहीं श्रीनगर के बाहरी इलाकों में चल रही है...अगर आप लोग जल्दी से कुछ नहीं करते तो लोगों को हम बचा नहीं पाएंगे।”

“हूं...।”

“मैडम आप राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में भाग अवश्य लें।”

“‘यहां तो पुलिस और फौज की संख्या भी नाकाफी है।”

गेस्ट हाऊस पहुंचते ही इंदिरा ने पंजाब के मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरो से फोन पर बात की, “श्रीनगर के आसपास लड़ाई शुरू हो गई है...”

“जी, लेकिन हमें क्या करना है?”

“क्या करना है,” वह गंभीरता से बोली, “शत्रु देश के सैनिकों को उल्टे पांव दौड़ाना है।”

सन् 1965 में हुए युद्ध के दौरान इन्दिरा की कोशिशों से जनता और जवानों का मनोबल बढ़ाने में आकाशवाणी महत्त्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुई। युद्ध के दौरान कश्मीर में निडर भ्रमण करने वाली यह पहली भारतीय नेता थीं।

यह लड़ाई लगभग बाईस दिन तक चली। रूस ने शान्ति के लिए मध्यस्थता की। 4 जनवरी से 10 जनवरी तक ताशकन्द में समझौता

वार्ता हुई। ताशकन्द समझौते के अनुसार भारत को ऐसे बहुत से जीते हुए स्थान छोड़ने पड़े, जो सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण थे। अपने समझौते पर देश की राय जानने के लिए शास्त्रीजी ने भारत फ ोन किया, ''इंदिराजी! ताशकन्द समझौते की क्या प्रतिक्रिया चल रही है देश में।''

''शास्त्रीजी! बहुत खराब, जीते हुए क्षेत्र पाकिस्तान को वापस लौटाने की बात पर भारतीय बहुत रुष्ट हैं।''

''क्यों?''

''भारतीय जीता हुआ क्षेत्र वापस पाकिस्तान को देना नहीं चाहते।''

''लेकिन हमारी तो संस्कृति है कि हमने कभी किसी भी देश की एक इंच जमीन तक पर कब्जा नहीं किया।''

''अब युग बदल गया है शास्त्रीजी, पाकिस्तान तो पूरे भारत पर कब्जा करके दिल्ली की जामा मस्जिद में अपने सैनिकों को नमाज पढ़ाने का सपना देखता है।''

''जब वह अपना राक्षसीपन नहीं छोड़ता तो क्या हम भी अपना दैवत्व छोड़ दें?''

''नहीं...छोड़ना तो नहीं चाहिए, आपने जो किया है, ठीक ही किया है।''

इंदिरा ने कह तो दिया, लेकिन शास्त्रीजी को जीते हुए हिस्सों की वापसी को लेकर भारतीयों के अन्दर गुस्से की बात जानकर गहरा दुख हुआ। उनको अचानक दिल का दौरा पड़ गया और वहीं उनका देहान्त हो गया।

उनकी मृत्यु ने इन्दिराजी को एक बार फिर स्तब्ध कर दिया। अठारह महीने बाद ही उनको यह दूसरा धक्का लगा था। भारत के प्रधानमन्त्री की कुर्सी एक बार फिर ख़ाली हो गई थी। भारत में नए प्रधानमन्त्री की खोज दोबारा शुरू हो गई।

शास्त्रीजी की अचानक मृत्यु के बाद दिल्ली के राजनीतिक मंच पर एकाएक बड़ी ज़बर्दस्त भीड़ आ जुटी। अजीब-अजीब किस्म के लोग मन्त्री पद के लिए दावेदारी कर रहे थे। उनमें से कुछ के लिए भारतीय जनता के मन में आदर था, जिनकी योग्यता को सारा संसार जानता था।

गुलज़ारीलाल नन्दा दूसरी बार अस्थायी प्रधानमन्त्री बने। कई नाम प्रधानमन्त्री पद के उम्मीदवारों की सूची में थे। इन्दिरा का नाम इन उम्मीदवारों की सूची में कहीं नहीं आया था। वह लगभग एक ओर खड़ी नाटक की गतिविधियों को देख रही थीं। उन्हें यह भान भी न था कि किस्मत उन्हें उठाकर मंच के बीचोंबीच ला खड़ा करने वाली है। बहुत सोच-विचार कर कामराज ने प्रधानमन्त्री पद के लिए इन्दिरा का नाम प्रस्तावित किया।

कामराज ने सोचा, 'इन्दिरा के साथ नेहरूजी का नाम जुड़ा है। नौजवानों के मन में उनके लिए बड़ा गहरा लगाव है।' उनकी यह इच्छा थी कि इन्दिराजी को बिना किसी विरोध के चुन लिया जाए, किन्तु मोरारजी देसाई नहीं माने। उन्होंने खुले चुनाव पर ज़ोर दिया।

जब इस फ़ैसले की सूचना इन्दिराजी को दी गई, तो उन्हें ताज्जुब हुआ, "क्या...," फिर सहजता से बोली, "मैं इस पद के योग्य कहां?"

"हीरा स्वयं का मूल्य नहीं जानता! राष्ट्रीय संकट की घड़ी में कर्तव्य का यह तक़ाज़ा है कि आप इस फ़ैसले को मानें।"

"जैसी आप लोगों की इच्छा!"

यह क़ुदरत का करिश्मा था कि इन्दिराजी का नाम उस समय नाटकीय ढंग से उभरकर सामने आया और बाद में सरोवर के कमल की तरह बराबर ऊपर-ही-ऊपर उठता गया।

चुनाव हुआ और इन्दिराजी सफल हुईं। बधाइयों का तांता लग गया, किन्तु इन्दिरा जी धीर-गम्भीर बनी रहीं। वह पद की ज़िम्मेदारी को समझ रही थीं।

इन्दिराजी ने पद पाकर भी विनम्रता नहीं छोड़ी और सबसे पहले

मंच पर अगली पंक्ति में बैठे मोरारजी देसाई के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया और कहा, ''आशीर्वाद दीजिए कि आगे आने वाली ज़िम्मेदारियों का भार उठा सकूं।''

बिना किसी पूर्वाग्रह के प्रसन्नचित्त होकर मोरारजी देसाई बोले, ''मैं तुम्हें अपना आशीर्वाद देता हूं।''

फिर उन्होंने किसान नेता चौधरी चरण सिंह से आशीर्वाद मांगा, तो श्री चरण सिंह ने कहा, ''बेटी! मेरा आशीर्वाद तो हमेशा तेरे ही साथ है, अपने की तरह देश को भी तेजस्वी बनाओ।''

24 जनवरी, 1966 को इन्दिरा जी ने प्रधानमन्त्री पद की शपथ ली। पद संभालने के बाद जब वह इलाहाबाद आईं, तो उन्होंने कहा था, ''मैंने कांटों का ताज पहना है।''

प्रधानमन्त्री पद संभालने के बाद से इन्दिरा जी बराबर प्रतिदिन सोलह से अठारह घंटे काम करती थीं। वह शायद ही कभी आधी रात के पहले सो पाती थीं। जब संसद का अधिवेशन चलता होता, तब वह देर रात तक कार्यालय में ही व्यस्त रहतीं। शाम का समय कांग्रेस पार्टी की बैठकों, विदेशों से आए मेहमानों के स्वागत में आयोजित सभाओं और दूसरे प्रकार के समारोहों में भाग लेने में बीतता। आमतौर पर वह रात नौ बजे घर वापस आ पाती थीं। आते ही इन्तज़ार में बैठे लोगों से मिलतीं, फिर खाना खाने के बाद वह आधी रात तक फ ाइलें देखतीं, तब कहीं जाकर सोने जाती थीं।

प्रधानमन्त्री बनने के बाद उन्होंने अमेरिका की राजकीय यात्रा की। अमेरिका की यात्रा से उन्होंने भारत की आर्थिक और खाद्य समस्या के लिए सहायता प्राप्त कर ली।

अमेरिका से भारत को आर्थिक सहायता मिल रही थी, फिर भी उसूलों की पक्की होने के कारण इन्दिराजी ने कड़े शब्दों में बार-बार अमेरिका से उत्तरी वियतनाम पर हो रही गोलाबारी को बन्द करने की अपील की, ''मैं चाहती हूं, अपने निजी स्वार्थों के लिए किसी देश पर हमला करना उचित नहीं, इसे तुरंत रोका जाना चाहिए।''

उन्होंने यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो और मिस्र के राष्ट्रपति अब्दुल नासिर को निमन्त्रित करके वियतनाम युद्ध का विरोध किया, "यह तो सरासर अमेरिका की दादागीरी है।"

"और नहीं तो क्या?" टीटो ने भी सहमति जताई।

परंतु इसका नतीजा यह हुआ कि अमेरिका ने नाराज़ होकर भारत भेजे जाने वाले बीस लाख टन अनाज को रोक लिया। यह अनाज भारत के सूखाग्रस्त इलाक ों की सहायता के लिए आने वाला था।

इस सहायता के रुक जाने से भारत को काफ ी परेशानियों का सामना करना पड़ा, लेकिन विश्वशान्ति की वास्तविक पक्षधर इन्दिरा जी ने उत्तरी वियतनाम के प्रति अमेरिका के रुख़ के बारे में उंगली उठाना बन्द नहीं किया।

भारत में समस्याएं अजगर की तरह मुंह बाये खड़ी थीं। अनाज की कमी, वेतन के लिए धन की कमी, असन्तुलित जीवन-स्तर के ख़िलाफ मज़दूर, सरकारी कर्मचारी सभी हड़ताल कर रहे थे। छात्रों के आन्दोलन हो रहे थे। बढ़ती हुई जनसंख्या भी देश के लिए एक बहुत बड़ी समस्या थी। विपक्षी दल इन सारी समस्याओं का राजनीतिक लाभ उठाने में लगे हुए थे। उनका उद्देश्य 1967 के आम चुनाव में कांग्रेस को एकदम चित कर देने का था। चूंकि चुनाव नज़दीक थे, इसलिए इन्हें बहुत काम करना पड़ रहा था।

8 फ रवरी, 1967 को भुवनेश्वर में एक दुर्घटना घटी। भाषण देते समय कुछ लोगों ने उनके ऊपर पत्थरों की बौछार शुरू कर दी। सुरक्षा कर्मचारियों ने उनसे कहा, "मैडम आप पीछे हट जाएं!"

"नहीं, मैं पीछे हटने वाली महिला नहीं हूं।" वह नहीं मानीं और पथराव में भी उन्होंने अपना भाषण जारी रखा, "मैं जानती हूं कि यह सब कौन करवा रहा है, परंतु मैं किसी भी भय से डरने वाली नहीं हूं, क्योंकि मैंने तो देश के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया है।"

तभी सनसनाता हुआ एक पत्थर आकर सीधा उनकी नाक पर लगा। इससे उनका ऊपर का होंठ फट गया और नाक की हड्डी चटक गई।

उन्हें हवाई जहाज़ से वापस दिल्ली लाया गया। इन्दिराजी इलाज के लिए अस्पताल में दाख़िल हुईं। दो दिन के इलाज और आराम के बाद वह अस्पताल से वापस आईं। डॉक्टर उन्हें और आराम करने के लिए कह रहे थे, लेकिन इन्दिराजी भला कब मानने वाली थीं। दो दिन बाद ही उन्होंने फिर चुनाव प्रचार शुरू कर दिया।

सारे देश में उन पर हुए इस हमले की निन्दा हुई, लेकिन इन्दिराजी ने चोट खाकर भी इस घटना को अधिक महत्त्व नहीं दिया। इतने विरोध के बाद भी चुनाव में इन्दिराजी के नेतृत्व में कांग्रेस की जीत हुई। वह ख ुद भी उत्तर प्रदेश के रायबरेली क्षेत्र से भारी बहुमत से जीतीं। मई महीने में राष्ट्रपति के चुनाव के समय विरोधी पार्टियों के साथ उनकी योग्यता की परीक्षा हो ही गई। विरोधियों की लाख कोशिशों के बाद भी डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन राष्ट्रपति बन गए।

डॉक्टर हुसैन का राष्ट्रपति चुना जाना कई मायनों में महत्त्वपूर्ण था। देश के इस सर्वोच्च आसन पर बैठने वाले वह पहले मुसलमान थे। यह इस बात को दर्शाता था कि भारत सभी धर्मों को एक समान मानता है। और यह भारत के बुद्धिजीवी समाज के प्रतिनिधि का सम्मान भी था। डॉक्टर ज ाकिर हुसैन राजनीतिज्ञ से ज़्यादा शिक्षाविद् और विद्वान थे।

दुर्भाग्यवश 3 मई, 1969 को राष्ट्रपति ज़ाकिर हुसैन का निधन हो गया। डॉ. हुसैन के चुनाव के समय इन्दिरा जी को काफ ी मेहनत करनी पड़ी थी। अब अपने सिद्धान्तों से मेल खाने वाली विचारधारा के राष्ट्रपति का चुनाव करना और उसे ही जिता पाना उतना आसान नहीं था, क्योंकि पार्टी में भी उस समय तक उनके विरोधी काफ ी सक्रिय हो चुके थे। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। यहां भी उन्होंने अपनी राजनीतिक सूझ-बूझ का परिचय दिया। इन्हीं दिनों पार्टी के बड़े नेताओं से उनके मतभेद सामने आए। उन नेताओं के गुट को उस समय सिंडीकेट कहा जाता था और उनमें से ज़्यादातर नेता जनता की नज़रों में पिछड़े विचारों के माने जाते थे।

इन्दिराजी को सिंडीकेट के विरोध का पहले ही पता चल चुका था। अतः उन्होंने नीलम संजीव रेड्डी को राष्ट्रपति बनाए जाने का खुलकर विरोध किया। उस समय उपराष्ट्रपति वी.वी. गिरि थे, इसलिए राष्ट्रपति पद के सही हक दार वही थे। उन्होंने पार्टी के बड़े नेताओं की चिन्ता किए बग़ैर घोषणा कर दी, ''कांग्रेस पार्टी के सभी लोगों को अपनी इच्छानुसार नए राष्ट्रपति के चुनाव में मतदान करने की छूट होनी चाहिए।''

इस संबंध में उन्होंने निजलिंगप्पा को एक पत्र लिखा।

''इंदिराजी द्वारा निजलिंगप्पा के नाम लिखे गए पत्र के अखबारों में प्रकाशित हो जाने से हालात में भारी बदलाव आया है,'' रमेश थापर ने कहा, ''कांग्रेस के विधायक और सांसद अपने वोट देने को स्वतंत्र महसूस करने लगे हैं। और तो और खबरों के मुताबिक चौधरी चरणसिंह की भारतीय क्रांति दल और समाजवादी तथा निर्दलीय सांसद भी गिरि के पक्ष में आ गए हैं।''

''वी.वी. गिरि का चुनाव, चुनाव नहीं अब एक आंदोलन बन गया है।'' इंदिरा ने अपनी राय दी।

''आम गरीब लोग रिक्शा और स्कूटर वाले वी.वी. गिरि की जीत की दुआएं मांग रहे हैं...'' इंदर मल्होत्रा ने बताया, ''रेड्डी के पक्ष में वोट देने के लिए निजलिंगप्पा अब कोई किसी से चाहे जितनी अपील करें, उन पर कोई असर नहीं हो रहा है।''

''आम लोगों में गिरि विरोधियों के प्रति बेहद गुस्सा है...'' पुपुल ने अपनी टिप्पणी की।

''कांग्रेस प्रेसीडेंट अब मुझे भरोसा दे रहे हैं,'' इंदिरा बोली, ''अगर रेड्डी जिता दिए जाएं तो मेरी सरकार वह नहीं गिरने देंगे...।''

''आपने क्या जवाब दिया?'' पुपुल ने पूछा।

''...मैंने उन्हें लिख दिया...दूसरी पार्टियों के नेताओं से मदद लेने के लिए क्या-क्या समझौते आपने किए हैं, उनकी जानकारी देने के

बजाए आप मुझे यकीन दिला रहे हैं कि मेरी सरकार गिराएंगे नहीं, मैंने उनको साफ-साफ लिख दिया, मूलभूत सवालों से संबंधित बहस में आप जो सत्ता की राजनीति शामिल करने की कोशिश कर रहे हैं...मैं उसका मजबूती से विरोध करती हूं। मैं कोई वादा अपने लिए बिल्कुल नहीं चाहती...और न ही इस कीमत पर मैं पद पर बने रहना चाहती हूं।''

मतदान 16 अगस्त को हुआ। वातावरण में शत्रुता और कटुता थी। इधर प्रधानमंत्री निवास पर आम लोगों का तांता लगा हुआ था। मतगणना वाले दिन लोगों की भीड़ उमड़ रही थी। इंदिरा गांधी से मिलकर वे वी.वी. गिरि की जीत के प्रति आश्वस्त होना चाह रहे थे, ''गिरि जी जीत तो जाएंगे।'' किसी ने पूछा।

''अब भी कोई शक रह गया है, परिणाम आने में समय ही कितना है।'' उन्होंने जवाब दिया।

चुनाव परिणामों की घोषणा 20 अगस्त को हुई। वी.वी गिरि चुनाव जीते, लेकिन इंदिरा गांधी के उम्मीदवार की जीत से कांग्रेस की आंतरिक कलह का अंत नहीं हुआ। लड़ाई एक निर्णायक दौर में पहुंची।

''...असली संकट तो अब शुरू हुआ है...अब तुम्हीं बताओ...क्या कांग्रेस को जन संगठन होना चाहिए या मुट्ठी भर दादाओं की जोड़-तोड़ पर चलने वाला संगठन...जनतंत्र में सरकार का चुना हुआ नेता ऐसे संगठन के अधीन कैसे रह सकता है,'' परिणाम आने के दूसरे दिन पुपुल जयकर से बात करती हुई इंदिरा गांधी ने कहा, ''जो संसद के प्रति जवाबदेह नहीं है।''

''राष्ट्रपति चुनावों में सिंडीकेट की हार से अनेक सिंडीकेट समर्थक नेता और सांसद उनका साथ छोड़ने लगे हैं।''

''मैं, अपनी राजनीति तैयार करते समय इस पूरे घटनाचक्र पर

नजर रखे हुए हूं,'' इंदिरा ने कहा, ''...पुपुल डियर! निजलिंगप्पा पर कांग्रेसियों को यकीन नहीं रहा, वे अपना नया अध्यक्ष चुनने को हस्ताक्षर अभियान चला रहे हैं...।''

निर्णायक लड़ाई का समय नजदीक आ रहा था।

हार से बौखलाए सिंडीकेट ने अपना हमला शुरू कर दिया। तकनीकी कारणों का हवाला देकर निजलिंगप्पा ने जगजीवनराम और फखरुद्दीन अली अहमद को कार्यसमिति से निकाल दिया और कार्यसमिति की बैठक 25 अगस्त को तय की।

प्रधानमंत्री निवास पर इंदिरा गांधी की मीटिंग कांग्रेस के कुछ दिग्गज नेताओं के साथ हुई। इसमें जगजीवनराम, फखरुद्दीन अली अहमद के साथ सी. सुब्रमणयम भी थे। जगजीवनराम ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की, ''इन्हें कुछ-न-कुछ तो करना ही था...कांग्रेस के सफेद सिपाही जो हैं, सांसदों के हस्ताक्षर अभियान के बाद कार्यसमिति की मीटिंग बुलाना उनकी मजबूरी थी...हार जाने का खौफ सता रहा है ...इसलिए इनका निकालना भी उनके लिए एक मजबूरी थी।''

''...मेरे ख्याल से,'' इंदिरा गांधी ने अपनी राय-सी दी, ''अब वर्किंग कमेटी में जाने से कोई फायदा नहीं...''

''...मेरी राय है कि हम इस निलंबन को स्वीकार न करें,'' जगजीवनराम ने कहा, ''और वर्किंग कमेटी की मीटिंग यहीं बुलाएं ...1 सफदरजंग रोड पर...1 नवंबर को हम यहीं इसी समय मीटिंग करते हैं।''

''शायद, यही ठीक रहेगा।'' सी. सुब्रमणयम ने कहा।

''हर्ज़ क्या है? बुला ली जाए मीटिंग।'' इंदिरा ने सहमति जताई।

1 नवंबर को कार्यसमिति की दो मीटिंग हुई। एक कांग्रेस कार्यालय पर और दूसरी सफदरजंग रोड पर। दोनों में कार्यसमिति के

10-10 सदस्य उपस्थित थे। एक सदस्य के. सी. अब्राहम दोनों गुटों के बीच समझौता करने के असफल प्रयास में दोनों मीटिंगों में चक्कर लगा रहे थे। पर अब समझौते की गुंजाइश पूरी तरह से खत्म हो चुकी थी। कांग्रेस कार्यालय पर उत्तेजित कार्यकर्ताओं की भीड़ रास्ता रोके खड़ी थी और सिंडीकेट तथा निजलिंगप्पा विरोधी नारे लगा रही थी।

"निजलिंगप्पा मुर्दाबाद...मुर्दाबाद...मुर्दाबाद..." कार्यालय में अंदर घुसकर तोड़-फोड़ करने का भी दुस्साहस किया गया।

13 नवंबर को निजलिंगप्पा ने इंदिरा गांधी की प्राथमिक सदस्यता समाप्त कर दी और कांग्रेस संसदीय दल से अपना नया नेता चुनने को कहा। देश के आम लोगों में इसकी भारी प्रतिक्रिया हुई। वे कांग्रेस के पुराने स्थापित नेतृत्व को कोसने लगे। बैंकों के राष्ट्रीयकरण का भारी असर हुआ था। किसानों को बैंकों से कर्ज मिलने लगा था। हरित क्रांति के चलते कृषि उत्पादन बढ़ा था। किसानों की हालत सुधरी थी। वे इंदिरा गांधी के साथ थे।

अगले ही दिन इंदिरा गांधी ने अपने सांसदों की मीटिंग बुलाई। इंदिरा गांधी के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित करने को दोनों सदनों के अधिकांश सांसद उपस्थित थे।

दोपहर को संसद के सेंट्रल हॉल में हंगामे का माहौल पसर गया था। एक ओर सांसदों का भारी बहुमत इंदिरा गांधी के साथ बैठा था और दूसरी ओर बैठे थे मोरारजी देसाई और राम सुभग सिंह। उनके साथ थोड़े से सांसद थे। सदस्यों की गिनती हुई। दोनों सदनों के 429 में से 310 सदस्य इंदिरा गांधी के साथ थे।

नारा उभरा, "यह समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता की जीत है।"

शोर-शराबे के बीच एक और नारा उछला, "इंदिरा गांधी! जिंदाबाद, जिंदाबाद।"

इंदिरा समर्थक सांसद खुशी से बाहर निकले। नारे लगाए जा रहे

थे। एक युवा तुर्क ने सांसद ताराकेश्वरी का हाथ पकड़कर अपने खेमे में बुलाया। इंदिरा गांधी विजयी मुस्कान के साथ हाथ जोड़े खड़ी थी।

सिंडीकेट को धूल चटाने के बाद इंदिरा गांधी ने 22 नवंबर 1969 को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक का आयोजन किया। उसमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के चुने हुए 705 सदस्यों में से 404 ने भाग लिया।

मंच पर बैठे नेताओं में से हेमवती नंदन बहुगुणा ने उठकर घोषणा की, ''यहां निर्वाचित सदस्यों का विशाल बहुमत मौजूद है और सभी निजलिंगप्पा को अध्यक्ष नहीं चाहते...इनका, कांग्रेस सदस्यों का निजलिंगप्पा से विश्वास हट गया है।''

''इंदिरा गांधी जिंदाबाद...जिंदाबाद...जिंदाबाद...'' पूरा माहौल इंदिरा समर्थक नारों से गूंज उठा।

''कृपया शांत रहें।'' बहुगुणा ने कहा, तो सब शांत हो गए।

''अंतरिम अध्यक्ष के रूप में सी. सुब्रमणयम को नियुक्त किया जाता है।'' बहुगुणा ने घोषणा की।

''परंतु...'' किसी ने शंका व्यक्त की।

''परंतु क्या?'' बहुगुणा ने पूछा।

''दोनों खेमे असली कांग्रेस होने का दावा कर रहे हैं।''

''तो कोई बात नहीं, कौन असली है और कौन नकली इसका फैसला तो हो ही जाएगा, वैसे अखबार वाले तो इंदिरा खेमे के आगे 'आई' और सिंडिकेट के आगे 'ओ' लगाकर दोनों की अलग-अलग पहचान बना ही रहे हैं।''

पूर्व राजे महाराजाओं के निजी भत्ते समाप्त करने का निर्णय कांग्रेस (आई) के बंगलौर अधिवेशन में लिया गया था। इस निर्णय का महत्व आर्थिक से अधिक सामाजिक था। लोकसभा में प्रीवीपर्सेज को खत्म करने का प्रस्ताव रखते हुए इंदिरा गांधी ने कहा, ''मैं जानती हूं यह

एक नाजुक सवाल है, परंतु हमारे लिए यह पुरानी स्थितियों के अवशेषों का प्रतीक है और हमारी पार्टी समाज में बराबरी हर हालत में लाना चाहती है। प्रीवीपर्स और पूर्व राजाओं को मिलने वाले फायदों को खत्म करने के लिए संविधान में संशोधन करना जरूरी हो गया है...आजादी की लड़ाई के दौरान ये शासक और इनके मुहासिब अंग्रेजों की तरफदारी करते रहे हैं...इनमें कुछ को तो राजा अंग्रेजों ने ही बनाया था, जो असलियत में इन सुविधाओं के हकदार भी नहीं...''

विपक्ष की ओर शोर-शराबे के बीच मोरारजी देसाई ने हस्तक्षेप किया, ''...आजादी के बाद इनसे समझौता किया गया था कि अब वह वादा खिलाफी नहीं करेंगे।''

''माननीय सदस्य ने जो ऐतराज उठाया है,'' इंदिरा गांधी ने उसी लहजे में कहा, ''मैं उनसे उम्मीद भी यही कर रही थी...दरअसल, सरदार पटेल ने इन लोगों के साथ समझौता इसलिए किया था कि खून-खराबा न हो...मुझे कभी संदेह नहीं हुआ, ये लोग लड़ भी सकते थे...और अगर इन लोगों ने हथियार उठाए होते तो देशभक्त नागरिक इनके टुकड़े-टुकड़े कर देते...।''

''प्रीवीपर्सेज के साथ क्या इनकी दूसरी सुविधाएं भी वापस होंगी,'' एक सदस्य ने बीच में ही चीखते हुए दखल देकर पूछा, ''इस विधेयक से? लगता है यह विधेयक नहीं भूचाल है, इससे ऐसी प्रलय आएगी कि राजा-महाराजा और सदियों पुरानी व्यवस्थाएं इतिहास बनकर रह जाएंगी।''

''हां, सामंती प्रथाएं अब इतिहास की कथाएं बन चुकी हैं...अब राजा-महाराजा देश के दूसरे नागरिकों की तरह ही रहेंगे...अब तक ये पानी और बिजली के बिल नहीं देते थे, जो गरीबों को चुकाने पड़ते थे ...जबकि गरीबों के पास पैसा न होने से बिना इलाज के उन्हें अपनी जान गंवानी पड़ती है...हां! अब उनको वे सहूलियतें और रियायतें नहीं मिलेंगी, जो अब तक मिलती रही हैं...।''

इंदिरा के इतना कहते ही सांसदों ने मेजें थपथपाकर उनकी बात

का स्वागत किया। इंदिरा गांधी के चेहरे पर विजय की मुस्कान थी।

''हालात पेचीदा होते जा रहे हैं। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा विधेयक को अस्वीकार कर दिए जाने के बाद संसद में इसे दोबारा पारित करने के लिए संविधान में संशोधन किया जाना,'' पुपुल जयकर ने कहा, ''और इसके लिए लोकसभा के दो तिहाई बहुमत का होना जरूरी है।''

''परंतु मेरे लिए चिंता का विषय केवल यह नहीं है।'' इंदिरा का कहना था।

''तो फिर?''

''...मेरी फिक्र यह है कि खबरें फैल रही हैं...दैट आर्मी इन स्टेजिंग ए कूप...उधर पूर्वी पाकिस्तान से रिफ्यूजी लगातार आ रहे हैं।''

''मुझे तो आर्मी टेक ओवर की खबरें अफवाहें लगती हैं,'' पुपुल ने सुझाव दिया, ''इंदिरा जी आपको जनरल को बुलाकर खुद बात करनी चाहिए।''

''हां, बुलाना तो होगा ही।''

''जनरल साहब!,'' इंदिरा ने सीधे-सीधे सवाल किया, ''आप सियासत में आना चाहते हैं क्या?''

''नहीं!'' जनरल मानेक शा ने बिल्कुल सहजता से साफ शब्दों में कहा, ''प्राइममिनिस्टर! आपको पता ही है मेरी कोई सियासी ख्वाहिश नहीं है।''

''तो फिर मैं यह क्या-क्या सुन रही हूं?''

''मुझे नहीं पता आप क्या-क्या सुन रही हैं, लेकिन आपको मुझ पर भरोसा करना चाहिए, अगर नहीं तो कोई दूसरा आदमी तलाश कर लीजिए। आपके बहुत से दुश्मन हैं और आपको परेशान करने की ऐसी अफवाहें गढ़ते ही रहते हैं।''

''ठीक है, तुम अपना काम करते रहो।''

मंत्रिमंडल की औपचारिक बैठक में अन्य सदस्यों के साथ जगजीवनराम और एच.आर. गोखले भी थे।

"सारी स्थिति का जायजा लेने के बाद इंदिराजी चौदह महीने सत्ता में बनी रह सकती हैं।" एच.आर. गोखले ने कहा, "इससे ज्यादा नहीं।"

"लेकिन हमने जो तय किया है," इंदिरा ने कहा, "वह काम पूर्ण बहुमत के बिना नहीं हो सकता, प्रीवीपर्सेज को खत्म करने के लिए पक्का कानून बनाना है...इसलिए जनता के पास चलते हैं।"

"जनता के पास तो चलना ही होगा।" जगजीवनराम ने सहमति व्यक्त की।

"कम्युनिस्ट पार्टी के अलावा," एच.आर. गोखले ने कहा, "सारे विरोधी दल हमारे खिलाफ एकजुट हो गए हैं।"

"हम इसीलिए तो जनता के पास जा रहे हैं...," इंदिरा ने दृढ़ता से कहा, "देखना है कि जनता सदियों से चली आ रही राजशाही और सामंती रीति-रिवाजों, परंपराओं को पसंद करती है या समाजवादी रास्ते पर चलकर आगे बढ़ना चाहती है...मेरा यकीन है, आम जनता उन्हें कभी कबूल नहीं करेगी...अब जो आम चुनाव होंगे वे चुनाव नहीं आंदोलन होगा..." और फिर थोड़ी रुककर मंत्रियों के चेहरों को पढ़ते हुए इंदिरा गांधी ने कहा, "आप लोगों की राय से मैं राष्ट्रपति जी से संसद भंग करने और नए चुनाव कराने की मांग कर रही हूं...।"

"हां यही ठीक रहेगा।" जगजीवनराम ने कहा।

27 दिसंबर 1970 को राष्ट्रपति ने लोकसभा भंग करके नए चुनावों की स्वीकृति दे दी।

जनवरी से मार्च 1971 तक इंदिरा ने जबरदस्त चुनाव अभियान चलाया। सात सप्ताह तक वह प्रतिदिन 18-18 घंटे तक यात्रा करतीं,

चुनावी सभाओं को संबोधित करतीं और जनता को बतातीं कि वे क्या करना चाहती हैं और निहित स्वार्थ एवं उनकी राजनीतिक पार्टियां किस तरह से उनके प्रयासों को विफल करने में लगी हैं। गाय-बछड़े के चुनाव चिन्ह वाली इंदिरा गांधी का नारा था, 'गरीबी हटाओ।'

चार प्रमुख विरोधी दलों कांग्रेस (ओ), जनसंघ, स्वतंत्र पार्टी और संयुक्त समाजवादी पार्टी ने मिलकर महागठन बनाकर नारा दिया, 'इंदिरा हटाओ।'

एक विशाल चुनावी जनसभा को संबोधित करने के बाद जब वह मंच से उतर रही थीं, तो एक पत्रकार ने पूछा, "इन चुनावों का मुद्दा क्या है?"

चलते-चलते उन्होंने तपाक के उत्तर दिया, "मैं ही हूं मुद्दा।"

"मतलब!"

"उद्योगों का राष्ट्रीयकरण हमारी कार्यसूची में नहीं है...हमारा मकसद मुल्क में जनतांत्रिक तौर-तरीकों से समाजवादी व्यवस्था विकसित करना है, जो बेहतर सिद्ध हो सकेगा..." और फिर हंसते हुए कहा, "हमारे विरोधी कहते हैं, इंदिरा हटाओ। मुल्क के सामने असली समस्या है...गरीबी...इसलिए मैं कहती हूं गरीबी हटाओ।"

पूरा चुनाव अभियान इसी नारे के इर्द-गिर्द चलने लगा। सही में ही यह आम चुनाव नहीं जन आंदोलन बन गया था।

चुनाव परिणाम अप्रत्याशित थे, इंदिरा गांधी के लिए भी। उनको लोकसभा की 518 में से 352 स्थानों पर सफलता मिली। जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी जैसी दक्षिणपंथी पार्टियों की सांसद संख्या 80 के मुकाबले 30 रह गई। संगठन कांग्रेस कुल 16 सीटों पर जीत पाई।

विरोधी पिट चुके थे। अपने दो तिहाई बहुमत के साथ स्थिति पर अब इंदिरा गांधी का पूरा नियंत्रण था।

जिस समय भारत अपने चुनावी महाभारत के दौर से गुजर रहा

था, भारत के पूर्वी सीमाओं के पार पूर्वी-पाकिस्तान में तबाही के बादल उमड़ रहे थे।

इंदिरा गांधी अभी अपनी विजय की खुशी पूरी तरह मना भी नहीं पाई थी–गंभीर चुनौती सामने थी। 18 मार्च को अर्थात शपथ ग्रहण के तत्काल बाद उन्होंने एल.के. झा को बुलाकर पूर्वी पाकिस्तान की स्थिति पर चर्चा की, "सुना है पूर्वी पाकिस्तान में जनता पर कहर बरपाया जा रहा है।"

"आपने सही सुना है मैडम, याहिया खां के नेतृत्व में पाकिस्तानी प्रशासकों के अत्याचार से पीड़ित लोग हिंदू और मुसलमान दोनों भारी संख्या में हमारे उत्तरी-पूर्वी राज्यों में आ रहे हैं...थोड़े समय बाद बरसात शुरू होने पर आर्थिक समस्याएं बढ़ने के साथ बीमारियां भी फैल सकती हैं...भारत पर बोझ बढ़ता जा रहा है..."

"हमें क्या करना चाहिए?"

"हमें युद्ध भी करना पड़ सकता है...ऐसी स्थिति में विश्व जनमत बनना चाहिए।"

"तुम राजदूत बनकर अमरीका चले जाओ।"

"मैडम! मैं कूटनीतिज्ञ नहीं हूं, मैं कैसे कर पाऊंगा...वैसे भी वहां जो मेरे दोस्त हैं, वे डेमोक्रेटिक पार्टी के साथ हैं, जो सत्ता में नहीं हैं।"

"...आप वहां के बुद्धिजीवी समुदाय के लोगों को अच्छी तरह जानते हैं...हैनरी किसिंगर आपके दोस्त हैं...आप स्थिति को संभाल सकते हैं...आप चले जाइए...जरूरी हुआ तो वहां मैं भी आऊंगी...।"

हालात दिनों-दिन बदतर होते जा रहे थे। पाकिस्तानी सेना के अमानुषिक रोंगटे खड़े कर देने वाले अत्याचार बढ़ रहे थे। शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में जनता का प्रतिरोध तेज हो रहा था। उधर भारत के विस्थापितों की संख्या में दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ोतरी हो रही थी। युद्ध का वास्तविक खतरा बढ़ रहा था। इंदिरा गांधी ने

मंत्रिमंडल की बैठक की और सेनाध्यक्ष जनरल मानेक शा को बुलाया और उनको कहा, ''मुझे असम, पं. बंगाल, त्रिपुरा और मणिपुर से अभी-अभी समाचार मिले हैं। वहां रिफ्युजियों के रेले-के-रेले आ रहे हैं ...उन्हें रोकना होगा...जरूरत समझो तो पूर्व पाकिस्तान में कूच करो ...पर इनको रोकना ही है।''

''प्राइममिनिस्टर! आप जानती हैं...इसका मतलब है युद्ध...''

''ठीक है अगर युद्ध लड़ना ही पड़ता है तो...''

मानेक शा सोच में पड़ गए। चिंतित होते हुए उन्होंने कहा, ''मानसून आने वाला है...फौजों का मूवमेंट केवल सड़कों से हो सकता है...जमीन गीली होगी, दलदली हो जाएगी...वायु सेना काम कर नहीं सकेगी...मेरे हाथ बंधे रह जाएंगे, इन हालात में हम लड़ाई नहीं जीत सकते।''

''भारतीय सेना का फैलाव क्या कम है?''

''युद्ध के लिए टुकड़ियों को एकत्र कर उनको प्रशिक्षण देने में डेढ़ महीना लगेगा और फिर पाकिस्तान के समर्थन में चीन सामने खड़ा है, अगर उसने अल्टीमेटम दे दिया तो हम क्या करेंगे...?''

''ठीक है मंत्रिमंडल की बैठक कुछ समय के लिए स्थगित कर देते हैं, मगर तुम यहीं रुको।''

मंत्रियों के चले जाने के बाद मानेक शा ने कहा, ''मैडम, मैंने जो कहा वो अगर बुरा लगा तो मैं अपना इस्तीफा दे देता हूं...लेकिन जो हालात हैं, उनमें जो सच्चाई है मैं वही कहूंगा।''

''मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।''

''हालात पेचीदा और गंभीर हैं।''

''हमें समस्याएं चारों ओर से घेर रही हैं।''

अपने निजी सचिव पी. एन. हक्सर के परामर्श से इंदिरा गांधी ने मई के तीसरे हफ्ते में उत्तर पूर्वी राज्यों में जाने का कार्यक्रम बनाया और

सोवियत संघ तथा अमरीका जाने का भी।

हक्सर के सुझाव पर वह पहले अमरीका और फिर सोवियत संघ जाने को सहमत हुई।

"युद्ध टाला नहीं जा सकता।" उन्होंने गृह सचिव से देश की आर्थिक और खाद्यान्न की स्थिति पर चर्चा की।

गृह सचिव आई.जी. पटेल ने उन्हें आश्वस्त किया, "देश के पास विदेशी मुद्रा और खाद्यान्न के इतने भंडार हैं कि पांच छः महीने कोई दिक्कत नहीं आएगी।"

उत्तर-पूर्वी राज्यों के दौरे से लौटने के बाद इंदिरा गांधी ने संसद में वहां के शरणार्थी शिविरों और उनमें रह रहे तीन लाख से अधिक विस्थापितों की स्थिति के बारे में रिपोर्ट प्रस्तुत की, "इतिहास में आज तक इतने छोटे अरसे में इतना बड़ा पलायन नहीं देखा गया...ये लोग शरणार्थी नहीं बल्कि युद्ध पीड़ित हैं। पाकिस्तानी फौजों की बर्बरता और उनके आतंक से बचने के लिए इन्होंने हमारी सीमाओं में शरण ली है...इस इलाके में जो इमारतें खाली कराई जा रही थीं, करा ली गई हैं और अब तक ऐसे 335 कैंप लगा दिए गए हैं...।

"दुनिया के लोगों को हालात से वाकिफ कराने के लिए हमने अपने प्रतिनिधि भेज दिए हैं। जो विदेशी प्रतिनिधि यहां हैं, उनको हालात की जानकारी दे दी गई है...संयुक्त राष्ट्र संघ से अपील की है कि वह मुनासिब कार्रवाई करे।"

"भारत को एक स्वतंत्र देश के रूप में बांग्लादेश को तुरंत मान्यता दे देनी चाहिए।" एक सदस्य ने खड़े होकर अपनी राय प्रकट की।

"ऐसे गंभीर मौके पर हम सरकार के तौर पर जितना कम कहें उतना अच्छा होगा...जब तक पूर्वी पाकिस्तान की जनता आजाद नहीं हो जाती, हम मान्यता कैसे दे सकते हैं?," इंदिरा ने कहा, "हम

अंदरूनी और बाहरी स्थितियों पर निगाह रखे हुए हैं। शरणार्थियों की समस्या अंतर्राष्ट्रीय है...हमने दूसरे देशों से अपील की है कि इस बोझ को सभी मिलकर उठाएं, हमारी मदद करें...।''

''क्या हम कटोरा लेकर विदेशों से भीख मांग रहे हैं,'' एक सदस्य ने व्यंग्य करते हुए कहा, ''यदि नहीं तो...हम क्या कर रहे हैं?''

''...मुझे भीख मांगने की आदत नहीं है...मैंने कभी भीख नहीं मांगी...और मेरा इरादा भी नहीं है...।''

''अंतर्राष्ट्रीय स्थिति और खासतौर पर अमरीका सरकार का रुख साफ होता जा रहा है,'' एक सदस्य ने कहा, ''राष्ट्रपति निक्सन पूरे तौर पर पाकिस्तानी शासकों के साथ हो गए हैं। आखिर चीन और अमरीका की दोस्ती कराने में पाकिस्तान ने बड़ी भूमिका निभाई है।''

''ठीक है मैं यह सब जानती हूं,'' इंदिरा ने कहा, ''अमरीकी सरकार के साथ बाहर से बुद्धिजीवियों द्वारा बात की जा सकती है।''

''बात करेगा कौन?'' पुपुल जयकर ने पूछा।

''तुम जा सकती हो,'' इंदिरा ने कहा, ''तुम मेरी ओर से यह वादा कर सकती हो कि एक साल के भीतर भारत की धरती पर एक भी शरणार्थी नहीं बचेगा...।''

''अमरीका और अन्य अनेक पश्चिमी देशों का रुझान पाकिस्तान की ओर बढ़ता जा रहा है। वे खुलेआम पाकिस्तानी हुक्मरानों का समर्थन और सहायता कर रहे हैं।''

''मैं जानती हूं, तभी तो मैंने सोवियत संघ के साथ 20 वर्षों के लिए शांति, मैत्री और परस्पर सहयोग की एक महत्वपूर्ण संधि की है।''

''इससे हमें क्या लाभ होगा?'' एक सदस्य ने पूछा।

''संधि में प्रावधान है कि यदि कोई देश भारत पर हमला करता है, तो सोवियत संघ हमारी सहायता करेगा।''

सदस्यों ने इस जानकारी का जोरदार स्वागत किया।

''यह संधि अमरीकी दादागीरी का जवाब है और पाकिस्तान को राह दे रहे चीन को चेतावनी।'' एक सदस्य ने हर्ष के साथ कहा।

4 अक्टूबर 1971 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी यूरोप और अमरीका की विदेश यात्रा पर निकल पड़ीं।

लंदन में भारतीय समुदाय के लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, ''भारत अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिए वो हर मुमकिन कदम उठाएगा जो जरूरी होते हैं, दूसरे देश चाहे कुछ भी कहें। मैं चाहती हूं कि विश्व जनमत को पाकिस्तान सरकार पर दबाव डालना चाहिए कि वो शेख मुजीबुर्रहमान से बात करे और समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाए।''

''सीमाओं को तनावमुक्त करने के लिए भारत दोनों तरफ संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षकों को तैनात करने के संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव को स्वीकार क्यों नहीं कर लेता,'' बी.बी.सी. के संवाददाता माइकल चार्ल्सटन ने पूछा, ''भारत को धैर्य से काम लेना चाहिए...।''

''जनाब! क्या कत्लेआम रुक गया है, क्या बलात्कार रुक गए हैं? आपके सवाल का मतलब क्या यह है कि कत्लेआम जारी रहें? क्या आप जाति संहार का समर्थन करते हैं? आपके सवाल का अर्थ यह है कि पहले इससे भी बुरी हिंसा होती रही है। जब हिटलर तबाही मचा रहा था, तब क्या आप चुप रहे थे...यहूदियों को मरने दो। आप लोगों को कैसे रोकेंगे, जो जान बचाने को भागकर आ रहे हैं...? अगर दुनिया के लोग उठ खड़े हुए होते तो क्या उनका यहां आना रुक नहीं जाता?''

गुस्से से तमतमाती इंदिरा के प्रश्नों का पत्रकार के पास कोई उत्तर नहीं था।

विदेश यात्रा से वापस लौटकर इंदिरा गांधी कलकत्ता यात्रा पर थी। पाकिस्तान ने सारी दुनिया को इस बात का यक ीन दिलाने का प्रयास किया था कि भारत ने 3 दिसंबर 1971 के दिन अपराह्न 3 और 4 बजे के बीच ज मीनी और हवाई हमले करके युद्ध की शुरुआत की,

जबकि सच्चाई यह है कि पाकिस्तान ने ही उसी दिन 5:40 बजे भारत के हवाई क्षेत्रों और उसकी सीमा पर तैनात रक्षाबलों पर हमला करके युद्ध का बिगुल बजाया। इस तथ्य से कि प्रधानमंत्री, रक्षामंत्री और वित्त मंत्री उस दिन दिल्ली से बाहर थे और विदेशों से आयी ज मीनी ख़बरों से भी इस सच्चाई की पुष्टि हो गई कि वह पाकिस्तान ही था, जिसने पहले भारत पर हमला किया, और इससे पाकिस्तान के झूठ को मारने में मदद मिली।

इंदिरा कलकत्ता में पत्रकारों से बातचीत कर रही थी कि उसे जानकारी मिली : आठ हवाई अड्डों पर पाकिस्तानी वायुसेना ने हमला कर दिया है। इंदिरा गांधी थोड़ी ही देर में 3 दिसंबर 1971 को ही दिल्ली रवाना हो गई और उसी रात उन्होंने मानेक शा को बुलाकर आदेश दिया, ''सैम! ईस्ट बंगाल को आजाद कराने के लिए हमला बोल दो।'' मानेक शा की ओर दृढ़ता से देखते हुए कहा, ''सैम! अब तुम रोजाना नाश्ता मेरे साथ करोगे और रोजाना रिपोर्ट देते रहोगे।''

महत्वपूर्ण और अति आवश्यक राजकीय मामलात पर फ ौरन ध्यान देना ज रूरी था। आपात स्थिति की घोषणा की जानी थी। ताकि युद्ध के हालात की मांग की आपूर्ति के लिए चीज ें वांछित रफ़्तार से गति कर पाती। रात्रि 11:00 बजे राष्ट्रपति वीवी गिरि ने आपातकाल के घोषणा पत्र पर दस्तख़त किये। श्रीमती गांधी ने आधी रात के बाद राष्ट्र के नाम संदेश जारी किया,

''मैं आपसे हमारे देश और हमारी जनता के लिए एक महान संकट के पल में बात कर रही हूं। 3 दिसंबर को शाम 5:39 बजे के फ ौरन बाद पाकिस्तान ने हमारे ख़िलाफ पूरे पैमाने पर युद्ध की घोषणा कर दी। पाकिस्तानी वायुसेना ने अमृतसर, पठानकोट, श्रीनगर, अवंतीपुर, उत्तरलाई, जोधपुर, अंबाला और आगरा के हमारे हवाई क्षेत्रों पर हमले किये। उनकी थल सेनाएं सुलायमान की, खेमकरन, पुंछ और दूसरे सेक्टरों में हमारी रक्षा पंक्तियों पर बमबारी कर रही है।

''पिछले मार्च से हम पर सबसे बड़ा बोझ आन पड़ा है और हमने

भारी दबाव झेले हैं, दुनिया से इस आशय का अनुरोध करने में कि वह शांतिपूर्ण समाधान तलाशे और समूची जनता का नरसंहार रुकवाये, जिसका दोष सिफ ́ इतना है कि उसने लोकतंत्र के लिए वोट दिया है। लेकिन दुनिया ने मूल लक्ष्य की उपेक्षा कर दी और सिफ ́ कुछ परिणामों पर ध्यान दिया।

''हालात का बिगड़ना तय था और साहसी स्वाधीनता सेनानियों के दस्ते उन मूल्यों की रक्षा में अपना सबकुछ दांव पर लगाये बैठे हैं, जिनके लिए हमने खुद भी लड़ाई लड़ी है और जो हमारी जीवन शैली का आधार है।

''बांग्लादेश की जंग आज भारत के ख़िलाफ जंग बन गयी है, इसने मुझ पर, मेरी सरकार पर और भारत की जनता पर भारी बोझ डाल दिया है। हमारे पास अपने देश को युद्ध में झोंक देने के सिवा दूसरा कोई विकल्प नहीं है। हमारे बहादुर अफ सरान और हमारे जवान अपनी-अपनी जगहों से देश की रक्षा में आगे बढ़ चुके हैं। भारत-भर में आपात स्थिति की घोषणा कर दी गयी है। हर आवश्यक क दम उठाए जा रहे हैं और हम हर संभावित स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारी जनता की साझा इच्छा यही है कि इस विद्वेषपूर्ण और अकारण हुए हमले को निर्णायक और अंतिम रूप से पीछे खदेड़ दिया जाए। सरकार को पूरा यकीन है कि इस संकल्प की पूर्ति में उसे सभी राजनीतिक पार्टियों और जनता का पूरा समर्थन मिलेगा। हमें लंबे समय तक कठिनाइयों का सामना और त्याग करने के लिए तैयार रहना होगा।

''हम शांतिकामी लोग हैं, लेकिन हम यह भी जानते हैं कि अगर हम अपने लोकतंत्र और जीवनशैली की रक्षा नहीं करेंगे, तो शांति चिरस्थायी नहीं रहेगी। इसलिए आज हमें न सिफ ́ भौगोलिक एकता की रक्षा के लिए, बल्कि उन मूल आदर्शों की रक्षा के लिए भी लड़ना होगा, जिन्होंने इस देश को शक्ति प्रदान की है और जिनकी नींव पर बेहतर भविष्य की दिशा में हम प्रगति कर सकते हैं।

"हमले का जवाब दिया ही जाना चाहिए और भारत की जनता धैर्य और दृढ़ निश्चय के साथ तथा अनुशासन व चरम एकता के साथ इसका जवाब देगी : जय हिन्द।"

पूरे देश में रेडियो पर कान लगाए लोगों ने उत्सुकता से उनका भाषण सुना। दलगत राजनीति से परे देश को एकजुट करने के लिए प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने चौधरी चरण सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी सहित विरोधी दलों के नेताओं को आमंत्रित किया।

विरोधी दलों के नेताओं के साथ स्थिति पर चर्चा करते हुए उसने बताया, "...पाकिस्तानी हमले के बाद अपनी फौजों को पूर्वी पाकिस्तान, बंगाल आजाद करने के लिए मैंने ढाका की ओर कूच करने के गुप्त आदेश दे दिए हैं...हमारी सेनाओं का मनोबल बहुत बढ़ा हुआ है और पूर्वी बंगाल में वहां के लोग हमारी सेना को अपने रक्षक मान रहे हैं।"

"इंदिरा! संकट की इस घड़ी में सारा देश आपके साथ है," चौधरी चरण सिंह ने कहा, "बेटी! अपने को अकेला मत समझना।"

"चाचा जी," इंदिरा ने कहा, "आपके रहते मैं अकेली कैसे रह सकती हूं।"

अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा, "...हम सब एक हैं...और हमारी सिर्फ एक नेता है, प्रधानमंत्री।"

घटनाचक्र तेजी से उतार-चढ़ाव के बीच चल रहा था। एक दिन सुबह नाश्ते के समय जनरल मानेक शा ने प्रधानमंत्री को युद्ध स्थिति की रिपोर्ट देते हुए कुछ मायूसी के साथ बताया, "छह सेक्टर में पाकिस्तानी सेना के हमलों से बहुत नुकसान हुआ है, जिसकी भरपाई असंभव-सी है और पश्चिमी क्षेत्र में भारत की कई सुरक्षा चौकियों पर पाकिस्तानी सेना ने कब्जा कर लिया है।"

"...लेकिन सैम! तुम हर रोज तो नहीं जीत सकते," इंदिरा गांधी ने सहजता से मुस्कराकर उत्तर दिया, "जंग में जीतने के लिए

कुछ हारना भी पड़ता है।''

''ठीक है, अच्छा चलता हूं प्रधानमंत्री जी।''

अगले दिन दोपहर तक युद्ध की स्थिति में सुधार हुआ। जनरल मानेक शा ने फोन पर सूचना दी, ''पश्चिमी क्षेत्र में भारतीय सेना ने कई जगह नए मोर्चे खोल दिए हैं...विशाखापत्तनम् बंदरगाह पर पाकिस्तानी पनडुब्बी को डुबो दिया गया है।''

इंदिरा गांधी को राहत मिली।

युद्ध अब पूरे तौर पर भारत के पक्ष और नियंत्रण में था। मुक्तिवाहिनी ने पूर्वी पाकिस्तान को स्वतंत्र बांग्लादेश घोषित कर दिया। सारे देश में मुक्तिवाहिनी पाकिस्तानी फौजों को कड़ी शिकस्त दे रही थी। बांग्लादेश अब मुक्तिवाहिनी के नियंत्रण में था। भारतीय फौजें ढाका के निकट थी।

संसद के अधिवेशन को संबोधित करती हुई प्रधानमंत्री इंदिराजी ने घोषणा की, ''बांग्लादेश को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता देने की मैं घोषणा करती हूं और मैं दुनिया के सभी मुल्कों से जो लोकतंत्र में यकीन रखते हैं और इंसानी आजादी के पक्षधर हैं, अपील करती हूं कि वे बांग्लादेश को एक आजाद मुल्क के रूप में मान्यता दें।''

घोषणा का सदन में जोरदार ढंग से स्वागत हुआ।

''बांग्लादेश में मुक्तिवाहिनी और भारतीय सेनाओं की सफलता से बौखलाकर पाकिस्तान के समर्थन में हमें डराने के लिए अमरीका ने हिंद महासागर में अपनी नौसेना के सातवें बेड़े को रवाना कर दिया है।''

''ओह! स्थिति नाजुक है,'' इंदिरा गांधी ने पूछा, ''हमारी सेना की क्या स्थिति है?''

''हमारी फौजें ढाका के बिल्कुल करीब हैं,'' मानेक शा ने बताया,

"और बांग्लादेश के बंदरगाहों पर पूरी तरह हमारा कब्जा हो चुका है।"

"जब तक सातवां बेड़ा हिंद महासागर पहुंचेगा, जिसमें छत्तीस घंटे का वक्त लगेगा, तब तक क्या इस अरसे में जनरल नियाजी से सरेंडर नहीं कराया जा सकता?"

बात चल ही रही थी कि डी.पी. धर आ पहुंचे और बीच में अपनी बात कह सुनाई, "सोवियत नेताओं से बात हो गई है...वे भी अपना बेड़ा रवाना कर रहे हैं।"

"बहुत खूब! अब बांग्लादेश को विश्व के नक्शे में बनने से कोई नहीं रोक सकेगा।"

स्वीडन की टी.वी. टीम इंदिरा गांधी का इंटरव्यू ले रही थी। तभी प्रधानमंत्री के निजी गुप्त फोन की घंटी बजी। वे फोन सुनकर निर्विकार भाव से उस टी.वी. टीम से इंतजार करने को कहकर तेजी से संसद की ओर चल पड़ी और सदन में लगभग दौड़ते हुए प्रवेश किया।

16 दिसंबर 1971, शाम के साढ़े पांच का समय था। सदन सदस्यों से खचाखच भरा था। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भावुकता भरे स्वर में घोषणा की, "...पश्चिमी पाकिस्तान की फौज ने बांग्लादेश में बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया है।"

भारी हर्षध्वनि सारे सदन में गूंज उठी।

इंदिरा ने अपनी बात जारी रखी, "आत्मसमर्पण के दस्तावेज पर पाकिस्तान की ओर से दस्तखत उसके पूर्वी कमान के लेफ्टीनेंट जनरल ए.ए.के. नियाजी ने किए हैं और हमारे जी.ओ.सी.एन.सी. लेफ्टीनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोरा ने। बांग्लादेश की सेनाओं की मौजूदगी में आत्म समर्पण स्वीकार कर लिया है...अब ढाका एक आजाद मुल्क की राजधानी है।"

सदन नारों की आवाजों से गूंज उठा।

"भारत माता की जय...बांग्लादेश की जय...भाग्यविधाता भारत

की जय..."

थोड़ा-सा रुककर इंदिरा गांधी ने कहा, "बांग्लादेश की जनता, मुक्तिवाहिनी के युवाओं की बहादुरी और समर्पण की भावना के प्रति मैं नतमस्तक हूं और भारतीय सेना के तीनों अंगों के शौर्य आज सारी दुनिया की भूरि-भूरि प्रशंसा के योग्य हैं। भारत उन शहीदों को सदा सम्मान के साथ याद करेगा...जिन्होंने मनुष्य स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन का बलिदान किया है...।

"नए राष्ट्र के राष्ट्रपिता अपने देश में शीघ्र ही उचित स्थान ग्रहण करेंगे," इंदिरा गांधी ने आशा और विश्वास प्रकट किया, "और अपने देश की शांति, समृद्धि और विकास के लिए नेतृत्व प्रदान करेंगे। अब वहां के लोग एक साथ मिलकर सोना बांग्ला का सपना साकार कर सकेंगे...हमारी शुभकामनाएं हमेशा उनके साथ रहेंगी।"

"...हमारी प्रधानमंत्री स्वयं में एक प्रेरणा स्रोत हैं," विपक्ष के वरिष्ठ सदस्य अटल बिहारी वाजपेयी ने उठकर कहा, "साक्षात दुर्गा हैं, इसलिए पूरे सदन में उल्लास और उत्साह का वातावरण व्याप्त है।"

"निस्संदेह," किसान नेता चरण सिंह ने कहा, "इंदिरा ने पाकिस्तान को ऐसा चित किया है, जिसे वह सदियों तक याद रखेगा।"

सांसदों के बीच घिरी खड़ी इंदिरा गांधी ने अपनी प्रसन्नता को अपनी मित्र पुपुल जयकर से बांटती हुई उनको बाहों में भरकर कहा, "पुपुल डियर! क्या हम शांति जीत पाएंगे (Will we win peace)"

"देश में उल्लास और उत्साह के साथ लोगों के एक हिस्से में यह भावना भी है कि बांग्लादेश का निर्माण करने के बाद अब पाकिस्तान से दूसरे मसले भी निपटा लेने चाहिए।" डी.पी धर ने इंदिरा से प्रसन्नता के साथ कहा, "इसमें देरी करना उचित नहीं होगा।"

"अर्थात?" इंदिरा ने उत्सुकता से पूछा।

"पश्चिमी पाकिस्तान पर भी हमला करना चाहिए।"

''सैम...तुम क्या कहते हो?'' इंदिरा ने जनरल मानेक शा से सलाह ली।

''प्राइममिनिस्टर! पाकिस्तानी फौज भी ट्रेंड है और आधुनिक हथियारों से लैस है...,'' मानेक शा ने दो टूक शब्दों में कहा, ''और एक शहर पर कब्जे का मतलब है कि कम-से-कम तीस हजार लोगों की लाशों पर गुजर कर ही हम लाहौर पहुंच पाएंगे और...।''

''पाकिस्तान पर हमला करो!'' संसद में अनेक सांसद यही मांग उठा रहे थे। भारी शोरगुल था।

''हमने कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया, भारत हमेशा से ही सत्य और अहिंसा का अनुगामी रहा है,'' इंदिरा ने संयत और नपे-तुले शब्दों में स्पष्ट किया, ''सारा संसार जानता है कि पूर्वी-पाकिस्तान में भारत ने युद्ध क्यों, किन हालात और उद्देश्यों के लिए किया है। और हमला करने से पहले हमने दुनियाभर के राष्ट्राध्यक्षों से पाकिस्तान को समझाने की अपील की थी कि बांग्लादेश के लोगों के साथ वह इंसानियत का सलूक करे। भारत को फौजी ताकत का इस्तेमाल मजबूरन करना पड़ा। जीत की खुशी के इस मौके पर मैं आप सबसे और सारे देश से संतुलन बनाए रखने की अपील करती हूं और स्पष्ट करती हूं कि हम और आप भी पाकिस्तान के आम लोगों के साथ दोस्ती और आपसी समझ के रिश्ते कायम रखना चाहेंगे।'' और भाषण के अंत में उन्होंने खुलासा किया, ''अपनी इसी ख्वाहिश के तहत हमने पिछली शाम अपनी सेना-नौसेना और वायुसेना को दो बजे से अपनी पश्चिमी सेनाओं पर पाकिस्तान के साथ युद्ध विराम के आदेश दे दिए हैं।'' कुछ विरोधी सदस्यों के विरोध की आवाजें इंदिरा गांधी की घोषणा के समर्थन में मेजों की थपथपाहट की जोरदार आवाजों में खो गई।

पाकिस्तान के साथ युद्ध ही नहीं, शांति बहाल करने के मामले पर भी इंदिरा गांधी अपनी सोची-समझी नीति से चल रही थीं।

पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो के साथ समझौता वार्ता करने, वह जुलाई 1972 को भुट्टो के आने से एक दिन पहले ही शिमला पहुंच गईं। वहां उन्होंने राजनिवास के उन कमरों का निरीक्षण किया, जिनमें भुट्टो और उनकी बेटी बेनजीर के रुकने का प्रबंध किया गया था। उन कमरों के लिए वह दिल्ली से फर्नीचर और वाल हैंगिंग साथ लाई थीं। जब उन्होंने देखा कि जिस कमरे में भुट्टो का मिटिंग रूम बनने जा रहा था, उसमें उनका बड़ा-सा चित्र लगा है तो वह बेहद गुस्सा हो गई, "यह चित्र किसने लगाया, हटाओ...तुरंत हटाओ इसे..."

उन्होंने बाथरूम का भी निरीक्षण किया और जब देखा कि उसमें रखा सामान ठीक-ठाक और भारत निर्मित है, तो उन्हें संतोष हुआ। उन्होंने अपने दल के साथ गए डी.पी. धर से कहा, "उनको (भुट्टो को) पता लगना चाहिए कि भारतीय अर्थव्यवस्था नागरिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही है।"

इंदिरा गांधी के नेतृत्व में भारतीय और जुल्फिकार अली भुट्टो के नेतृत्व में पाकिस्तानी प्रतिनिधिमंडल की बातचीत जुलाई 1972 को शुरू हुई। प्रारंभ में ही स्पष्ट कर दिया गया, "सबसे बड़ा सवाल यह है ...पाकिस्तान और भारत को यह तय करना है...जब दोनों मुल्कों के सामने एक-सी समस्याएं, एक-सी चुनौतियां हैं, तो क्या हम अक्सर लड़ते रह सकते हैं...जब तक आपस में हम यह तय नहीं कर लेते... हजार समझौते भी बेकार हैं...हम आपस में शांति स्थापित करने में नाकाम ही रहेंगे।...सबसे बड़ी समस्या यह है कि दोनों मुल्कों के लोग गरीबी और आर्थिक पिछड़ेपन के शिकार हैं और इनके ऊपर विदेशी ताकतें बराबर दवाव बनाए रखने की कोशिशें करती रहती हैं... ।"

पाकिस्तान के राष्ट्रपति के साथ पहले दिन की बातचीत के बाद शाम को मंत्रिमंडल की बैठक में पी. एन. हक्सर ने ब्यौरा देते हुए कहा,

"लड़ाई के बाद हमारे पास 93000 पाकिस्तानी युद्धबंदी हैं और पाकिस्तान का पांच हजार वर्ग मील क्षेत्र हमारे कब्जे में है...प्राइममिनिस्टर ने फुल और फाइनल सैटिलमेंट पर जोर दिया है, पर पाकिस्तानी लोग फुल और फाइनल सैटिलमेंट के पक्ष में नहीं..."

मंत्रिमंडल के सभी सदस्य कोई प्रतिक्रिया व्यक्त किए बगैर चुपचाप बैठे रहे।

इंदिरा गांधी ने उनको संबोधित किया, "आज चार दिन हो गए ...बातचीत अभी भी किसी नतीजे पर नहीं पहुंची है...वह कश्मीर पर बात नहीं करना चाहते...और मैं चाहती हूं और सब कुछ सुलझ जाए ...आप भी तो अपनी राय दीजिए...।"

पर जब सब खामोश बैठे रहे, तो उसने हल्की-सी झुंझलाहट के साथ कहा, "...फार गॉड सेक...कुछ तो कहिए...।"

पर किसी ने कुछ कहा ही नहीं।

इंदिरा गांधी और जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच दोनों देशों के प्रतिनिधिमंडलों से अलग लंबी बातचीत के बाद 2 जुलाई 1972 को दोनों देशों में एक समझौते पर हस्ताक्षर हो गए।

"मूल सवाल और संघर्ष के कारणों का समाधान शांतिपूर्ण उपायों से किया जाएगा और दोनों पक्ष एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता तथा राजनीतिक स्वतंत्रता के विरुद्ध धमकी देने अथवा शक्ति का इस्तेमाल करने से बचेंगे," इंदिरा ने पत्रकारों को समझौते के एक महत्वपूर्ण भाग के बारे में बताया, "सारे मतभेदों को द्विपक्षीय समझौता वार्ताओं के जरिए सुलझाया जाएगा, तथा जम्मू-कश्मीर में दोनों पक्ष उस तरफ भी स्वीकृत स्थिति के प्रति कोई पूर्वाग्रह रखे बगैर उस वास्तविक नियंत्रण रेखा का सम्मान करेंगे, जो 17 दिसंबर, 1971 को युद्ध विराम रेखा से अस्तित्व में आई है।"

दरअसल, यह द्विपक्षीयतावाद के सिद्धांत पर आधारित अनाक्रमण

संधि के समान था और इस समझौते ने संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षक दल की उपयोगिता समाप्त कर दी थी। यह भारत-पाक संबंधों में इंदिरा गांधी की एक और बड़ी उपलब्धि थी।

समझौते पर हस्ताक्षर के समय इंदिरा गांधी और जुल्फिकार भुट्टो तथा उनकी बेटी बेनजीर के साथ भारत सरकार के केबिनेट मंत्री तथा दोनों प्रतिनिधिमंडलों के सदस्य उपस्थित थे।

22 वर्षीय संजय रॉल्स-रॉयस की विश्वविख्यात कार निर्माता कंपनी में अपने प्रशिक्षण को बीच में ही छोड़ 1967 में भारत लौट आया था। उसे न तो कार निर्माण की कोई खास जानकारी थी और न व्यापार की, पर संजय भारत का ही नहीं दुनिया का सबसे बड़ा कार निर्माता बनने के सपने देख रहा था।

दिल्ली में अपने कुछ नए-पुराने दोस्तों के साथ मिलकर उसने भारत में एक छोटी कार मारुति उत्पादन करने की योजना बनाई।

13 नवंबर 1968 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी संसद से बहुत चिंतित लौटीं। अपनी मित्र पुपुल जयकर और पी. एन. हक्सर से बात करते हुए उन्होंने बताया, "संजय के मारुति प्रोजेक्ट को लेकर आज लोकसभा में हंगामा हो गया... और लोगों ने मुझ पर आरोप लगाने शुरू कर दिए हैं...बंसीलाल ने उसे फैक्ट्री लगाने को जमीन क्या दे दी... लोगों के गले नहीं उतर रही है। अगर मिलिट्री बेस हट गया तो क्या आफत आ गई...बेस खत्म तो नहीं हो गया...पुपुल अब तुम बताओ ...जब क्रोसेक फ्रीस्ट बंबई की दो गैरेज लेकर हवाई जहाज बना सकता है...तो संजय कार क्यों नहीं बना सकता?"

"संजय की योजना तो बहुत अच्छी है," पी.एन. हक्सर ने जवाब दिया, "पर इतनी बड़ी औद्योगिक परियोजना के लिए उसमें प्रोफेशनल एक्सपरटाइज की कमी है...अगर संजय कार न बना पाया तो आपकी-अपनी राजनीतिक स्थिति पर बुरा असर पड़ेगा...मारुति विपक्ष

के हाथों एक हथियार बन जाएगी...।''

कारखाने के लिए जमीन मिल जाने के बाद संजय बैंकों से कर्ज भी उसी तरह लेना चाहता था जैसे जमीन मिली थी। फिर अखबारों की सुर्खियों में संजय की मारुति योजना को घोटाला बताया गया। इसकी तुलना अमरीका के वाटर गेट कांड से की गई। पर संजय को इसकी परवाह नहीं थी। इंदिरा के साथ बातचीत के दौरान उसने कहा, ''ये सब आपकी ब्यूरोक्रेसी और आपके बूढ़े मिनिस्टर करा रहे हैं...अब फाइनेंस मिनिस्टर बैंक लोंस के लिए मेरा इंटरव्यू लेना चाहते हैं...''

''तो इसमें क्या हुआ...,'' इंदिरा ने सहजता से कहा, ''ऋण लेने के लिए हर किसी को साक्षात्कार तो देना ही होता है...।''

मारुति परियोजना से एक नई वाहन क्रांति का सूत्रपात हुआ।

शिमला समझौते का कुछ विरोधी दलों को छोड़कर लगभग पूरे देश ने स्वागत किया था। इंदिरा गांधी ने राहत की सांस ली थी। पर युद्ध ने अर्थव्यवस्था पर जो प्रभाव डाला था, उसके परिणामस्वरूप आम लोगों की जरूरतों की चीजों के भाव बेहद बढ़ गए थे। अब इन वस्तुओं का भारी अभाव था। पूर्वी बंगाल के शरणार्थियों को भोजन उपलब्ध कराने के कारण केंद्र सरकार के अनाज भंडार खाली हो चुके थे। जनता में असंतोष भड़क उठा। जगह-जगह छात्र आंदोलन और दंगे शुरू हो गए। उ.प्र. में पी.ए.सी. विद्रोह हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय छात्रों के उग्र आंदोलन के चलते बंद हो गया। पर सबसे जबरदस्त छात्र आंदोलन गुजरात के मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल के विरुद्ध था। इंदिरा गांधी समस्याओं से घिर गई थीं। गुजरात से लौटकर पुपुल जयकर ने इंदिरा गांधी को बताया, ''गुजरात में हालात बदतर होते जा रहे हैं ...वहां के छात्र आंदोलन को जयप्रकाश जी ने अपना समर्थन दे दिया है...पर अब आंदोलन की दिशा ही बदल गई है, वह अब पूरी तौर पर समाज विरोधी तत्वों के हाथ पहुंच गया है।''

“हां, मुझे यह सब समाचार मिल चुके हैं,” चिंतित-सी इंदिरा ने कहा, “वहां अब तक 103 लोग मारे जा चुके हैं और 300 घायल हो चुके हैं।”

“आप गुजरात के लिए कुछ करतीं क्यों नहीं?”

“मैं कैसे दखल दे सकती हूं...प्रदेश का मामला है?”

इस बीच सिद्धार्थ शंकर राय ने आकर खबर दी, “मैडम, प्रदेश मुख्यमंत्री चिमन भाई पटेल के इस्तीफे की मांग को लेकर मोरारजी देसाई आमरण अनशन पर बैठ गए हैं।”

“पर मैं क्या कर सकती हूं, मैं तो इस मामले में असमर्थ हूं।”

“आमरण अनशन के दौरान अगर मोरारजी चल बसते हैं...शहीद हो जाएंगे,” डी. पी. धर ने कहा, “और आपके लिए इसके सियासी नतीजे गंभीर होंगे।”

“आप कुछ करें,” पुपुल ने कहा, “आपको हस्तक्षेप तो करना ही होगा।”

“ठीक है, देखती हूं मुझे कहां तक क्या करने का अधिकार संविधान प्रदत्त है, क्योंकि उसकी सीमाओं से बाहर तो मैं जा नहीं सकती।”

18 मई 1974, लोकसभा में दोपहर के पूर्व की कार्यवाही के दौरान इंदिरा गांधी ने अपनी सीट से उठकर अध्यक्ष की अनुमति से घोषणा की, “परमाणु ऊर्जा आयोग ने राजस्थान के रेगिस्तान में पोखरण में सफलतापूर्वक परमाणु परीक्षण किया है...अब हमारे मुल्क ने भी परमाणु शक्ति बनने की दिशा में कदम बढ़ा दिए हैं।”

सांसदों ने मेजें थपथपाकर घोषणा का जोरदार स्वागत किया, आगे इंदिरा गांधी ने कहा, “हमने अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया है...पोखरण में परमाणु विस्फोट की सफलता हमारे अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम का हिस्सा है...इसे हमारे वैज्ञानिकों ने

सफलतापूर्वक अंजाम दिया है...। हम परमाणु शक्ति का उपयोग शांति और अपने विकास के लिए करेंगे।''

जून के पहले सप्ताह में बातचीत के दौरान इंदिरा गांधी ने पुपुल को बताया, ''माई डियर, मैं जून के अंत में मैक्सिको में आयोजित महिलाओं के विश्व सम्मेलन में भाग लेने जा रही हूं।''

''यह तो बहुत अच्छी बात है।''

''पर वहां मुझे क्या बोलना चाहिए?''

''अब पुरानी परंपराएं टूट रही हैं और महिलाओं के सामने नई चुनौतियां आ रही हैं, तो...''

उनकी बात को बीच में ही काटते हुए इंदिरा गांधी ने कहा, ''तुम जानती हो। शब्द के सही अर्थ में मैं कोई स्त्रीवादी नहीं हूं...मैं जब बारह साल की हुई तब तक तो मुझे पता ही नहीं थी...लड़के और लड़की में क्या फर्क होता है...अपने चचेरे भाइयों के साथ में उछलती-कूदती थी, पेड़ों पर चढ़ती थी, पतंग उड़ाती थी, लेकिन हमारे मुल्क में हर लड़की तो ऐसा नहीं कर सकती...भारत में औरतें बड़े अजीब माहौल में रहती हैं, उनको बिना वजह सताया जाता है...उनके साथ पुरुष से अलग प्रकार का व्यवहार किया जाता है,'' ...वह एक नोट पैड उठाकर लाई, और अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बोली, ''...औरतों को अब आजाद होना चाहिए...मैं चाहती हूं...एक औरत अपने आपसे आजाद हो...हमारे गांवों में औरतों की बुरी हालत है...औरत को पुरुष पर निर्भर नहीं होना चाहिए...मेरी मां बहुत ही कमजोर थीं, लेकिन अकेले खड़े होने की ताकत थी उनमें!'' फिर थोड़ी देर रुक अचानक पूछा, ''मेरी यह समस्या नहीं...मुझे महसूस ही नहीं होता कि किसी दूसरे की जरूरत है...।''

इंदिरा गांधी ने मानो अपने अतीत में खोते हुए कहा, ''मैंने पूरी जिंदगी अपने फैसले खुद लिए हैं...मैं अकेले रह सकती हूं...फिर भी

सोचती हूं कि एक औरत क्या बिना पति के और मां बने बगैर औरत कहलाने की हकदार है...?''

वह कह ही रही थी, तभी एक नौकर ने उनको एक पर्ची लाकर दी, जिसे देखकर इंदिरा गंभीर हो गई। पुपुल जाने को बढ़ी और कहा, ''ठीक है, तो अब मैक्सिको में मुलाकात होगी।''

इंदिरा गांधी ने गंभीरतापूर्वक कहा, ''यह 12 जून पर निर्भर करता है...उस दिन इलाहाबाद हाईकोर्ट से राजनारायण वाले मुकदमे का फैसला होना है।''

''तुम एक लाख वोटों से जीती हो। अब उसमें क्या हो सकता है...चिंता नहीं करनी चाहिए।''

''मुझे लग रहा है सब कुछ ठीक नहीं है...मैं इसीलिए परेशान हूं।''

''इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जगमोहन लाल सिंह ने फैसला आपके विरुद्ध कर दिया है,'' 12 जून की दोपहर को आर. के. धवन ने खबर दी, ''आपको छह वर्ष के लिए चुनाव लड़ने तथा वोट डालने के अधिकार से वंचित कर दिया है।''

हड़बड़ी में प्रतिक्रिया व्यक्त करती हुई इंदिरा ने प्रधानमंत्री कार्यालय में मौजूद सिद्धार्थ शंकर राय से कहा, ''सिद्धार्थ, मुझे फौरन इस्तीफा दे देना चाहिए।''

''जल्दबाजी में फैसला न करें।'' सिद्धार्थ शंकर राय ने कहा, ''यह सही सोच नहीं है, कुछ बुरा लगा हो तो क्षमा करें।''

''नहीं सिद्धार्थ! अब मुझे इस्तीफा दे देना चाहिए।''

पार्टी और सरकार के वरिष्ठ सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श चल रहा था कि आर. के. धवन ने इंदिरा गांधी को एक कागज लाकर दिया। कागज पर नजर डालकर इंदिरा गांधी ने कहा, ''कोर्ट ने बीस दिन का स्टे दे दिया है...।''

उपस्थित नेताओं ने राहत की सांस ली, "बीस दिन तो बहुत होते हैं, तब तक कुछ न कुछ हल निकल ही जाएगा।"

सर्वोच्च न्यायालय के स्टे के निर्णय की व्याख्या करते हुए विख्यात वकील नानी पालकीवाला ने इंदिरा गांधी को बताया, "जब तक सर्वोच्च न्यायालय की फुलबेंच आपकी अपील का निपटारा नहीं करती, तब तक आप प्रधानमंत्री बनी रह सकती हैं...संसद की कार्रवाइयों में हिस्सा ले सकती हैं...लेकिन वोट नहीं कर सकतीं।"

इधर ये बातें चल ही रही थी कि आर. के. धवन ने इंदिरा गांधी को एक चिट दी। इंदिरा गांधी उसे गौर से पढ़ने लगी। पालकीवाला उठकर चलने लगे। इंदिरा गांधी ने उनको विदा किया, "ठीक है, फिर मिलते हैं।" फिर उसने वहां मौजूद सिद्धार्थ शंकर से कहा, "...आज रामलीला ग्राउंड की आमसभा में जे. पी. पुलिस और फौज से कहने जा रहे हैं कि अगर सरकार के आदेश उन्हें गैर कानूनी लगते हैं, तो वे उनको नहीं मानें," और फिर क्रोधित होते हुए कहा, "अब ऐसे नहीं छोड़ा जा सकता। मुझे लगता है—भारत एक बच्चे की तरह है और जैसे कि कभी-कभी बच्चे से व्यवहार करते हैं ठीक ही इसे भी झकझोरना चाहिए। मुझे लगता है हमें भारत को एक बार झकझोरना पड़ेगा...।"

"संविधान की धारा 352 का अध्ययन करना होगा।" सिद्धार्थ शंकर उठ खड़े हुए।

आर. के. धवन और ओम मेहता के साथ मिलकर संजय कुछ गुप्त योजनाएं बनाने लगा। इंदिरा चिंतित-सी बैठी रह गई, लेकिन तभी संविधान संबंधित अंशों का अध्ययन करने के बाद सिद्धार्थ शंकर ने इंदिरा गांधी को बताया, "जिन हालात में लोकतंत्र को पटरी से उतारा जा रहा हो...सरकार आंतरिक आपातकाल लगा सकती है...गुजरात में कांग्रेसी विधायकों के घर जलाए जा रहे हैं, उनको इस्तीफे देने को मजबूर किया जा रहा है...बिहार की निर्वाचित विधान सभा पर भी खतरा मंडरा रहा है, इस प्रकार की घटनाओं को रोकने का रास्ता...

आपातकालीन कानून के सिवा कोई दूसरा नहीं...।"

रामलीला मैदान की अपनी रैली में जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति का आह्वान किया, "अब तो क्रांति नहीं, महाक्रांति होगी अर्थात संपूण क्रांति...मोरारजी देसाई की अध्यक्षता में एक लोक संघर्ष समिति के गठन का निर्णय लिया गया है, जिसके मंत्री राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नानाजी देशमुख को बनाने पर सहमति हुई है। यह समिति प्रधानमंत्री निवास का घेराव करने तथा सरकारी तंत्र को ठप्प करने की योजना का ऐलान करती है।"

"...इससे पहले कि ये लोग हालात बिगाड़ने में कामयाब हों," सिद्धार्थ शंकर ने सलाह दी, "हमें आपातकालीन कानूनों के तहत इनको फौरन गिरफ्तार कर लेना चाहिए।"

"हां कुछ तो करना ही होगा।"

"कुछ नहीं...सभी कुछ, अभी चलिए!"

"कहां?"

"राष्ट्रपति के पास, राष्ट्रपति से मिलकर संविधान की धारा 352 के अंतर्गत आंतरिक आपातकाल लगाने के लिए उनकी स्वीकृति प्राप्त कर लेते हैं।"

"इस मामले में मंत्रिमंडल से भी तो पूछ लेना चाहिए।"

"यह तो मंत्रिमंडल से आपातकाल लगाने के बाद भी पूछा जा सकता है।" बरुआ ने कहा।

उसी रात इंदिरा गांधी ने सिद्धार्थ शंकर के साथ मिलकर राष्ट्रपति से आपातकाल लागू करने की स्वीकृति ले ली।

आधी रात को एक ही झपट्टे में विरोधी दलों के तमाम महत्वपूर्ण नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। यही नहीं ज्यादातर अखबारों की बिजली काट दी गई और न्यायालयों पर भी ताले जड़ दिए गए।

26 जून की सुबह-सुबह मंत्रिमंडल के सदस्यों को मीटिंग के लिए बुलाया गया। सभी मंत्रियों ने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की घोषणा को चुपचाप, किसी भी नानुकर के बगैर सुन उसका अनुमोदन कर दिया।

"यह क्या मैडम?"

"सिद्धार्थ! अखबारों की बिजली नहीं काटी जाएगी और उच्च न्यायालय खुला रहेगा।" सिद्धार्थ ने उनके चेहरे की ओर ध्यान दिया, उनकी आंखें लाल और सूजी हुई थीं। मानों रातभर रोती रही हों।

सुबह न्यायालय तो खुले थे, पर बिजली कटी हुई थी। दरअसल, प्रधानमंत्री निवास में इंदिरा गांधी के अलावा आदेश देने वाला एक और केंद्र उभर रहा था।

सारा देश हतप्रभ था। टेलीविजन के सामने बैठे और रेडियो पर कान लगाए लोग इंदिरा गांधी के भाषण को सुन रहे थे। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी गंभीर मुद्रा में राष्ट्र को संबोधित कर रही थीं, "प्यारे देशवासियो! सरकार के खिलाफ एक गहरा और व्यापक षड्यंत्र रचा गया है...विघटनकारी शक्तियां खुलकर खेलने की कोशिशें कर रही हैं ...सांप्रदायिक भावनाओं को भड़काकर पूरे देश में कानून और व्यवस्था को चुनौती देने की कार्रवाइयां की जा रही हैं...

"हिंसा और नफरत का ऐसा माहौल तैयार किया गया है, जिसके नतीजे के तौर पर एक मंत्री की हत्या हो गई और एक जज की जान लेने की कोशिश की गई...।

"पुलिस और फौज को भड़काया जा रहा था कि वो सरकार के आदेश का पालन न करें...इन सब हरकतों से हमारी आर्थिक स्थिति और भी खराब हो जाती, जिसे ठीक करना मुश्किल हो जाता...इसीलिए आपात स्थिति लागू करनी पड़ रही है...

"कुछ अखबार गैर-जिम्मेदार खबरें छाप रहे थे, समाचारों को

जानबूझकर तोड़-मरोड़ रहे थे। सैंसरशिप का मकसद विश्वास का माहौल पैदा करना है...

"कुछ लोग अफवाहें फैला रहे हैं...असामाजिक तत्वों की बन आई थी...मैं आपको यकीन दिलाना चाहती हूं कि गिरफ्तार नेताओं के साथ अच्छा सलूक किया जाएगा।

"हमारा मकसद उत्पादन बढ़ाना है। पैदावार बढ़ेगी तो ज्यादा रोजगार मिलेंगे...हमारी पहली प्राथमिकता तो यह है—खेतों और उद्योगों को बिजली मुहैया हो...

"यह एकता और अनुशासन का वक्त है। मुझे यकीन है कि हर आने वाले दिन के साथ हालात सुधरते जाएंगे और शहरों व गांवों की हमारी जनता सहयोग करेगी, ताकि देश को मजबूत बनाया जा सके।"

प्रधानमंत्री कार्यालय में इंदिरा गांधी से मिलने सांसदों का आना जाना लगा हुआ था। वे उनसे कुछ कहते थे, पर इंदिरा गांधी गंभीर सोच-विचार की मुद्रा में बैठी रहती थी। कुछ जवाब नहीं देती थीं।

पुपुल जयकर के आने पर सांसदों ने नमस्कार करके विदा ली तो पुपुल ने रिपोर्ट देते हुए कहा, "मैं अभी बाहर से लौटी हूं...पूरा शहर सहमा हुआ है...मेरी समझ में नहीं आता...जवाहरलाल नेहरू की बेटी ने यह सब क्यों होने दिया?"

"क्या तुम्हें पता नहीं...," इंदिरा गांधी ने कहा, "इस दौरान हालात कितने खतरनाक बन गए थे...क्या-क्या साजिशें हो रही थीं मेरे खिलाफ।"

"साजिशें और तुम्हारे खिलाफ?"

"हां साजिशें...जयप्रकाश जी की पत्नी प्रभा जी मेरी मां की सहेली थीं...मेरे बहुत करीब थीं...पर उनके मरते ही जयप्रकाश जी सारे रिश्ते भूल गए...मेरे प्रधानमंत्री बनने को तो उन्होंने कभी एक्सैप्ट ही नहीं किया।" थोड़ी देर को चुप रहने के बाद उसने फिर कहा, "वह क्या कर सकते हैं, उन्होंने कभी जानने की कोशिश ही नहीं की।"

"इन हालात से क्या तुम लोगों को गिरफ्तार किए बिना...

इमरजैंसी लगाए बिना नहीं निपट सकती थीं?''

''इमरजैंसी कोई हमेशा के लिए थोड़े ही है, हालात सामान्य हो रहे हैं...मुल्क रास्ते पर आ रहा है।''

''क्या मुल्क पहले रास्ते पर नहीं था?''

''था, लेकिन भटक गया था, अनुशासनहीनता आ गई थी।''

''अनुशासनहीनता...''

''हां अनुशासनहीनता और अब देश में अनुशासन का एक नया माहौल पैदा हो रहा है। ट्रेनें समय से चलने लगी हैं। दफ्तरों के कर्मचारी समय से आने लगे हैं। जमाखोरी के खिलाफ उठाए गए कड़े कदमों से आवश्यक चीजों के दामों में गिरावट आई है।''

''और आगे क्या करोगी?''

''एक सप्ताह के भीतर 20 सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की जाएगी। बंधुआ मजदूरों का मुक्त कराया जाएगा, गांव की अतिरिक्त जमीनों को भूमिहीन खेत मजदूरों में बांटने का काम शुरू होगा, ग्रामीण भूमिहीनों को आवास मुहैया कराने के कदम उठाए जाएंगे।''

''इससे क्या होगा?''

''इन और ऐसे तमाम कदमों से एक नया वातावरण बनेगा।''

बीस सूत्री कार्यक्रम लागू होने के बाद कुछ लोग इमरजैंसी के समर्थन में आने लगे, विरोधी अलग-थलग पड़ रहे थे।

''15 अगस्त के भाषण के लिए कुछ सुझाव हों तो बताएं,'' इंदिरा ने पुपुल से कहा, ''ताकि देश को विश्वास में लिया जा सके।''

''जब कानून व्यवस्था नियंत्रण में है, सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है...इमरजैंसी उठा लो।''

''अभी तो नहीं...,'' फिर बात बदलते हुए इंदिरा ने पूछा, ''सुना है विख्यात आध्यात्मिक गुरु और विचारक जे. कृष्णामूर्ति का भारत आने का कार्यक्रम बन रहा है।''

"हां, बन तो रहा है," पुपुल ने बताया, "उनके प्रवचन स्वतंत्रता, मानसिक स्वतंत्रता पर केंद्रित होंगे...आजकल देश में जो हालात हैं उनमें क्या तुम उनको यह सब बोलने की अनुमति दोगी?"

"पुपुल मुझे लगता है कि मैं एकदम अकेली हो गई हूं...," इंदिरा गांधी को कोई एतराज नहीं था, "बाहर मेरे सभी दोस्त कह रहे हैं कि उनको मुझसे ऐसी उम्मीद नहीं थी," फिर कुछ रुककर, "मुल्क के अंदर तो साजिशें थी हीं...बाहर के कुछ लोग भी मुझे और मेरी फैमली को तबाह करना चाहते हैं। जब से शेख मुजीब और उनकी फैमली की हत्या हुई है...तब से मेरा यकीन और भी पुख्ता हो गया है...मुजीब साहब के छोटे बेटे की उम्र तो राहुल के बराबर थी...।"

कमरे में एक भारीपन छा गया।

पुपुल, राजीव और सोनिया सबको खामोशी ने जकड़ लिया।

भारतीय पंचांग के हिसाब से इंदिरा गांधी का 57वां जन्मदिन था। सुबह से मिलने वाले बधाइयां देने आते रहे। उनसे विदा लेकर इंदिरा गांधी जे. कृष्णामूर्ति से मिलने गई और देर से आने के लिए क्षमा मांगी।

कृष्णामूर्ति उनके हाथ को अपने हाथों में लेकर उनकी आंखों में आंखें डाले थोड़ी देर तक चुपचाप बैठे रहे और फिर कहा, "मैडम! कहीं अंदर से आप बहुत परेशान हैं...।"

"देश में पिछले अठारह महीनों से मेरे खिलाफ साजिशों का अंबार..." वह उन्हें विस्तार से बताना चाह रही थी..।

"ये सब बातें मेरी समझ से परे हैं...इन्हें छोड़ो।" कृष्णामूर्ति ने उनको एक तरफ कर दिया।

तभी इंदिरा गांधी को बेचैनी होने लगी, "मेरी बाईं आंख बुरी तरह फड़क रही है...।"

जे. कृष्णामूर्ति ने अपनी उंगलियों से इंदिरा की पलक सहलाई। आंख फड़कना बंद हो गई।

फिर इंदिरा गांधी ने अपने आप कहा, "कृष्णा जी जो हुआ है उसे मैंने अपनी खुशी से नहीं किया, अब तो मैं शेर पर सवार हूं। मुझे चिंता यह नहीं कि उतरते ही वह मुझे मार डालेगा...लेकिन मुझे यह नहीं मालूम कि उसकी पीठ से उतरा कैसे जाए।"

"लीक से हटकर चलने का आपका इरादा बड़ा पक्का है, आपको कुछ सलाह देने की आवश्यकता ही नहीं।" कृष्णामूर्ति ने उनको कोई सलाह नहीं दी।

"लोकसभा का कार्यकाल एक वर्ष के लिए बढ़ गया है," इंदिरा ने सांसदों के एक गुट से कहा, "अब आप लोगों को जनता के बीच जाकर गलत फहमियों और अफवाहों के जवाब देने चाहिए।"

"हम तैयार हैं मैडम!"

"तो फिर देर किस बात की है?"

"आपके ही संकेत का इंतजार था।"

"अब तो संकेत मिल गया ना।"

जे. कृष्णामूर्ति से मिलने इंदिरा गांधी एक बार फिर पुपुल जयकर के घर गई। उनके साथ एक घंटे तक अकेले में बात करने के बाद जब बाहर निकली, तो उनकी आंखें लाल और भरी हुई थीं...

भारत सरकार के इंटेलीजेंस ब्यूरो की रिपोर्ट पढ़कर इंदिरा गांधी हड़बड़ा गई। संजय से बात करती हुई ने कहा, "मैं इस रिपोर्ट पर यकीन नहीं करतीं।"

"क्या है रिपोर्ट में ऐसा?"

"रिपोर्ट में बताया गया है कि अगर चुनाव होते हैं, तो कांग्रेस की हार होगी।"

"इस रिपोर्ट में मुझे तो आर.एस.एस. का हाथ नजर आता है।"

"आपने क्या पूछा था उनसे?"

अपने प्रधानमंत्री आवास पर इंदिरा गांधी ने पुपुल जयकर को जे. कृष्णामूर्ति के साथ हुई अपनी बातचीत के बारे में बताया, "मैंने उनसे पूछा था...अब इन परिस्थितियों में क्या करूं? उन्होंने कोई राय नहीं दी ...जब चलने को हुई बस यह कहा, 'तुम अपने जीवन, अपने अंर्तद्वंद्व, अपने दुख और सुख, अपने पर हमले की आशंका, इन सबको केवल एक समस्या के तौर पर देखो, बिना स्वार्थ और नतीजे के, बिना किसी डर...जो तुम्हें भीतर से सही लगे वही करो..."

उनकी बात चल रही थी कि आई.बी. प्रमुख काक ने वहां प्रवेश किया और पूछा, "मैडम, मुझे क्यों याद किया गया है?"

"काक साहब!," इंदिरा ने दृढ़ता से कहा, "मैंने यह फैसला किया है कि मीसा में बंद विपक्षी दलों के नेताओं को रिहा करके फौरन चुनाव करा लिए जाएं।"

"मैं इससे सहमत नहीं," काक ने कहा, "मेरे ख्याल से विरोधियों को रिहा करने के बाद हमें माहौल के नार्मल होने तक चुनाव नहीं कराने चाहिए..."

"काक साहब, ठीक कह रहे हैं," संजय ने कहा, "लोकसभा भंग करके चुनाव कराना कतई ठीक नहीं। हालांकि मैं चुनावों के खिलाफ नहीं, लेकिन मेरी राय है...इमरजैंसी और अफवाहों से जो नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई होने दीजिए। अभी हमारे पास एक साल का वक्त है। 78 तक तो लोकसभा है ही...एक साल बाद इलेक्शन करा लीजिए।"

"नहीं, अभी चुनाव कराने होंगे।" इंदिरा गांधी टस-से-मस नहीं हुई।

'प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आज घोषणा की है कि देश में लोकसभा के चुनाव 10 मार्च 1977 में कराए जाएंगे।' 18 जनवरी 1977

को अस्पताल के कमरे में रखे एक छोटे से ट्रांजिस्टर से खबर सुनी जा रही थी।

'साथ ही आपातकालीन कानूनों में ढील देते हुए उन्होंने मीसा में नजरबंद विपक्षी नेताओं को आज ही रिहा करने के भी आदेश दे दिए हैं।'

''यह क्या सुन रहे हैं?'' जयप्रकाश नारायण ने आश्चर्यचकित होकर गंगाशरण सिंह की ओर देखते हुए प्रतिक्रिया व्यक्त की, ''इंदिरा ने बड़ा साहस दिखाया है, उसने बहुत बड़ा कदम उठा लिया।''

''कदम उठाया है, लेकिन देखना है ऊंट किस करवट बैठता है?''

''ऊंट को तो बैठना ही है, उसे कौन रोकेगा बैठने से?'' परंतु प्रधानमंत्री ने ऐसा कर दिया है कि किसी को कुछ सूझे ही नहीं।''

''मतलब!''

''इंदिरा गांधी ने हमको बस दो महीने दिए हैं।''

''हां, मुझको भी लग रहा है कि चतुर प्रधानमंत्री ने हमको फिर फंसा लिया है।''

''परंतु...'' जयप्रकाश नारायण ने स्पष्ट किया, ''विरोधी दलों के पक्ष में मैं अभियान तभी चलाऊंगा जब ये पार्टियां मिलकर एक पार्टी बना लेंगी।''

''आप ठीक सोच रहे हैं।''

23 जनवरी को चार पार्टियां—कांग्रेस (संगठन), जनसंघ, संयुक्त समाजवादी पार्टी और भारतीय लोकदल ने मिलकर एक नई पार्टी जनता पार्टी का गठन किया।

25 जनवरी को दिल्ली के रामलीला मैदान में जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में एक विशाल जनसभा हुई। लोग लाखों की संख्या में इंदिरा गांधी विरोधी नारे लगाते हुए सभा में शामिल हुए। यह रैली हवा के रुख को बता रही थी।

"भारत एक लोकतांत्रिक देश है, इसमें तानाशाही नहीं चल सकती," जयप्रकाश नारायण ने कहा, "इंदिरा ने इमरजैंसी लगाकर भारत की पहली तानाशाह बनने का इतिहास रचा है, लेकिन हम भी इतिहास रचना जानते हैं और दुनिया को दिखा देंगे कि एक तानाशाह का हश्र क्या होना चाहिए?" तालियों की गड़गड़ाहट से आसमान गूंज उठा।

इन्हीं दिनों एक दिन वरिष्ठ मंत्री जगजीवन राम इंदिरा गांधी से मिलने आए, "मैडम! मैं चाहता हूं कि इमरजैंसी पूरी तरह हटा लेनी चाहिए।"

"गृह मंत्रालय ने इस पर विचार किया है...वैसे भी बहुत से कानूनों में तो ढील दी ही जा चुकी है...।"

"लेकिन पूरी तरह तो नहीं..."

"ठीक है, मैं गृह मंत्रालय से दोबारा बात करूंगी।"

"बहुत बुरे समाचार हैं मैडम," 2 फरवरी की मंत्रिमंडल बैठक में इंदिरा गांधी को उनके निजी सचिव आर. के. धवन ने बताया, "बाबू जगजीवन राम ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया है और हेमवती नंदन बहुगुणा तथा नंदिनी के साथ मिलकर कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी का गठन कर लिया है।"

"मगर उन्होंने ऐसा क्यों किया?"

"दरअसल चुनावों की घोषणा के साथ ही संजय का ज्यादा सक्रिय होना कुछ लोगों को भा नहीं रहा है। इसी कारण कांग्रेस के बुजुर्ग नेताओं ने विद्रोह किया है।"

"यह तो बहुत बुरा हुआ," इंदिरा ने कहा, "मैं समझती हूं कि कांग्रेस के बुजुर्ग सम्मानित नेताओं पर जगजीवन राम, बहुगुणा और नंदिनी सत्पथी के त्याग पत्र का जबरदस्त असर होगा।"

"हां मैडम, विरोधियों के हौसले बढ़ गए हैं। जनता के बीच कांग्रेस की रही-सही साख को भारी धक्का लगा है।"

और जब इंदिरा गांधी वोट मांगने निकली, तो समाज के गरीब, दबे-पिसे वे लोग जो उनको सिर आंखों पर बिठाते थे, उदासीन हो गए थे।

"कैसी हो मां तुम...अपनी बेटी को पहचाना नहीं," अपनी चिरपरिचित शैली में इंदिरा गांधी ने बिहार की एक जनसभा को संबोधित कर जब मंच के नीचे नेताओं के बीच आकर बात करनी चाही तो एक बुढ़िया उनको अजीब तरह से सिर्फ देखती रही, कुछ नहीं बोली।

क्षेत्र की सांसद प्रतिभा सिंह ने जब नौजवानों से बात की, तो उन्होंने साफ शब्दों में बोल दिया, "हमने तय कर लिया है कि अबकी बार कांग्रेस को हराना है...औरतें भूल नहीं पाई हैं, सरकार के नसबंदी कार्यक्रम को।"

यह हालात बिहार या उत्तर के राज्यों के ही नहीं थे। सब जगह लहर थी–इंदिरा विरोधी लहर। हरियाणा की चुनावी सभा के दौरान भी पता लगा कि इस बार महिलाएं भी बुरी तरह से खफा हैं।

20 मार्च को जैसे-जैसे मतगणना का काम आगे बढ़ता गया, कांग्रेस की हार साफ होती गई। हार अभूतपूर्व थी : अप्रत्याशित! विरोधियों ने भी हद तक नहीं सोचा था। पूरे उत्तर भारत में, मध्य प्रदेश, राजस्थान और कश्मीर में एक-एक सीट के सिवा कहीं कुछ नहीं मिला था।

1 सफदरजंग रोड पर खामोशी छा गई थी। रात होने वाली थी। राजीव गांधी, सोनिया, पुपुल गुमसुम बैठी थीं।

इंदिरा गांधी के विरुद्ध राजनारायण की लीड बढ़ती जा रही थी।

अब वह राजनारायण से 20,000 मतों से पीछे थीं। पुपुल की ओर देखते हुए इंदिरा गांधी ने कहा, "पुपुल मैं हार गई।"

"जीत-हार तो..." कहकर वह उठकर चल दी तो राजीव गांधी आधी रात के करीब पुपुल को उनकी गाड़ी तक छोड़ने आए और उन्हें विदा देते हुए कहा, "...संजय ने मम्मी को इस हाल में पहुंचा दिया है ...मैं उसे कभी माफ नहीं करूंगा...इस सबके लिए वह ही जिम्मेदार है। हमें उसने कहीं का नहीं छोड़ा।"

"मैंने इंदू को कई बार बताया था...," पुपुल ने धीरे से कहा, "लोग संजय के बारे में क्या-क्या कहते हैं...पर इंदू ने ध्यान नहीं दिया।"

"सरकार मुझसे 1, सफदरजंग रोड़ खाली कराने पर तुली है," इंदिरा गांधी ने अचानक अपने सुरक्षा कवच के बिना पुपुल जयकर के यहां पहुंच उनसे अपने मन की व्यथा कही, "वह मार्केट रेट पर इतना किराया मांग रही है, जो मैं दे नहीं सकती।"

"स्थिति काफी गंभीर है।"

"...मोरारजी देसाई, राजनारायण सब बदला लेने पर उतारू हैं ...मेरे मंत्रिमंडल में जो मंत्री थे, उनको बुला-बुलाकर कहा गया है कि शाह कमीशन के सामने वह यह कहें कि उन्होंने कुछ नहीं किया है, उनसे तो सब कुछ इंदिरा ने जबरदस्ती कराया है, तो उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होगी..." और थोड़ी देर रुककर उसने फिर कहा, "पुपुल मैं जानती हूं उनमें से बहुत से लोग साथ छोड़ जाएंगे...।"

"...इंदू! तुम अपना हौसला बनाए रखो। तुमने सब कुछ झेला है ...वे दिन नहीं रहे तो ये भी नहीं रहेंगे..."

"नहीं पुपुल! मैं जानती हूं जनता सरकार संजय को जेल में डाल देगी, मुझे पूरा यकीन है और टोरचर करेगी।"

"यह सब इतना आसान नहीं है।"

"राजनीति में सबकुछ संभव है पुपुल।"

मई के दूसरे सप्ताह में इंदिरा गांधी, 12 विलिंग्डन क्रिसेंट के छोटे से बंगले में चली गईं। उनके पास बस एक ही कमरा था।

"निर्मला देशपांडे के जरिए विनोबा भावे ने मुझको पवनार आश्रम आने का संदेश दिया है...," बसंत साठे के साथ बात करते हुए इंदिरा गांधी ने बताया, "पर यात्रा का खर्च कांग्रेस उठाने पर सहमत नहीं ...और गृह मंत्रालय दिल्ली से बाहर सुरक्षा उपलब्ध कराने को तैयार नहीं है।"

"सुरक्षा की बात देखी जाएगी, लेकिन आपको कांग्रेस को ठीक करना ही पड़ेगा...चल चलिए पहले विनोबा जी के पास हो आते हैं।"

"लेकिन संजय पर जो मुकदमें बनाए गए हैं...अब वे लोग मेनका के पिता की मौत में भी संजय की साजिश देख रहे हैं...'किस्सा कुर्सी का' फिल्म पर मुकदमा तो चल ही रहा है।"

"संजय है कहां?"

"संजय अपने वकील मदन भाटिया और विद्याचरण शुक्ल के साथ कानूनी सलाह-मशविरा करने में व्यस्त है।"

विलिंग्डन क्रिसेंट के पिछले लॉन में इंदिरा गांधी अपने कुत्ते के साथ बैठी थीं। वहीं प्रणव मुखर्जी और शुभ्रा (गीता) मुखर्जी उनसे मिलने आईं। प्रणव संजय के साथ अंदर कमरे में चले गए।

"विपदे मोरे रक्षा करो," इंदिरा ने शुभ्रा से आग्रह किया, "गुरुदेव का यह गीत सुनने की इच्छा हो रही है।"

इंदिरा के कहते ही शुभ्रा दर्द भरे स्वर में गाने लगी थी :

विपदे मोरे रक्षा करो,
ये नहे मोरे प्रार्थना,
विपदे अभि न जेनो करि भय,

दुख तापे व्यथित चिंते,
नई वा दिले सांत्वना,
दुखे जेनो करिते पारि जय।

"गीता! इस गीत को तुम महज एक गीत मत समझना," इंदिरा ने गीत सुनकर कहा, "...इसे अपनी जिंदगी के मूलमंत्र की तरह लो ...मेरी यह बात गांठ बांध लो।" तभी प्रणव और संजय आकर बैठ गए। इंदिरा गांधी धीरे-धीरे गुनगुना रही थी :

'तोमार पताका जारे दाओ,
तारे बहिवारे दाओ शक्ति।
तोमार बेबार महान दुख,
सहिवारे दाओ भक्ति।'

इंदिरा गांधी, बसंत साठे और निर्मला देशपांडे को लेकर हवाई जहाज जब नागपुर हवाई अड्डे पर उतरा, तो बाहर अपार भीड़ दिखाई दी। सबको शंका-सी होने लगी। बसंत साठे उठकर दरवाजे पर आए और फिर जल्दी से वापस लौट पड़े, "ये भीड़ तो अपने लोगों की ही है।"

विमान से उतरते ही विशाल जनसमुदाय 'इंदिरा गांधी जिंदाबाद' के नारे लगाने लगा। बहुत-सी महिलाएं आगे आकर उनकी आरती उतारने लगी, टीका लगाया और उसे फूलों से लाद दिया।

इस बीच लगातार उनकी जय-जयकार होती रही।

आश्रम पहुंचकर इंदिरा गांधी विनोबा भावे के आगे बैठ गईं। विनोबा जी उन्हें थोड़ी देर ध्यान से देखा और फिर अपना मौनव्रत तोड़ते हुए कहा, "आगे बढ़ो...आगे बढ़ो।"

"आपका आशीर्वाद चाहिए।"

"मेरा आशीर्वाद तो बेटी! हमेशा तुम्हारे ही साथ है।"

इसी दौरान बी.बी.सी. संवाददाता डेविड फ्रोस्ट ने पवनार आश्रम में इंदिरा से पूछा, ''इंदिरा जी, सुना है संजय ने अविवाहित युवकों की नसबंदी भी करा डाली है?''

''...संजय पर हमला,'' इंदिरा गांधी उत्तेजित हो उठी, ''...संजय पर हमला, मुझ पर हमला है...नसबंदी के मामले को जान-बूझकर हवा दी गई थी...।''

''क्या आप दुखी हैं,'' डेविड फ्रोस्ट ने फिर सवाल किया।

''इसको कोई पसंद नहीं करता, लेकिन जब उसका सामना करना पड़ता है तो किया जाता है।''

''आप चिंतित हैं?'' डेविड फ्रोस्ट ने एक और सवाल दागा।

''जीवन इतना आसान और सुखद नहीं...मुझे नहीं पता कि जनता सरकार मुझे कटघरे में खड़ा करेगी या नहीं?''

''क्या आपको जेल जाने से डर लगता है?''

''बिलकुल भी नहीं...मैं जेल जा चुकी हूं, लेकिन यह कोई ऐसी चीज नहीं जिसे कोई पसंद करे।''

लौटने के बाद इंदिरा अपने वकीलों और सलाहकारों के साथ शाह जांच आयोग के लिए तैयारी में जुट गई। तभी जुलाई में उन्हें बिहार में बिहारी शरीफ के एक गांव बेलछी में ऊंची जाति के लोगों द्वारा दलितों के परिवारों पर हमला किए जाने की खबर मिली।

बिहार के दो पूर्व सांसद भीष्म नारायण सिंह और प्रतिभा सिंह ने इंदिरा गांधी को दिल दहला देने वाली इस घटना का विवरण दिया, ''कई दलित परिवारों की निर्ममता से हत्या कर उन्हें आग की लपटों के हवाले कर दिया गया है। इनमें कई छोटे बच्चे भी थे।''

''हे भगवान!''

''सारा इलाका आतंकित है...सब डरे और सहमे हुए हैं...''

''मुझे तत्काल बेलछी जाना होगा।''

"बिहार में कांग्रेस का एक भी सांसद नहीं जीता है...," प्रतिभा सिंह ने कहा, "वहां के लोग हमारे खिलाफ रहे हैं...सुरक्षा की दृष्टि से आपका वहां जाना उचित नहीं होगा।"

"चुनाव अलग चीज है, दलित परिवारों पर उन मुसीबतों का जो पहाड़ टूटा है...उन्हें महसूस करना चाहिए...कोई तो उनके साथ है...मैं जाऊंगी।"

दोपहर के बाद का समय था। भीष्म नारायण सिंह, प्रतिभा सिंह, निर्मला देशपांडे और भारी संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के बीच इंदिरा गांधी एक बरामदे में खड़ी थी। बाहर तेज बारिश हो रही थी।

प्रतिभा सिंह ने कहा, "ऐसी बारिश में बेलछी जाना मुमकिन नहीं लगता।"

"बारिश की वजह से सारी सड़कें टूट गई हैं...," भीष्म नारायण सिंह ने समर्थन किया, "रास्ते बंद हैं...लोग बता रहे हैं कि नदी पूरे उफान पर है। नाव से नदी पार नहीं की जा सकती।"

"यहां तक पहुंचकर अब लौटा भी नहीं जा सकता...सूरज छिपने से पहले मुझे बेलछी पहुंचना ही है...।"

अंधेरा होने वाला था। दिन ढल रहा था। इंदिरा गांधी उफनती हुई नदी को एक हाथी पर सवार होकर पार कर रही थी। नदी का पानी हाथी के सीने को छूता हुआ तेजी से बह रहा था।

जले हुए मकान, भूखे बिलखते हुए लोग, रोते हुए बच्चे। आतंक का माहौल। इंदिरा गांधी पीड़ितों के परिवार से मिली। उनको सांत्वना दी। एक पीड़िता के आंसू पोंछते हुए बोली, "मैं तुम्हारे साथ हूं, जो बन सकेगा करूंगी। अपने को अकेला मत समझना।"

"मैडम..." आगे पीड़िता कुछ न कह सकी और घिग्गी बांधकर रोने लगी।

इंदिरा को लौटते-लौटते रात हो गई थी। साढ़े दस बजे थे। सड़क पर आसपास के ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा थी। ढोल-नगाड़ों के साथ वे 'इंदिरा गांधी जिंदाबाद' के नारे लगाए जा रहे थे। लालटेनों, हंडों और टार्चों की रोशनी में औरतों का एक झुंड उनके पास आया। औरतें कह रही थी, "हमने आपको वोट नहीं दिया...हमने आपके साथ धोखा किया, हमें माफ कर दो...।"

इंदिरा गांधी के पास आकर औरतें उनकी प्रशंसा में गीत गाने लगी, फूलमालाएं पहनाईं और थाल में सजाकर लाया हलवा-पूरी खिलाया, कुछ लोगों ने पैर छूए और महिलाओं ने हाथ चूमा।

वापस दिल्ली लौटते हुए इंदिरा गांधी एक रात को सदाकत आश्रम जयप्रकाश नारायण के घर रुकी और जयप्रकाश नारायण से भेंट की, जो बीमार थे, "कैसे हैं आप?"

"जितना बीमार देश है, उतना ही मैं भी हूं।"

"बीमारी का उपचार तो करना ही होगा।"

"हां, उपचार बिना स्वास्थ्य संभव नहीं, लेकिन मेरी बूढ़ी हड्डियों में तो अब इतना दम नहीं रहा कि कुछ कर सकूं।"

"काफी कमजोर हो गए हैं आप।"

"बिल्कुल अपने देश की तरह..." उन्होंने फिर कहा, "बेलछी हत्याकांड और दलितों की मुसीबतों को तो तुम खुद देख चुकी हो, अब कुछ करो वरना देश हाथ से..."

"नहीं...मैं अपने देश को कुछ नहीं होने दूंगी।" कहते हुए जब इंदिरा ने विदा ली, तो जयप्रकाश नारायण उनको विदा करने दरवाजे तक आए और बोले, "मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।"

शाह आयोग ने अपनी सुनवाइयां अभी शुरू की ही थी कि 3 अक्टूबर 1977 को सी.बी.आई. अधिकारी एन.के. सिंह के साथ एक

पुलिस दल, 12 बिलिंग्डन क्रिसेंट आ धमका।

इंदिरा गांधी अपने वकील मदन भाटिया के साथ लॉन में बाहर आई तो एन.के. सिंह ने आगे बढ़कर अपना परिचय पत्र दिखाते हुए कहा, ''...मुझे आपको गिरफ्तार करने का आदेश मिला है और गिरफ्तारी के बाद निजी मुचलके पर छोड़ने का भी...।''

''किस जुर्म में?'' इंदिरा गांधी ने पूछा, ''पहले एफ.आई.आर. की कॉपी दीजिए और वारंट दिखाइए।''

इस बीच वहां यूथ कांग्रेस कार्यकर्ताओं की भीड़ जमा हो गई। वे 'मोरारजी विरोधी और इंदिरा गांधी जिंदाबाद' के नारे लगाने लगे, अखबारों के संवाददाताओं और फोटोग्राफरों का जमघट हो गया था। इंदिरा गांधी के समर्थक भारी संख्या में पहुंच गए थे।

शाम के लगभग आठ बजे इंदिरा गांधी हरे बार्डर की सफेद साड़ी पहनकर बाहर आई। तब तक निर्मला देशपांडे पुलिस गाड़ी में बैठ चुकी थी। गाड़ी में बैठने से पहले इंदिरा गांधी ने प्रणव मुखर्जी को एक ओर ले जाकर कहा, ''प्रणव मैं इन बच्चों को तुम्हारे भरोसे छोड़े जा रही हूं...तुम इनकी देखभाल करना...।''

''मुझे कल गुजरात के आदिवासियों के बीच होना था...,'' गाड़ी में बैठने से पहले पुलिस की गाड़ी की छत पर खड़ी होकर इंदिरा ने कहा, ''...प्रेस से मेरी गुजारिश है कि गुजरात के लोगों के बीच न पहुंच पाने की मेरी मजबूरी उन्हें बता दें...और आप भी सुनें...मैंने अपने देश और आम आदमी की सेवा अपनी पूरी क्षमता से करने की कोशिश की है, कोई बात नहीं जो मेरे ऊपर आरोप हैं या मढ़े जाते हैं...मेरी यह गिरफ्तारी राजनीतिक है...।''

बड़खल मोड़ पर रेलवे फाटक बंद था। पुलिस उनको हरियाणा ले जा रही थी। कारों का काफिला रुक गया। इंदिरा गांधी कार से उतरकर पास की पुलिया पर बैठ गई। बैरिस्टर मदन भाटिया दौड़कर

उनके पास आए और कहा, "अब जब तक ये दिल्ली से बाहर ले जाने का वारंट न दिखा दें...तब तक आप कार में मत बैठियेगा...।"

गाड़ियों में साथ आए लोग इंदिरा गांधी को घेरकर खड़े हो गए।

पुलिस वाले परेशान थे। उन्हें नहीं मालूम कि क्या करना चाहिए? जब फाटक खुला, तो पुलिस अधिकारी ने उनको सलाम ठोका और गाड़ी में बंद कर दिया।

दरअसल, उनके पास इंदिरा गांधी को दिल्ली से बाहर ले जाने की कोई इजाजत नहीं थी। अतः उनको वह दिल्ली पुलिस ऑफीसर्स मैस में ले गए। वहां इंदिरा ने पुलिस का लाया हुआ कुछ नहीं खाया। बैठी-बैठी उपन्यास पढ़ती रही और रात को चैन की नींद ली।

दूसरे दिन सुबह इंदिरा गांधी को शाह आयोग के सामने पेश किया गया। वहां उनके साथ उनके वकील फ्रेंक एंथनी और मदन भाटिया तथा परिवार के अन्य सदस्य थे। वह कोर्ट रूम में पड़ी एक बैंच पर बैठ गई। जस्टिस शाह ने उनसे बार-बार कटघरे में आकर बैठने का आग्रह किया, "आप कटघरे में आकर अपनी बात कहें।"

"नहीं महोदय! मैं कह चुकी हूं कि मैं इसलिए मना कर रही हूं कि कानूनी तौर पर मैं बयान देने को बाध्य नहीं हूं।"

जस्टिस शाह ने फिर बुलाया, "कृपया कटघरे में आएं।"

"नहीं महोदय, मुझे कुछ नहीं कहना है।"

"क्या आप शपथ पर बयान देने को तैयार हैं।"

"मैं अब आपके किसी सवाल का जवाब नहीं दूंगी।"

जस्टिस शाह ने अपने स्टेनो को आदेश लिखवाया, "आयोग के समक्ष इनके आचरण के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी पर दिल्ली मजिस्ट्रेट की अदालत में मुकदमा चलाया जाए।"

इसके साथ ही इंदिरा गांधी अपने परिवार और वकीलों के साथ कोर्ट रूम से बाहर चली गईं।

दिसंबर 1977 को दूसरा सप्ताह था।

अपने निवास पर इंदिरा गांधी अपने सहयोगियों बसंत साठे, प्रणव मुखर्जी, निर्मला देशपांडे और पुपुल जयकर तथा संजय से कांग्रेस संगठन और उसके नेताओं की स्थिति पर चर्चा कर रही थी।

''शाह कमीशन के सामने अपने बयानों में बृह्मानंद रेड्डी और चव्हाण ने कहा है कि इमरजैंसी के दौरान उनसे सब कुछ जबरदस्ती कराया गया है,'' बेहद क्रोधित इंदिरा गांधी ने कहा, ''और तो और राष्ट्रपति पद के लिए मोरारजी के प्रत्याशी संजीव रेड्डी के नाम का अनुमोदन करते समय संसदीय दल के नेता चव्हाण ने मुझसे पूछा तक नहीं... ।''

''मुल्क और कांग्रेस के सामने जो असली और बड़े मुद्दे हैं,'' प्रणव मुखर्जी ने सलाह दी, ''उन पर कांग्रेस के लोगों का एक सम्मेलन बुलाना चाहिए।''

''सम्मेलन 31 दिसंबर को बुलाया जाए,'' संजय ने सुझाव दिया, ''यह दिन शुभ है।''

इसी दौरान प्रणव मुखर्जी को इशारे से बुलाकर बसंत साठे वहां से उठ गए।

इंदिरा गांधी की उलझनें घर के मोर्चे पर भी थी। संजय के जाने के बाद इंदिरा गांधी ने पुपुल से कहा, ''घर में...तनाव क्या...एक नई कल्चर पैदा हो रही है। कोई एक दूसरे से मिलता नहीं और इससे गलत-फहमियां पैदा हो गई हैं।'' उनका इशारा संजय, मेनका और दूसरी ओर सोनिया के बीच गहरी हो रही खाई से था।

10 दिसंबर को इंदिरा गांधी ने कांग्रेस कार्यसमिति से इस्तीफा दे दिया, पर कांग्रेस सदस्य बनी रही।

1-2 जनवरी 1978 को बिट्ठल भाई भवन में कांग्रेसजन का सम्मेलन आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता इंदिरा गांधी ने की और

सम्मेलन में प्रस्ताव पारित करके इसे असल कांग्रेस कहा। सम्मेलन में भाग लेने आए नौजवान खुश थे कि इंदिरा गांधी ने कांग्रेस को बूढ़े खुसट और मौकापरस्त नेताओं से मुक्ति दिला दी।

उसके साथ ही कांग्रेस संसदीय समिति का भी विभाजन हो गया। रेड्डी गुट के पास 76 सांसद थे, जबकि कांग्रेस (आई) के पास केवल 70 थे।

राजनीतिक स्थिति पेचीदा होती जा रही थी। जनता सरकार इंदिरा गांधी पर चोट करने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने दे रही थी। स्थिति पर विचार करते समय इंदिरा गांधी को संजय ने सुझाया, ''अब आपका संसद में पहुंचना बहुत जरूरी हो गया है, क्योंकि जो मुद्दे वहां हमारे खिलाफ उठाए जा रहे हैं...आप उनका जवाब तो दे सकेंगी...।''

''हां देखती हूं...आजमगढ़ से जब से मोहसिना किदवई जीत कर लोकसभा पहुंची हैं...तब से मोरारजी और उनके साथी बौखलाए हुए हैं।...अब परेशान करने को ये लोग ऐसा वैसा कोई कदम उठा सकते हैं..।'' उसने कहा, ''देवराज अर्स ने चुनाव लड़ने के लिए कर्नाटक इंवाइट किया है...मैं उत्तर प्रदेश से चुनाव लड़ना चाहती हूं।''

''कर्नाटक बेहतर है।''

उनकी बात चल ही रही थी कि तभी वहां देवराज अर्स और डी. बी. देवगौड़ा आ पहुंचे।

देवराज अर्स ने कहा, ''देवगौड़ा जी ने चिक मंगलूर की अपनी लोकसभा सीट से इस्तीफा दे दिया है।...वह सीट आपके लिए खाली कर दी है...अब आप बाबा बादूं की मजार पर जियारत करके मैदान में आ जाइए...।''

''चुनाव आयोग को घोषणा तो करने दीजिए।''

जब देवराज अर्स, बसंत साठे तथा स्थानीय कांग्रेस के नेताओं

और कार्यकर्ताओं के साथ इंदिरा गांधी चिकमंगलूर में बाबा बादूं की मजार से निकली, तब बाहर जमा भारी भीड़ नारे लगाने लगी, "इंदिरा अम्मा...जीतेगी, जीतेगी भई जीतेगी।"

जिला चुनाव कार्यालय में अपने नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद इंदिरा गांधी जनसभाओं को संबोधित करने लगी। कॉफी बागान के मजदूरों की एक चुनाव सभा से लौटते समय देवराज अर्स ने बताया, "मैडम! यह बिल्कुल सही निर्वाचन क्षेत्र है...आपके लिए। यहां पचास फीसदी औरतें हैं...छह लाख के करीब वोटर तो औरतें ही हैं और इनमें भी पैंतालीस फीसदी निचली, पिछड़ी और अल्पसंख्यक जातियों से हैं।"

"पर! अर्सजी मैं कोई स्त्रीवादी नहीं...।"

"...और इनमें भी 40 फीसदी के लगभग लोग गरीबी रेखा के नीचे जिंदगी बसर करने को मजबूर हैं...गरीबी हटाने की बात तो आपने हमेशा ही की है...।"

नवंबर 1978 में इंदिरा गांधी अरूणाचल प्रदेश में पुपुल जयकर के साथ महर्षि रमन के आश्रम में गई। उनके साथ दो पत्रकार भी थे।

वहां वह एक कौए की समाधि के सामने देर तक खड़ी रही। पत्रकारों के पूछने पर उसने कहा, "चिक मंगलूर में अपने चुनाव के दौरान मैं काफी व्यस्त और परेशान थी...मैं यहां शांति की तलाश में आई थी...पर उलझ गई...महर्षि के दर्शन में...।"

"वह कैसे?" पत्रकार ने पूछा।

"आमतौर पर हिंदुओं की मृत्यु के बाद दाह संस्कार ही किया जाता है। समाधि केवल साधु संतों को दी जाती है...इस आश्रम में गाय की भी समाधि है, ये बात भी समझ में आती है, आश्रम से हिरण का भी लगाव था, इसलिए उसकी समाधि है...पर मैं कौए की समाधि को लेकर परेशान थी...महर्षि रमन ने यह क्यों बनवाई? पर जब मैं यहां आकर खड़ी हुई तो मैं महर्षि का दर्शन समझ पाई...उनके लिए सभी

का जीवन पवित्र है...पूरी प्रकृति पवित्र है।"

7 नवंबर 1978 को इंदिरा को खबर मिली कि चिक मंगलूर से 70000 वोटों से जीत गई हैं।

चुनाव जीतने के बाद जब इंदिरा गांधी पहली बार लोकसभा में गई, तो सत्तापक्ष के सांसद शेम-शेम के नारे लगाने लगे, वहीं दूसरी ओर मेजें थपथपाकर उनका स्वागत किया गया।

अपने कमरे में अकेली बैठीं इंदिरा गांधी कुछ लिखने में व्यस्त थीं, तभी पुपुल जयकर वहां आ पहुंची। इंदिरा ने पुपुल से कहा, "पुपुल! मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया था कि कल मारुति कारखाने के मामले में विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट लोकसभा में रखी जाएगी...ये तो मुझे पता है कि समिति अपनी रिपोर्ट मेरे खिलाफ ही देने जा रही है...पर सोचती हूं...अपनी बात तो रखूं..."

"ये सरकार भी अजीब लोगों की है। इंदू! ये सिर्फ तुम्हारे बारे में ही सोचते हैं, देश इनके एजेंडे में नहीं है..."

"नागरवाला जांच कमीशन बिठाया...जब कुछ नहीं मिला तो एल. एन. मिश्रा की मौत में मुझे फंसाने की जुगत करने लगे...अगर कोई मेरी हत्या कर दे तो ये लोग तो यही कहेंगे कि ये भी मेरी साजिश थी... और त्रिखा कमीशन से तो इनका पूरा दिवालियापन ही सामने आ गया, मैं बारह सौ मील दूर मणिपुर में चार मुर्गे और दो अंडे चुराने गई थी..."

दोनों उपहास उड़ाती हुई हंस पड़ी...

लोकसभा में विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट पर जब वह अपना पक्ष रखने को खड़ी हुई, तो सत्तापक्ष के सांसद शेम-शेम की आवाजें लगाने लगे और हंगामा खड़ा कर दिया, पर इंदिरा गांधी ने मजबूती से

अपनी बात रखी :

“श्रीमान अध्यक्ष महोदय! मैं बलपूर्वक और साफतौर पर दोहराना चाहूंगी कि वास्तव में मैंने सदन के विशेषाधिकार का उलंघन नहीं किया है...”

सत्ता पक्ष शेम-शेम के नारे लगाने लगा।

इंदिरा गांधी को जुकाम था और गला खराब था। अपना गला साफ करते हुए उसने कहा, “महोदय! मुझे जुकाम हो रहा है और ऐसा लगता है कि मेरे गला साफ करने से भी सदन उत्तेजित हो उठता है ...जनता पार्टी के कार्य मेरे विरुद्ध व्यक्तिगत प्रतिशोध से प्रेरित हैं।”

शोर बढ़ता गया। कुछ सुनाई नहीं पड़ा। पर इंदिरा गांधी अपनी बात जारी रखे हुए थी, “दुनिया के किसी जनतांत्रिक देश में पहले कभी भी किसी प्रमुख राजनीतिज्ञ को शासक दल के इतने झूठे आरोपों, इतनी चरित्र हत्या और राजनीतिक हिंसा का शिकार नहीं होना पड़ा है।”

शोर-शराबा बढ़ने पर थोड़ी देर चुप रहने के बाद इंदिरा गांधी ने अपने बयान को आगे बढ़ाया, “4 अक्टूबर को दिल्ली के एक मजिस्ट्रेट ने जब मुझे रिहा किया, तब प्रधानमंत्री ने खुलेआम घोषणा कर डाली कि मुझे रिहा करके मजिस्ट्रेट ने गलत काम किया है। गृहमंत्री ने खुलेआम कहा था, जनता सरकार के मंत्रिमंडल के सदस्यों को नपुंसकों के गिरोह की तरह देखा जा रहा है, क्योंकि वे अभी तक मुझको सींखचों के पीछे नहीं करा पाए हैं...”

सत्तापक्ष के सांसद फिर नारेबाजी करने लगे, पर इंदिरा बोलती रही, “आपातकाल के दौरान जो मुश्किलें आईं मुझे उनके लिए हार्दिक दुख है, मैंने अपने खेद को अनेक सार्वजनिक मंचों पर व्यक्त किया है और ऐसा फिर करती हूं...लेकिन 1977 में चुनावों की घोषणा भी मैंने ही की थी...।” हो-हल्ले के बीच उनका भाषण जारी रहा।

“अंतर्राष्ट्रीय मामलों में हमारा सिर ऊंचा हुआ है और नकल करने से नहीं, शेखी बघारते नहीं और न नाक रगड़ने से, बस भारतीय

होने से, एक अत्यंत विशिष्ट सभ्यता होने के नाते आत्मनिर्भरता और आत्म विश्वास से हुआ है। यह गुटनिरपेक्षवाद था...

"श्रीमान् अध्यक्ष महोदय! मैं एक अदना-सी इंसान हूं, लेकिन मैं कुछ मूल्यों और उद्देश्यों पर कायम रही हूं। मेरा हर अपमान पलटकर चोट करेगा। मुझे जो भी सजा दी जाएगी, वह मेरे लिए शक्ति का स्रोत होगी, मेरा सिर हाजिर है। मेरा बक्सा कई महीनों से बंधा हुआ है, मुझे केवल सर्दियों का सामान रखना है।"

एक सही आरोप लगाकर जनता सरकार ने 18 दिसंबर को इंदिरा गांधी को लोकसभा से निष्कासित करने और सदन स्थगित होने तक जेल में रहने की सजा सुना दी।

उसी शाम को एक भारी पुलिस बल उनके निवास पर आया और गिरफ्तार करके ले गया। वहां एकत्र कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ ने जमकर जनता सरकार विरोधी और इंदिरा गांधी जिंदाबाद के नारे लगाए।

इंदिरा गांधी को तिहाड़ जेल की एक ऐसी कोठरी में रखा गया, जिसकी खिड़की पर दरवाजे तक नहीं थे और लकड़ी की एक चारपाई पर बिस्तर लगा था। दिल्ली की उन घनघोर सर्दियों के दिनों में इंदिरा गांधी वहीं छह दिन रहीं। वह दिनभर अपने साथ लाई हुई किताबें पढ़तीं, कभी-कभार कुछ लिखतीं और सुबह-सुबह योगासन तथा प्राणायाम करतीं। राजीव, सोनिया और प्रियंका उनसे मिलने गए और खाना पहुंचाया।

जेल से रिहा होने के बाद इंदिरा पुपुल जयकर के साथ जे. कृष्णामूर्ति से मिलने मद्रास गईं।

"मुझे क्या करना चाहिए?" उन्होंने कृष्णामूर्ति से पूछा।

"यह तुम्हें स्वयं सोचना होगा।"

"कृष्णाजी मेरे सामने अभी दो रास्ते बचे हैं...या तो मैं लडूं अथवा चिड़िया की तरह आंखें बंद किए बैठी रहूं और उनको इजाजत दूं कि वे मुझे खत्म कर दें।"

जे कृष्णामूर्ति और पुपुल जयकर दोनों उनकी ओर देखते रह गए। उसके बाद पुपुल को साथ लेकर इंदिरा गांधी आनंदमयी मां से मिलने हरिद्वार उनके आश्रम गईं। भेंट के दौरान आनंदमयी मां ने अपने गले से रुद्राक्ष की माला उतारकर इंदिरा गांधी को पहनाते हुए कहा, "तुम भारत का भविष्य सुधारने जा रही हो।"

आश्रम से बाहर आने पर नौजवानों और महिलाओं की भीड़ ने नारों के साथ उनका स्वागत किया, 'इंदिरा गांधी संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं।'

इंदिरा गांधी ने हाथ हिलाकर उनका अभिवादन किया।

"अब आपकी रणनीति क्या है?" गाड़ी में पुपुल ने पूछा।

"...मैं लोगों के चेहरे देखती हूं...उनकी बातें सुनती हूं कि वे क्या कहते हैं...मैं घटनाओं पर निगाह रखती हूं...यह मेरी ताकत है।...मैं अक्सर ही भविष्य में विचरती रहती हूं...देखती जाओ...आगे क्या होता है...जैसी घटनाएं घटेंगी, वैसी ही योजना बना लेंगे।"

"राजनीतिक घटनाचक्र तेजी से घूम रहा है। जनता सरकार में दरारें गहरी होती जा रही हैं।"

"इस ओर मेरा ध्यान है।"

अपने पोते जयंत चौधरी की वर्षगांठ के अवसर पर चौधरी चरणसिंह ने इंदिरा गांधी को अपने आवास पर आमंत्रित किया। वहां चौधरी चरणसिंह के साथ उनकी बातचीत हुई, "आप भी मोरार जी की तरह हमारे पीछे पड़ गए हैं।" इंदिरा ने कहा।

"मैं किसी के पीछे नहीं पड़ा, हमेशा सत्य का पक्ष लेता हूं।"

"वह तो मैं जानती हूं कि आप एक ईमानदार नेता हैं, इसीलिए

आपको समर्थन दिया था।''

''इंदिरा जी, मध्यावधि चुनाव के कारण जनता पर आर्थिक बोझ डालने का हिमायती नहीं हूं मैं, इसीलिए समर्थन पाकर सरकार बनाई थी,'' चरणसिंह ने गंभीर होकर कहा, ''वरना, मेरी महत्वाकांक्षा कभी प्रधानमंत्री बनने की नहीं रही।''

''फिर भी समर्थन के बदले कुछ आशाएं तो...''

''मेरे लिए समर्थन नहीं देशहित ही सर्वोपरि है, आप जब चाहें समर्थन वापस ले लें।''

अपने आवास पर इंदिरा गांधी, संजय और पुपुल जयकर के साथ चरणसिंह सरकार के बारे में बात कर रही थी। उन्होंने संजय को संबोधित करते हुए कहा, ''चौधरी चरणसिंह को समर्थन हमने इस शर्त पर दिया था कि संसद में स्पेशल कोर्ट बिल नहीं आएगा...अब अपने इस हनुमान से पूछो कि चरणसिंह इस मुद्दे को क्यों उछाल रहे हैं?''

पुपुल ने थोड़ी हैरानी से पूछा, ''हनुमानजी?''

संजय ने थोड़ा हंसते हुए उत्तर दिया, ''मैंने राजनारायण से यह कहा था, मोरारजी सरकार को गिराकर प्रधानमंत्री तुम बन जाओ...हम सपोर्ट कर देंगे, तो उन्होंने जवाब दिया था...दलित, मजदूर और किसानों के मसीहा चौधरी साहब मेरे राम हैं, मैं तो उनका हनुमान हूं ...पी.एम. तो वे ही बनेंगे।

सब हंस पड़े।

''...तो आप अपना समर्थन वापस ले लीजिए।'' संजय ने कहा।

20 अगस्त को चरणसिंह ने प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया।

परेशान-सी इंदिरा गांधी बरामदे में चक्कर लगा रही थी। पुपुल आई, तो उनको लेकर इंदिरा अपने कमरे में ले जाकर, अपने आंसू पोंछती हुई बताने लगी, ''पुपुल! मुझे पता लगा है कि 'किस्सा कुर्सी

का' के मामले में संजय को ढाई साल की सजा होगी...अब क्या किया जाए...?''

''अभी फैसला तो आने दो...परेशान मत होओ इंदू! जिंदगी में तुमने इतना कुछ देखा और सहा है...''

''ये लोग मुझे हर तरह से खत्म करने पर लगे हैं। देखें आज क्या फैसला होता है?''

तभी आर.के. धवन ने आकर खबर दी, ''मैडम! संजय जी और विद्याचरण शुक्ला दोनों को दो-दो साल की सजा सुनाई गई है...जमानत भी मिल गई है, अब हाईकोर्ट में अपील की जा सकती है।''

1980 के लोकसभा चुनावों की तैयारी करने के लिए इंदिरा गांधी, बसंत साठे, प्रणव मुखर्जी और दो अन्य सांसदों के साथ चुनाव अभियान की योजना पर विचार कर रही थी।

''अब चुनावों में 40 दिन रह गए हैं...,'' इंदिरा ने कहा, ''मैं सोचती हूं चुनाव प्रचार दक्षिण भारत से शुरू करूं।''

''मीटिंग पहले दक्षिण में ही बुलाई गई है,'' प्रणव मुखर्जी ने बताया, ''वहां कांग्रेस की लहर तेज बह रही है।''

''कल मैं नामांकन पत्र भरने जा रही हूं, पहली मीटिंग वहीं हो जाएगी...''

इंदिरा के नामांकन पत्र दाखिल करते समय, बाहर इंदिरा समर्थकों की भारी भीड़ उनके समर्थन में नारे लगा रही थी।

इंदिरा गांधी ने दक्षिण भारत में धुंआधार प्रचार अभियान चलाया। शहरी और देहाती क्षेत्रों में मतदाताओं को संबोधित किया। विभिन्न राज्यों में उनको भारी समर्थन मिला।

उसने अपना नामांकन पत्र उत्तर प्रदेश में रायबरेली से भी भरा, यहां भी उनका जोरदार स्वागत हुआ। लोगों ने नारे लगाए, 'जीतेगी भई

जीतेगी, कांग्रेस आई जीतेगी, इंदिरा गांधी जिंदाबाद।'

चुनाव सभा को संबोधित करने जाते और लौटते समय इंदिरा गांधी अपने विशेष अंदाज में गांव के बच्चों और औरतों से मिलतीं, उनके हालचाल पूछती चलती थीं। लखनऊ में उसने एक विशाल जनसभा को संबोधित किया, ''मेरे खिलाफ जो आंधी बहाई गई, वह अब खत्म हो गई है। लेकिन आंधी बहाने वाले उसमें खुद ही बह गए हैं। पोल खुल गई है उनकी। हर कोई प्रधानमंत्री बनना चाहता है, लेकिन कांग्रेस में कभी प्रधानमंत्री पद के लिए दौड़ नहीं हुई, केवल देशसेवा के लिए ही संघर्ष हुआ है। आप चाहें तो उनको एक बार और आजमा लें, लेकिन वोट देने से पहले देख लें कि जब उन्होंने एक अबला को कोर्ट के कटघरे में खड़ा किया, तिहाड़ में डाला, तो वे ही लोग फिर कितनी अबलाओं को कोर्ट के कटघरे में खड़ा करेंगे, कारागार में डालेंगे।'' तालियों के गड़गड़ाहट से आसमान गूंज उठा।

चुनाव नतीजे आने शुरू हुए और जैसे-जैसे आते-जाते गए इंदिरा कांग्रेस की जीत साफ होती गई। उसको 529 में 350 लोकसभा सीटों पर जीत हासिल हुई। अमेठी में संजय की जीत भारी बहुमत से हुई।

इंदिरा गांधी के निवास पर उत्सव-सा वातावरण था। भारी भीड़ जमा थी। ढोल-तासे बज रहे थे। सुरक्षाकर्मी तैनात थे। बैरियर लग गए थे। इंदिरा गांधी भावुकता में डूबी थीं। पुपुल जब उनके पास पहुंची, इंदिरा गांधी की आंखों में आंसू आ गए, ''आओ पुपुल आओ, देखो मैं जीत गई...''

''आप हारी ही कब थी इंदू, वह तो आपकी परीक्षा थी।''

''हां परीक्षा ही तो थी...''

राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने अशोक हॉल में इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इंदिरा गांधी ने ईश्वर

के नाम शपथ ली।

पत्रकार आपस में टिप्पणी कर रहे थे, ''अरे! इस बार उनकी शपथ में ईश्वर को स्थान मिल गया...।''

मंत्रिमंडल के गठन की प्रतिक्रिया लगभग पूरी हो चुकी थी। रात को भोजन के समय आर. के. धवन के साथ धीरेंद्र ब्रह्मचारी ने आकर शिक्षा मंत्रालय में किसी की नियुक्ति पर ऐतराज जताया, ''शिक्षा मंत्रालय ऐसे ही किसी के भी हाथ में दिया जाना उचित है?''

''धैर्य रखें धीरेंद्र जी, ऐसी कोई बात नहीं है जैसा आप समझ रहे हैं।''

''बात है क्यों नहीं।''

''...ये मत सोचिए मुझे पता नहीं है...इमरजैंसी के दौरान क्या-क्या हुआ? मुझे पता है, जो कुछ लोगों ने किया है और नाम बदनाम... अब मैं भ्रष्टाचार नहीं पनपने दूंगी...किसी भी कीमत पर...।'' और फिर मेज पर हाथ मारते हुए जोर से कहा, ''आपने जिस तरह कहा है...अभी मुझे और भी बातें पता चली हैं...''

ब्रह्मचारी धीरे से उठकर चला गया।

इंदिरा गांधी वापस 1 सफदरजंग रोड में थीं। दोपहर के ढाई बजे थे। इंदिरा और पुपुल जयकर वी.सी.आर. पर थामस चार्ली के विख्यात उपन्यास पर आधारित फिल्म, 'फॉर फ्रोम दि मेडिंग क्राउड' देख रहे थे कि सूर्यग्रहण पड़ने लगा। वी.सी.आर बंद कर टीवी ऑन कर दिया गया। टीवी पर ग्रहण की तस्वीरें थीं। इंदिरा गांधी उठकर अपने कमरे में चली गईं और जब तक ग्रहण समाप्त नहीं हुआ, वह कमरे में ही बनी रहीं।

13 मार्च को मेनका ने एक बेटे को जन्म दिया। उसका नाम रखा गया वरुण गांधी। इंदिरा गांधी बेहद खुश थीं। उन्होंने पुपुल को बंबई

फोन किया, "मैं फिर दादी बन गई हूं। संजय के बेटा हुआ है।"

"बधाई हो इंदू!"

23 जून 1980 की सुबह 8.30 बजे के लगभग विश्वनाथ प्रतापसिंह इंदिरा गांधी से मिलने के लिए आगंतुक कक्ष में बैठे थे। इंदिरा गांधी अपने अध्ययन कक्ष में कुछ लिख रही थीं कि आर. के. धवन हड़बड़ाते हुए उनके कमरे में घुस गए, "मैडम! संजय पिट्स 52ए उड़ा रहे थे, उसका क्रैश हो गया है...।"

इंदिरा गांधी एकदम घबरा उठीं। जल्दी से बाहर आकर कार में बैठी और दुर्घटना स्थल को रवाना हो गईं। पीछे-पीछे विश्वनाथ प्रतापसिंह अपनी कार में उनके पीछे चले और फिर कारों का काफिला बढ़ता गया।

बुरी तरह से क्षत-विक्षत संजय का शव विलिंग्डन अस्पताल में ले जाया गया। अस्पताल पर भीड़ जमा थी। एक-एक करके चौधरी चरण सिंह, चंद्रशेखर, अटल बिहारी वाजपेयी, विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा अन्य नेता जमा होने लगे। चारों ओर दुख का वातावरण था। चरणसिंह इंदिरा गांधी के पास आए और सांत्वना देते हुए कहा, "बेटी! इस इतने बड़े दुख की घड़ी में आपको धैर्य और साहस से काम लेना होगा।"

इंदिरा गांधी ने कोई उत्तर नहीं दिया। बस हतप्रभ-सी मुद्रा में कुछ उनकी ओर देखा, तभी अश्रुकण छलक कर कपोलों से लुढ़कने लगे।

कई और लोगों ने इंदिरा को सांत्वना दी। इसी बीच इंदिरा ने चंद्रशेखर को एक ओर ले जाकर कहा, "मैं पिछले कुछ समय से आपसे असम के बारे में बात करना चाहती थी, वहां हालात बहुत खराब हैं।"

"इस दुख की घड़ी में ये मसला..."

"...नहीं, नहीं, ये बहुत जरूरी मसला है।"

इंदिरा गांधी मुड़कर सुभाष सक्सेना की रोती-बिलखती मां के पास पहुंची और उनके पास बैठी तथा उसे सीने से लगा लिया।

कांग्रेस मुख्यालय में संजय गांधी के शव के पास एक ओर बैठी थी : सिसकती और उजड़ी मेनका गांधी। पास में बैठी थीं इंदिरा गांधी और पुपुल जयकर। भगवत् गीता का पाठ चल रहा था। लोग अंतिम दर्शनों को आ रहे थे। इंदिरा गांधी मानो अपने आपसे बात कर रही थीं, '...नहीं संजय...नहीं! संजय! कोई मेरे लाड़ले संजय को बुला सकता है...।' फटी-फटी आंखों से वह मेनका को देख रही थी।

बाहर लॉन में मंत्रियों और नेताओं का जमघट था। एक ओर चौधरी चरणसिंह, अटल बिहारी वाजपेयी, चन्द्रशेखर और बहुगुणा बात कर रहे थे। चन्द्रशेखर ने कहा, "...सुबह जब अस्पताल में इंदिरा गांधीजी ने मुझसे कहा कि असम के मसले पर बात करनी है, तो मैं समझ नहीं पाया...एक मां होकर वह उस असम की बात कैसे कर सकती हैं, जब वहीं दूसरे कमरे में जवान बेटे की लाश पड़ी हो..."

अटल वाजपेयी ने हैरान होते हुए मत व्यक्त किया, "यह औरत पत्थर की बनी है या यह दिखाना चाहती है कि दुख की घड़ी में भी उन्हें असम और देश की समस्याओं की चिंता है...।"

"...इंदिरा ने दुख पर विजय प्राप्त कर ली है," चरणसिंह ने कहा, "यह उनके व्यक्तित्व का हिस्सा है।"

शाम को पुपुल जब इंदिरा गांधी से मिली, तो पुपुल को देखकर आगे दोनों हाथों से पेट को भींचते हुए वह बिलख पड़ी, "पुपुल! अब मैं क्या करूं...? कहां जाऊं?"

"धैर्य रखो इंदू...धैर्य...तुम तो दूसरों को धैर्य रखने का पाठ सिखाती आई हो और आज स्वयं ही...यदि तुम ही ऐसा करोगी, तो सारा देश..."

संजय गांधी का अंतिम संस्कार शांतिवन में पंडित जवाहरलाल नेहरू की समाधि के निकट किया गया। चिता को अभी अग्नि को समर्पित किया ही जाना था कि अचानक इंदिरा गांधी की नजर संजय के शव पर पड़े तिरंगे पर पड़ी। उसने हस्तक्षेप करके उसे तत्काल हटवा दिया, ''संजय के ऊपर से तिरंगा सम्मान के साथ हटा दो।''

वह ऐसा न करती तो शव के साथ तिरंगा भी जल जाता।

मुखाग्नि राजीव गांधी ने दी।

इंदिरा गांधी का पूरा परिवार, मेनका के सगे-संबंधी और तमाम रिश्तेदार तथा बड़ी संख्या में संजय समर्थक एवं अन्य नेतागण उपस्थित थे। इंदिरा गांधी एकटक जलती चिता को देख रही थीं।

संजय की मृत्यु के बाद इंदिरा गांधी के परिवार का आपसी माहौल कटुमय हो गया था। पुपुल के साथ अपनी चिंता को बांटते हुए इंदिरा गांधी ने कहा, ''...ये मेनका क्या कर रही है...कुछ समझ में नहीं आता ...मेनका और उसकी मां अमितेश्वर दोनों ही बहुत महत्वाकांक्षी हैं... पहले इन्होंने अपनी पत्रिका सूर्या को आर. एस. एस. के आदमी के हाथों में बेच दिया और मुझे बताया भी नहीं...और अब उत्तर प्रदेश में संजय के वफादार युवक कांग्रेसियों की लखनऊ में बैठक बुलाने की बात हो रही है...दरअसल मैं वरुण से जुदा नहीं रह सकती...नहीं तो वह साथ रखने के भी काबिल नहीं है...अब मैंने उससे साफ कह दिया है कि अगर वह लखनऊ जाती हैं, तो वापस इस घर में न आए...यहां उसके लिए दरवाजे बंद हो जाएंगे...।''

''सास-बहू के झगड़े किस घर में नहीं होते इंदू,'' पुपुल ने कहा, ''उसके लिए घर के द्वार तो बंद मत करो।''

''जो मेरे बेटे को...'' इंदिरा रो पड़ी।

आखिरकार मेनका गांधी के लिए इंदिरा गांधी के घर के दरवाजे

सदा के लिए बंद हो गए। जिस दिन मेनका गांधी का सामान लादा गया, उस दिन मेनका के साथ उसकी बहन अंबिका भी थी। मेनका जोर-जोर से इंदिरा गांधी को इंगित करके कुछ कह रही थी। वरुण को गोद में उठाए मेनका झटके से गाड़ी में बैठी और चली गई।

वरुण के साथ ले जाने से इंदिरा बेहद दुखी हुई, "मैंने उसे जाने को कब कहा था, झगड़े किस घर में नहीं होते। इसका अर्थ यह तो नहीं कि मुझे मेरे ही पोते से जुदा कर दे। मुझे कौन-से जन्म की सजा दी है उसने?"

"दुखित न हों मैडम।" उनके सचिव पी.सी. अलेक्जेंडर ने उनको शांत करने की कोशिश की।

"यह लड़की वरुण को मुझसे ले गई। तुम जानते हो संजय के बेटे से मुझे कितना लगाव है। वह मेरा पोता है। उसे ले जाया गया है। मेरी बुढ़ापे की लाठी..."

1983 में दिल्ली में राष्ट्रमंडल का सम्मेलन आयोजित किया गया। विज्ञान भवन में चले इस सम्मेलन की अध्यक्षता इंदिरा गांधी ने की। अन्य देशों के शीर्ष नेताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, "भारत हमेशा से शांति का पक्षधर रहा है, लेकिन आज दुनिया में हथियारों को एकत्र करने की जंग चल पड़ी है, जिस पर इतनी भारी धनराशि खर्च की जा रही है, जबकि इसका इस्तेमाल विकासशील देशों की सहायता के लिए किया जा सकता है।"

तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूंज उठा।

"सत्य और अहिंसा भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग रहा है," इंदिरा ने अपना भाषण जारी रखा, "हम सदियों से सारे संसार को भी सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाते आ रहे हैं, लेकिन आज विश्व हिंसा और अत्याचार पर उतारू है तो ऐसे में हमारी जिम्मेदारी और बढ़ गई है। हमारी ही नहीं हम सबकी जिम्मेदारी बढ़ गई है कि हम सब

मिलकर विश्व में शांति और एकता के लिए काम करें।''

अगले दिन विश्व भर के अखबारों में इंदिरा के भाषण को प्रथम पृष्ठ पर लीड़ खबर के रूप में प्रकाशित किया गया।

गुट-निरपेक्ष आंदोलन की अध्यक्ष के रूप में इंदिरा गांधी ने मार्च 1983 में संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा को संबोधित किया, ''हमें मिलकर काम करना है, एक होकर काम करना है। पांच अंगुली जब बंद होती हैं तो वह मुट्ठी बन जाती है और जब अलग-अलग हों तो शक्तिहीन हाथ के अलावा वह कुछ नहीं होता।''

वहां उन्होंने अलग-अलग देशों के राष्ट्राध्यक्षों से मुलाकात भी की।

''पंजाब में पृथकतावादी, आतंकवादी आंदोलन जोर पकड़ रहा है,'' इंदिरा ने पुपुल से कहा, ''वहां खूनी आंधियां चल रही हैं। इसे रोकना होगा।''

''हां इंदू इसे रोकना जरूरी है, लेकिन आसान नहीं,'' पुपुल ने कहा, ''पंजाब के हिंसक आन्दोलन की कहानी बहुत लम्बी है। यह आन्दोलन सन् 1973 से ही शुरू हो गया था। जब आनन्दपुर साहब में अकाली दल ने 45 विषयों को पंजाब की समस्याओं के रूप में उठाया था।''

''परंतु देखा जाए तो अकाली दल अपनी जिन मांगों को पूरा कराना चाहता था,'' इंदिरा ने कहा, ''उसका प्रभाव सारे देश पर पड़ने जा रहा था।''

''मामले को निपटाने में देर करने के कारण आपको कमजोर, अदूरदर्शी और न जाने क्या-क्या बुरा-भला कहा गया!''

''हां मैं भूली नहीं, परन्तु मैं तो चुप रहकर स्थिति को जान-समझ रही थीं।'' इंदिरा ने कहा, ''पर आज स्थिति बहुत खराब हो चुकी है,

पंजाब में सिखों के धार्मिक तीर्थस्थल अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर को उग्रपन्थियों ने विदेशी सहायता से प्राप्त अस्त्र-शस्त्र जमा करने का अड्डा बना दिया है।"

"इंदू आपने हिंसा पर उतारू और गली-कूचों में लड़ाई लड़ने वालों के इरादों को भांपकर जब आपातकाल की घोषणा की थी, तो आपको तानाशाह कहा गया, लेकिन बाद में जो प्रगति हुई, उसे भी नज़रअन्दाज कर जनता ने आपको ही सत्ता से दूर फेंक दिया था।"

"मैंने तो पंजाब में एक समय तक सख़्ती नहीं बरती। सन्तों को साधु मानकर सिखों की धार्मिक भावना को ठेस लगाने से बचाती रही, तो मेरे ऊपर ही आरोप लगाया गया कि वे लोग तो मेरे ही आदमी थे, उन्हें आतंकवाद फैलाने का अवसर मैंने दिया।"

"लोगों का क्या? लोग तो कहते ही रहते हैं, किन-किन का मुंह पकड़ोगी?"

"मुंह तो नहीं पकड़ा जाता, लेकिन आज जब पंजाब की समस्या ने भयानक रूप ले लिया। हिंसा का बहुत बुरा वातावरण बन गया है। लोगों की जान, माल की सुरक्षा ख़त्म हो गई और सबसे बढ़कर देश की एकता को ख़तरा पैदा हो गया, तो भी विपक्ष साथ न देकर आरोप ही लगा रहे हैं।"

"इन आरोपों का मुंह तोड़ जवाब देना चाहिए।"

"नहीं...अब मैं आरोपों का मुंह तोड़ जवाब नहीं...उन कारणों को ही खत्म कर दूंगी, जिनके कारण आरोप पनपे हैं।"

"तो क्या करोगी?"

"अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में सेना भेजने का निर्णय लिया है मैंने।"

"किसी धर्मस्थल पर सेना...?"

"हां इसके अलावा और कोई चारा भी तो नहीं..."

"देख लो...अच्छी तरह सोच-विचार लो...इसका अर्थ है एक पूरे समुदाय की शत्रुता मोल लेना..."

''शत्रुता मोल लेना और वह भी पूरे समुदाय की...नहीं पुपुल तुम्हारा कहना ठीक नहीं है। मेरा इरादा तो समुदाय की शत्रुता नहीं वरन समुदाय के शत्रुओं को खत्म करना है। जानती हो पंजाब में तीन-चार सालों में लगभग 1250 हिंसक घटनाएं घट चुकी हैं। लगभग 450 लोगों की हत्याएं की गईं और कम-से-कम 1225 लोग घायल हुए हैं।''

''यह मैं जानती हूं, परंतु इन्दिराजी स्वर्ण मन्दिर में सेना भेजने जैसा कठोर क दम उठाएंगी? लोग तो इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।''

''देश की रक्षा और एकता व अखण्डता के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूं। अब तो धमाके के साथ अपनी प्रतिष्ठा, अपनी जान और जीत-हार की राजनीति को एक तरफ रखकर स्वर्ण मन्दिर परिसर में सेना के प्रवेश की घोषणा की जाएगी।''

''परंतु इस कार्रवाई में बेकसूर भी तो मारे जा सकते हैं, मंदिर में तो बहुत से श्रद्धालु आते हैं।''

''स्थायी शांति के लिए दो-चार लोगों को बलिदान तो देना ही होगा, फिर तुम उन लोगों के बारे में सोचों जिन्हें आतंकियों ने मौत के घाट उतारा है। मुझे इस समय आतंकवादियों द्वारा मारे जाने वाले निर्दोष सिखों, ग़ैर-सिखों और उनके परिवार के लोगों की चिन्ता है, जो न्याय की मांग कर रहे हैं। मैं चिंतित हूं, उन शक्ति के पुजारियों के कुकृत्यों से, जो एशिया के इस अभी आज़ाद हुए राष्ट्र को खंड-खंड करके इस क्षेत्र को छोटे-छोटे कमज़ोर राष्ट्रों में बांटने का सपना पालकर अपनी धाक जमाने की नित नई चालें चल रहे हैं।''

''दो-चार बलिदानों में कहीं आप...'' वह आगे कहती-कहती रुक गई।

''मैं तो बलिदान के लिए तैयार हूं। आतंकवाद की बलिवेदी पर यदि मेरी भी बलि चढ़ती है तो चढ़ जाए, लेकिन उससे पहले आतंकवाद खत्म करना जरूरी है। परंतु यदि ऐसा होता है तो वह दिन जिस दिन

ऐसा होगा, इतिहास में भयानक विश्वासघात और अमानवीय कार्य के रूप में याद किया जाएगा। सन् 1966 में जब मैं प्रधानमन्त्री बनी थीं, तो सबसे पहले मैंने ही पंजाबी भाषी लोगों को पंजाब के रूप में एक नया प्रान्त दिया था। इसी पंजाब को मैं ख़ालिस्तान कैसे बनता देख सकती हूं? नहीं बनने दूंगी...देश की एकता और अखंडता के लिए अपने जीवन को होम कर देना पड़े तो भी पीछे नहीं हटूंगी।''

''नहीं हटना पीछे... इंदू नहीं हटना, वहां की खूनी आंधियों को सुहानी हवाओं में बदले बिना पीछे नहीं हटना है।''

''वहां चल रहे भय और हिंसा के नंगे नाच को खत्म करने के लिए मैंने ऐसे लोगों की सूची बनाई है, जो पंजाब की नब्ज ठीक से पहचानते हैं। आपके पास भी कोई नाम हो तो बताएं?''

''ऐसे मसलों की नब्ज पहचानने वाला है तो एक...''

''कौन?''

''मुझे उसका नाम ध्यान नहीं आ रहा, लेकिन 1964 में उसने अति संवेदनशील जम्मू-कश्मीर राज्य में कानून-व्यवस्था प्रमुख रहकर सराहनीय कार्य किया था। मिजोरम में विद्रोह और अलगाववाद के तांडव के दौरान भी उन्हीं को वहां मुख्य सचिव बनाकर भेजा गया था। उन्होंने वहां न केवल विद्रोह का दमन किया, वरन समस्या का राजनीतिक समाधान भी खोज निकाला था।''

''अच्छा...कहीं आप सुरेंद्रनाथ मल्होत्रा की तो बात नहीं कर रही?''

''हां शायद वही, यदि उन्हें पंजाब में कोई बड़ी जिम्मेदारी दी जाए तो उनकी दृढ़ता व दूरदृष्टि पंजाब को आतंक के काले सायों से मुक्त करा सकती है।''

''उस धरा सपूत को कैसे भूल सकती हूं मैं!''

पंजाब में आतंकवाद अपने चरम पर पहुंच गया था। वहां के

आतंकियों को पाकिस्तान से सीधी मदद मिल रही थी। इंदिरा गांधी ने टी.वी और रेडियो पर राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा, ''आतंकवाद और हिंसा को अब अधिक बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। पंजाब के लोगों से मेरी अपील है...अब आपसी नफरत को छोड़ो...लोगों का खून बहाना बंद करो...ये ब्लू स्टार आपरेशन खून बहाने के इस खेल को खत्म करने के लिए है, जो आतंकवादी स्वर्णमंदिर में पनाह लिए हुए हैं, उन्हें माफ नहीं किया जाएगा।''

जनता के बीच तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं हुई। कुछ को लगा कि आतंकवाद मिट जाएगा...कुछ कहते थे कि भिंडरवाला ने भी अति कर दी है। कुछ लोग कहते थे कि पंजाब में विदेशी पत्रकारों के जाने पर रोक लगा दी गई है...सेना ने पूरा स्वर्ण मंदिर घेर लिया था। भिंडरवाले को जैसी मौत मिलनी चाहिए वैसी ही मिली...हां! तीर्थ यात्रियों के साथ जरूर ना इंसाफी हुई...

सिख समुदाय स्तंभित था...

इंदिरा गांधी ने बूटा सिंह को बुलाकर कहा, ''...आप अमृतसर जाइए और आपरेशन ब्लू स्टार में मंदिर की इमारत का जो भी नुकसान हुआ है...उसको देखिए और मरम्मत कराने का बंदोबस्त करिए...''

''...मेरे ख्याल से यह ठीक रहेगा कि,'' वहां मौजूद राजीव गांधी ने कहा, ''हमें संत लोगों से भी बातचीत करनी चाहिए।''

''सिक्खों में बहुत नाराजगी है।'' बूटा सिंह ने कहा।

''नाराजगी तो बातचीत से ही दूर होगी न।'' राजीव का सीधा-सा उत्तर था।

''ठीक है, मैं कुछ करता हूं।''

''कुछ नहीं...सबकुछ करो...मुझे शांति और भाईचारा चाहिए।''

18 अक्टूबर 1984 को राहुल और प्रियंका के साथ इंदिरा गांधी

ने कश्मीर में हरी पर्वत पर सूफी संत हजरत अरासिन की दरगाह पर जियारत की और दीन-दुखियों को दान देकर उनका आशीष प्राप्त किया।

तत्पश्चात्, राहुल व प्रियंका के साथ ही इंदिरा गांधी अपने पुश्तैनी अराध्य सारिका के मंदिर में पूजा करने गईं।

29 अक्टूबर 1984 को इंदिरा गांधी भुवनेश्वर में थीं। उड़ीसा के मुख्यमंत्री उनके लिए उड़ीसा की विख्यात हैंडलूम की बंधनी साड़ियां लाए। सब जानते थे कि वह उनको कितनी पसंद है, पर इंदिरा बुरी तरह से थकी थीं। वह रातभर सो नहीं पाईं।

सुबह 30 अक्टूबर को वह एक जनसभा को संबोधित करने गईं। उनके सामने लोगों का विशाल जनसमूह सागर की तरह उमड़ पड़ रहा था। उन्होंने उनकी आशाओं, चिंताओं, खुशियों और दुखों को भांपा तथा उनको संबोधित करते हुए कहा, "मुझे उसकी चिंता नहीं कि मैं जिंदा रहती हूं या नहीं। मैंने एक लंबी जिंदगी जी है और मैं गर्व कर सकती हूं कि मैंने अपना पूरा जीवन सेवा में व्यतीत किया है। मुझे सिर्फ इस पर गर्व है और किसी चीज पर नहीं। और जब तक मुझमें सांस रहेंगी मैं सेवा करती रहूंगी और जब मेरे जीवन का अंत होगा, मैं कह सकूंगी कि मेरे खून की आखिरी बूंद भारत को जीवन देती और उसे मजबूत करती रहेगी...।"

30 अक्टूबर को अभी वह उड़ीसा में ही थी कि उनको खबर मिली : उनके पोते-पोती को स्कूल ले जाने वाली गाड़ी के साथ चलने वाली जीप दुर्घटना का शिकार हो गई। किसी को कोई चोट नहीं पहुंची। शाम को समाचार सुनकर वह पीली-सी पड़ गईं। उनको इसमें बच्चों को अपहरण करने की साजिश लगी थी। वह वापस दिल्ली लौट आईं।

31 अक्टूबर 1984, सुबह लगभग 8.30 बज रहे थे। इंदिरा

गांधी सिल्क की हल्के जोगिया रंग की साड़ी पहने अपने स्टडी कक्ष में राहुल से बात कर रहीं थीं। आर. के. धवन ने उनको सूचित किया, ''मैडम, पीटर अस्तिनोव और उनकी टीवी टीम आपकी प्रतिक्षा कर रही है। शारदा प्रसाद जी भी पहुंच चुके हैं।''

वह उठकर बाहर गलियारे की ओर बढ़ी। उनका नौकर उनकी बुलेट प्रूफ जैकेट लेकर आया। इंदिरा गांधी ने उसकी ओर देखते हुए कहा, ''अभी मैं कहीं बाहर नहीं जा रही हूं। यहीं हूं...।'' कहकर वह बाहर निकली।

इंदिरा गांधी 1 सफदरजंग रोड से 1 अकबर रोड को जाने वाले गलियारे से जा रही थीं। उनकी सुरक्षा पर तैनात बेअंत सिंह उनकी ओर बढ़ा। मुस्कुराती हुई इंदिरा गांधी ने हाथ जोड़ा। बेअंत ने लगभग तीन फुट की दूरी से अपनी रिवाल्वर से उनको गोली मारी। दूसरी ओर से कांस्टेबिल सतवंत सिंह ने आकर अपनी स्टेनगन से इंदिरा गांधी पर 25 फायर कर दिए। इंदिरा गांधी वहीं गिर पड़ी।

गोलियां चलने की आवाज सुनकर सुरक्षाकर्मी दौड़ते आए और बेअंत सिंह को वहीं गोलियों से भून डाला तथा गोलियां चलाने के बाद सतवंत सिंह को भी दबोच लिया।

सोनिया गांधी भागी-भागी वहां आई, जहां इंदिरा गांधी पड़ी थीं।

इंदिरा गांधी को एक गाड़ी में रखकर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ले जाया गया। सोनिया के साथ गाड़ी में दो-तीन और लोग थे। सोनिया के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

गाड़ी के बाहर निकलने के फौरन बाद पुपुल जयकर हड़बड़ाती हुई सफदरजंग के गेट से अंदर घुसी और आर. के. धवन के कमरे में पहुंची। वहां शारदा प्रसाद और धवन बैठे रो रहे थे। धवन ने कहा, ''इन्होंने मार दिया उन्हें।'' शारदा प्रसाद ने कहा, ''सिक्योरिटी गार्ड्स ने मार डाला उन्हें।''

अपने कमरे में नीमा सिंह के साथ बैठे राहुल और प्रियंका बेहद

डरे हुए रो रहे थे। कमरे में पुपुल के घुसते ही दोनों रोते हुए बोल पड़े, "दादी को क्या हो गया...?" प्रियंका ने पूछा, "मेरी दादी कहां हैं? वे लोग कहां ले गए हैं उन्हें?"

एम्स में आपरेशन थियेटर के बाहर गलियारे में सोनिया गांधी, राहुल, प्रियंका और पुपुल जयकर के अतिरिक्त अरुण नेहरू और उनका परिवार तथा पी. सी अलेक्जेंडर व मंत्रिमंडल के सदस्य जमा थे। सब की निगाहें आपरेशन थियेटर के गेट पर लगी थी। डॉक्टर ने बाहर निकलते ही कहा, "मुझे खेद है...प्रधानमंत्री नहीं रहीं।"

सारा देश सोच में पड़ गया कि अब क्या होगा? जब नेहरू जी दुनिया से विदा हुए थे, तब भारत इतने ख़तरों में नहीं घिरा था। कम-से-कम देश में आंतरिक शान्ति थी और विश्व का वातावरण भी इतना ज़हरीला नहीं था। जब शास्त्रीजी का निधन हुआ था, तब देश एक युद्ध जीत चुका था और पाकिस्तान युद्ध में टूटी कमर लिये हांफ रहा था। तब भी देश के अन्दरूनी हालात ख़राब नहीं थे। क्षेत्रीयता के झंडे उठाने वाले भी इस तरह सीना खोलकर नहीं खड़े थे। पंजाब की समस्या तब तक सुलझ चुकी थी, फिर भी ऐसा भयंकर हत्याकांड हुआ और देश की महान लौह महिला दुनिया से चली गईं। उनका यह रिक्त स्थान किसी के द्वारा भरा नहीं जा सकता था।

'इन्दिरा गांधी नहीं रहीं।' इस छोटे से वाक्य की यह ख़बर पूरे देश व विश्व को हिला देने के लिए काफ ी थी। जिस तरह, जिस ढंग से श्रीमती गांधी की हत्या की गई, उसकी तो कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। श्रीमती गांधी की हत्या से भारत ने जो खोया, वह कभी वापस नहीं पाया जा सकता, और देश को जो नुक सान हुआ, उसकी भरपाई भी नहीं की जा सकती। यह सब-कुछ अचानक इतनी तेज़ी से हुआ कि एक पूरे युग का दर्दनाक अन्त हो गया। इन्दिराजी

ने कभी सोचा भी नहीं होगा कि जिसे वह अपने परिवार के सदस्य के समान समझती थीं, जिसकी वफ ादारी की प्रशंसा किया करती थीं, वही विश्वासघाती सुरक्षा गार्ड अपने अन्य सहयोगियों के साथ सौ गज़ की दूरी पर उनके काल के रूप में खड़ा होगा।

दोपहर के ढाई बजे थे। कई राज्यों के मुख्यमंत्री वहां पहुंच चुके थे। पी. शिवशंकर, शंकरानंद और पी.सी अलेक्जेंडर को गलियारे में एक ओर ले जाया गया। शंकरानंद ने कहा, ''राजीव गांधी के दिल्ली पहुंचते ही उन्हें प्रधानमंत्री की शपथ दिला देनी चाहिए...।''

किसी अन्य व्यक्ति ने कहा, ''राष्ट्रपतिजी शाम तक लौट आएंगे। राजीव गांधी अभी पहुंच रहे हैं...आते ही उनको उपराष्ट्रपति से शपथ दिला दी जाए...।'' तभी नरसिंहा राव वहां आ पहुंचे। पी. सी. अलेक्जेंडर ने उनको एक ओर ले जाकर कहा, ''यहां सभी की राय है कि राजीव गांधी के आते ही उनको उपराष्ट्रपति शपथ दिला दें।''

इसी बीच अरुण नेहरू और प्रणव मुखर्जी के साथ राजीव गांधी वहीं पहुंचे। राहुल और प्रियंका राजीव गांधी से चिपक कर रोने लगे। सोनिया गांधी सुबक रही थीं। राजीव उनका हाथ पकड़े खड़े था।

उसी दिन देर रात शाम को राष्ट्रपति जैलसिंह ने राष्ट्रपति भवन के अशोक हॉल के एक सादे समारोह में राजीव गांधी को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई।

इंदिरा गांधी का पार्थिव शरीर तीनमूर्ति भवन के सामने वाले कमरे में रखा था। शव के पास राजीव गांधी, उनके मित्र एवं परिवार के लोग खड़े थे। भारी संख्या में लोग कतार बांधकर अंतिम दर्शन के लिए खड़े थे। उनमें से बहुत से रो-बिलख रहे थे। नारे लगा रहे थे, ''जब तक सूरज चांद रहेगा, इंदिरा तेरा नाम रहेगा।''

तभी राजीव गांधी ने एच. के. एल. भगत को एक ओर ले जाकर

कहा, "आप फौरन जमना बाजार चले जाइए, सुना है उधर बस्तियों में दंगा हो रहा है, लोग सिखों को मार रहे हैं, लोगों को रोकिए।"

इधर बाहर से आवाजें आ रही थी, 'खून का बदला खून से लेंगे।' व्यथित से राजीव गांधी ने बाहर की ओर देखा। पगलाए से नारे लगाते हुए लोगों का झुंड अंदर घुसने की कोशिश कर रहा था। शव के पास बैठे लोगों की मानो सांसें थम गईं थीं, सुरक्षाकर्मी तत्काल कुछ समझ नहीं पा रहे थे।

"सिख विरोधी दंगों की लहर 'भूचाल' बनकर दिल्ली से बाहर दूसरे शहरों को भी कंपा चुकी है। आगजनी, बलात्कार और हिंसा की घटनाओं की बाढ़-सी आती जा रही है, "पुपुल ने फोन करके रिपोर्ट देते हुए बताया, "चारों ओर आतंक और अराजकता का माहौल है।"

"तुम यहां आ जाओ।" राजीव गांधी ने रिपोर्ट सुनने के बाद उन्हें कहा, "तुम्हारा होना जरूरी है।"

"मैं नहीं आ सकती, क्योंकि ऐसे हालातों में निकलना ठीक प्रतीत नहीं होता।"

"मैं अपनी कार भेज रहा हूं," राजीव गांधी ने कहा, "ताकि यहां प्रवेश करने में आपको कोई परेशानी न हो।"

"आज की दुखद घड़ी में राष्ट्र की एकता को बनाए रखने की बहुत ज़रूरत है," नए प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने देशवासियों के नाम ख़ास सन्देश जारी किया, "इस संकट की घड़ी में मैं आप सबसे शांति और सौहार्द बनाए रखने की अपील करता हूं।"

"हमें धैर्य से काम लेना होगा," नए प्रधानमंत्री ने आगे कहा, "द्वेषभाव को त्यागना होगा। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई हम सब आपस में भाई-भाई हैं, फिर यह द्वेष, यह झगड़ा, यह हिंसा किसलिए? इंदिरा जी मेरी मां थी और आपकी प्रेरणास्रोत। उनके मरने का दुख

मुझे भी है, आपको भी है, हम सबको है, लेकिन उन्हें वापस तो नहीं लाया जा सकता। हिंसा किसी समस्या का समाधान नहीं।''

तीन नवंबर को दोपहर से कुछ पहले इंदिरा गांधी के फूलों से ढके शव को तोप गाड़ी में रखकर जमना किनारे शांतिवन के निकट दाह संस्कार के लिए ले जाया गया। पूरे रास्ते सड़क के दोनों ओर नारे लगाते लोगों की अनुशासित कतारें थीं।

उनके अंतिम संस्कार में दुनिया के तमाम देशों के राष्ट्राध्यक्ष, नेता, कलाकार, लेखक मौजूद थे। सभी प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों, केन्द्रीय मंत्रियों सभी राजनीतिक दलों के नेताओं तथा सैनिक व असैनिक उच्चाधिकारियों के साथ मदर टेरेसा भी अंतिम संस्कार के समय उपस्थित थीं। चंदन की लकड़ियों की चिता पर रखे इंदिरा गांधी के पार्थिव शरीर को राजीव गांधी ने वैदिक मंत्रोचार के बीच मुखाग्नि दी। सारा वातावरण रुंधे हुए गलों से, 'जब तक सूरज चांद रहेगा, इंदिरा तेरा नाम रहेगा' के नारे से गूंज गया।'

एक ओर अग्नि की लपटों के बीच इंदिरा का शरीर पंचतत्व में विलीन हो रहा था, तो दूसरी तरफ देश के अनेकों कस्बों और शहरों में भी अग्नि की लपटें उठ रही थीं, लेकिन उन लपटों की कराहें पंचतत्व में विलीन होने की बजाय लोगों के मनों-मस्तिष्क में प्रलयकारी भूचाल की तरंगों का उत्सर्जन कर रही थीं। श्रीमती गांधी ख ुद को 'पहाड़ों की बेटी' कहा करती थीं और हिमालय से उन्हें बेहद प्यार था। उनकी इच्छा के अनुसार उनकी अस्थियां और राख हिमालय की ऊंची चोटियों पर बिखेरी गईं। शेष अस्थियां देश के सभी भागों में ले जाकर पवित्र स्थानों में विसर्जित की गईं। इस तरह उनकी अन्तिम यात्रा तो पूरी हो गई, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद सांप्रदायिक हिंसा का जो भूचाल उस समय आया, वह आज भी कभी-कभी खण्ड प्रलय का रूप धारण कर लेता है।

OOO

संदर्भ सूची

इंदिरा जी के जीवन पर कई वर्षों तक गहन शोध कार्य किया गया है। आजादी से पहले और बाद के समाचार पत्रों की फाइलों को टटोला गया, दस्तावेजों का अध्ययन किया गया और विभिन्न पुस्तकों का निष्कर्ष निकाला गया है। कुछ पुस्तकें इस प्रकार हैं:

Ved Mehta : A Family Affair: India Under Three Prime Ministers

Pupul Jayakar : Indira Gandhi: An Intimate Biography

K. Frank : Indira: the life of Indira Nehru Gandhi

R.Guha : India after Gandhi: The History of the World's Largest Democracy

Tariq Ali : The Assassination: Who Killed Indira Gandhi

Inder Malhotra : Indira Gandhi: A personal and political biography

P. N. Dhar : Indira Gandhi, the "Emergency", and Indian Democracy

Indira Gandhi : My Truth

Indira Gandhi : Indira Gandhi : A Personal and Political Biography

Indira Gandhi : Freedom's Daughter: Letters Between Indira Gandhi and Jawaharlal Nehru 1922-1939

Indira Gandhi : Indira Gandhi, Speeches and Writings.

D. F. Moraes : Indira Gandhi

Tapan K. Dey : Bangladesher Muktijuddhe Indira Gandhi'r Bhumika

Ritu Sarin : The assassination of Indira Gandhi

D. Norman : Indira Gandhi : Letters to an American Friend, 1950-1984

Narottam Gaan : Indira Gandhi and Foreign Policy Making : The Bangladesh Crisis

Krishan Bhatia : Indira : a biography of Prime Minister Gandhi

Dhrub Dumar : Impact of Indira Gandhi on Indian Political System

C. D. Costa : Indira Gandhi : Daughter of India (Lerner Biographies)

J. L. Nehru : Meri Kahani

हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित कथा–साहित्य

अमृता प्रीतम

पंजाबी लेखिका के नाते जितना नाम अमृता प्रीतम ने अर्जित किया है, शायद ही इस मुकाम पर कोई और भारतीय साहित्यकार पहुंच पाया हो। उनकी प्रमुख रचनाएं –

- **रसीदी टिकट**
  यह अमृता प्रीतम की स्वयं की अपनी आत्मकथा है। यह इतनी भावपूर्ण भाषा में लिखी गई है कि पाठक के अन्तर्मन पर उनका जीवन चरित्र चलचित्र की भांति सजीव हो उठता है।

- **पिंजर**
  यह वह उपन्यास है, जो दुनिया की आठ भाषाओं में प्रकाशित हुआ है और जिसकी कहानी भारत के विभाजन की उस व्यथा को लिए हुए है, जो इतिहास की वेदना भी है और चेतना भी – 'पूरो' इसी उपन्यास की किरदार है, जो घटनाओं की आग में जलती-बुझती इस चेतना को पा लेती है – 'कोई भी लड़की जो ठिकाने पहुंच रही है, वह हिन्दू हो या मुसलमान, समझना कि मेरी आत्मा ठिकाने पहुंच रही है।'

- **अदालत**
  इस उपन्यास का एक ही किरदार है, और जो कुछ उससे खो गया है, उसका इलज़ाम कभी अपने ऊपर ले लेता है और कभी हाथ से पकड़ कर उसे किसी अंधेरे कोने में छिपा देता है।

- **नागमणि**
  यह उपन्यास एक पुख्ता औरत के उस नज़रिए को पेश करता है, जिसके लिए कहा जाता है कि यह कहानी वक्त से एक सौ साल पहले लिखी गई है।

- **कहानियों के आंगन में**
  कथा-साहित्य में यह एक नई दिशा है कि जिन किरदारों को लेकर कुछ कहानियां लिखी गई, उन किरदारों का अहसास भी हर कहानी के साथ दिया गया है। इस पुस्तक में केवल वही कहानियां हैं, जिनके मूल-पात्र भी कहानियों के आंगन में बैठे हुए हैं।

हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित कथा–साहित्य

शरत्चन्द्र

महान् उपन्यासकार शरत्चद्र बंगला भाषा के अतिरिक्त हिन्दी पाठकों के बीच भी अत्यधिक लोकप्रिय हैं। उनकी रचनाएं विश्व साहित्य के समकक्ष ठहरती हैं।

- **चरित्रहीन**
  चरित्रहीन शरत्चन्द्र का प्रसिद्ध उपन्यास है, जिसमें सतीश, उपेन्द्र, दिवाकर, सुरबाला और किरणमयी के माध्यम से एक मार्मिक कथा की रचना की गई है, जो मानवीय रिश्तों को बहुत ही आत्मीय ढंग से प्रस्तुत करते हुए पाठकों को अभिभूत कर देती है।

- **देवदास**
  देवदास शरत्चन्द्र का इतना चर्चित उपन्यास है कि कई निर्माता निर्देशक इस पर फिल्में बना चुके हैं और हर बार फिल्म पहले से ज्यादा हिट होती गई। प्रेम की अद्भुत दास्तान पर आधारित इस उपन्यास का विश्व की अनेकों भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

- **परिणिता**
  परिणिता उनकी चर्चित रचनाओं में से एक है। विवाह के बाद बहू के परिवर्तन की यह एक हृदयस्पर्शी कथा है। यह कथा अत्यंत रोमांचक एवं प्रेरक होने से हर पाठक वर्ग के पढ़ने योग्य है।

- **शरत्चन्द्र की श्रेष्ठ कहानियां**
  यह उनकी सर्वाधिक चर्चित एवं लोकप्रिय कहानियों का अनूठा संग्रह है।

रामकुमार भ्रमर

रामकुमार भ्रमर द्वारा रचित **श्रीकृष्ण कथा** ऐसी कथा शृंखला है, जो पाठकों का भरपूर मनोरंजन तो करती ही है, साथ ही सभी को श्रद्धा के भाव जगत में ले जाकर खड़ा कर देती है –

- **समय-पुरुष**
  इसमें 2 उपन्यास समाहित हैं। **'कालचक्र'** में कृष्ण जन्म से पूर्व की घटनाओं का वर्णन है, जबकि दूसरे भाग **'कारावास'** में उनके जन्म की परिस्थितियों और वसुदेव-देवकी के घोर कष्टों के साथ मथुरा के लोगों का असंतोष है।

- **अंतर-धारा**
  अंतर-धारा में 2 उपन्यास समाहित हैं। **'कालिन्दी के किनारे'** में श्रीकृष्ण प्रकृति-पुरुष के रूप में सामने आते हैं, जबकि **'कर्मयज्ञ'** में वे गोकुल से बाहर की दुनिया के लिए संघर्ष को समर्पित हो जाते हैं।

- **मुक्ति-संघर्ष**
  श्रीकृष्ण कथा माला के तीसरे खण्ड में समाहित दो उपन्यासों में से पहले **'कालयवन'** में गर्ग ऋषि और गोपाली अप्सरा से जन्मे कालयवन की कथा है, एवं **'जनाधार'** में जरासंध के क्रूर आक्रमण से बचाने की श्रीकृष्ण की जनाधारित रण कौशल का रोमांचक वर्णन है।

- **उत्तर-दक्षिण**
  उत्तर दक्षिण में समाहित प्रथम उपन्यास **'जनपथ पर'** में लोगों की मथुरा से द्वारका की ओर प्रस्थान की संघर्ष गाथा है, जबकि **'जल-यात्रा'** में श्रीकृष्ण का विराट रूप उभरकर आता है।

- **जय-यात्रा**
  श्रीकृष्ण कथा के इस अंतिम भाग के पूर्वार्द्ध **'जन-जन हिताय'** में श्रीकृष्ण के कर्मयुद्ध को सहेजा गया है, जबकि उत्तरार्द्ध **'जय'** में श्रीकृष्ण की जीवन यात्रा के अंतिम पड़ाव के प्रेरणादायक वर्णन है।

आचार्य चतुरसेन

अमर कहानियों के रचयिता आचार्य चतुरसेन हिन्दी कथा-साहित्य के अद्वितीय कथा-शिल्पी के रूप में जाने जाते हैं। उनकी कहानियां और उपन्यास हिन्दी साहित्य के इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं। उनकी संपूर्ण कहानियां अब पांच भागों में प्रकाशित की गई हैं।

- **सोया हुआ शहर**
  इसमें उनकी ऐतिहासिक, सामाजिक, प्रेम व भावनाओं में डूबी 31 कहानियां दी गयी हैं।
- **धरती और आसमान**
  इस भाग में आचार्य जी की 20 ऐतिहासिक कहानियां मूल पाठ के साथ दी गयी हैं।
- **दुखवा मैं कासे कहूं**
  इस खण्ड में आचार्य जी की 26 कहानियां दी गई हैं। सभी कहानियां एक से बढ़कर एक हैं।
- **बाहर-भीतर**
  इस खण्ड में बाहर-भीतर सहित सभी कहानियां पाठकों के हृदय को झकझोर कर रख देती हैं।
- **कहानी खत्म हो गई**
  यह उनकी संपूर्ण कहानियों की अंतिम शृंखला है, इसमें 24 कहानियां दी गई हैं, जो चतुरसेन जी के लेखन के शिखर को रेखांकित करती हैं।

अपने घर में अपनी लाइब्रेरी बनाएं
भारत का सर्वश्रेष्ठ बुक-क्लब
घरेलू लाइब्रेरी योजना अपनाएं

हमारी इस योजना का उद्देश्य है – विश्व-स्तरीय उत्कृष्ट पुस्तकों वाली एक व्यक्तिगत लाइब्रेरी बनाने में सदस्यों की मदद करना, और जहां तक सम्भव हो किफ़ायती दामों पर घर बैठे पुस्तकें उपलब्ध कराना। इसके लिए हमारे प्रकाशन-समूह की विविध विषयों पर विविध सीरीज़ें उपलब्ध हैं। समय-समय पर अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें भी उपलब्ध कराना हमारा दायित्व होगा।

घरेलू लाइब्रेरी योजना कैसे काम करती है?

घरेलू लाइब्रेरी योजना सर्वप्रथम पाठक को उसके द्वारा चुनी गई स्कीम के अन्तर्गत सदस्य बनाती है और उसे **सदस्यता प्रमाण-पत्र** भेजती है। उसके बाद साहित्य संगम में दिए गए झरोखे, सूची-पत्र या सम्पादक-मंडल द्वारा प्रस्तावित एवं निर्धारित पुस्तकों में से अपनी पसन्द की पुस्तकों के ऑर्डर भेजने पर आकर्षक डिस्काउंट पर वी.पी.पी. द्वारा पाठकों को पुस्तकें उनके घर तक पहुंचाई जाती हैं। इसके लिए पाठक को बहुत ही कम डाक ख़र्च व पैकिंग व्यय देना पड़ता है।

घरेलू लाइब्रेरी योजना के सदस्यों को लाभ

1. घर बैठे अपनी पसन्द की पुस्तकें पाइए।
2. किसी भी स्कीम में कितनी भी पुस्तकें मंगाइए।
3. हमारी मासिक पत्रिका 'साहित्य संगम' घर बैठे मुफ़्त पाइए।

4. संस्थान द्वारा आयोजित वार्ताओं, सेमिनारों, समारोहों आदि के निमन्त्रण-पत्र पाइए।
5. हर 12वें ऑर्डर के बाद एक सरप्राइज़ गिफ़्ट पाइए अर्थात किसी भी स्कीम का सदस्य कितने भी सरप्राइज़ गिफ़्ट पा सकता है।
6. हर सदस्य को सदस्यता प्रमाण-पत्र भेजा जाएगा।
7. सदस्यों की सहूलियत के लिए सम्पादक-मंडल द्वारा प्रतिमाह पुस्तकें प्रस्तावित की जाएंगी, जिसकी जानकारी प्रति माह 'साहित्य संगम' द्वारा सदस्य तक पहुंचेगी।
8. सदस्य सम्पादकों द्वारा प्रस्तावित या सूची-पत्र में से अपनी पसन्द की कितनी भी पुस्तकें चुन सकते हैं।
9. पुस्तकें वी.पी.पी. द्वारा आपके द्वार पर भेजी जाएंगी।

घरेलू लाइब्रेरी योजना कैसे काम करती है?

पहले पाठक को उसके द्वारा चुनी हुई स्कीम के अन्तर्गत सदस्य बनाते हैं, और उसे 'सदस्यता प्रमाण-पत्र' भेजते हैं। उसके बाद साहित्य संगम में दिए गए सूची-पत्र या निर्धारित पुस्तकों में से अपनी पसन्द की पुस्तकों के ऑर्डर भेजने पर आकर्षक डिस्काउंट पर वी.पी.पी. द्वारा पुस्तकें घर तक पहुंचाई जाती हैं।

डाक ख़र्च तथा अन्य नियम

- पुस्तकें वी.पी.पी. द्वारा सदस्य के घर भेजी जाएंगी।
- एक पुस्तक मंगाने पर सदस्य को 25/- रुपये अदा करने होंगे। इसके वाद प्रत्येक अतिरिक्त पुस्तक के लिए केवल 5/- रुपये ज़्यादा देने होंगे।
- 100/- रुपये से ऊपर का डाक ख़र्च फ्री।
- हर बार ऑर्डर भेजने पर सदस्य को सदस्यता संख्या अवश्य लिखनी होगी, नहीं तो सदस्य को सदस्यता लाभ नहीं मिल पाएंगे।
- सदस्य मेम्बरशिप फ़ीस मनीऑर्डर, डिमांड ड्राफ्ट या चैक (कृपया **हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड** के नाम बनवाएं) द्वारा भेज सकते हैं। दिल्ली के

बाहर से चैक भेजने पर कृपया **75/- रुपए बैंक चार्ज** के ज़रूर जोड़ें।

- सदस्य द्वारा वी.पी.पी. से पुस्तकें न छुड़ाने पर वी.पी.पी. का ख़र्च मेम्बरशिप फ़ीस में से काट लिया जाएगा।

घरेलू लाइब्रेरी योजना की स्कीमें

स्कीम A

इस स्कीम में हर सदस्य को 100 रुपये मेम्बरशिप फ़ीस के भेजने होंगे। सदस्यता अवधि एक वर्ष की होगी और प्रत्येक ऑर्डर पर 15% डिस्काउंट मिलेगा। हर 12वें ऑर्डर के बाद सदस्य को सरप्राइज़ गिफ़्ट मिलेगा। सदस्यता अवधि पूरी होने पर 100/- रुपये की पुस्तकें मुफ़्त भेजी जाएंगी। **(सदस्यता अवधि में कम से कम 12 ऑर्डर मंगवाने जरूरी हैं)**

स्कीम B

इस स्कीम में हर सदस्य को 300 रुपये मेम्बरशिप फ़ीस के भेजने होंगे। सदस्यता अवधि तीन वर्ष की होगी और प्रत्येक ऑर्डर पर 25% डिस्काउंट मिलेगा। हर 12वें ऑर्डर के बाद सदस्य को सरप्राइज़ गिफ़्ट मिलेगा। सदस्यता अवधि पूरी होने पर 300/- रुपये की पुस्तकें मुफ़्त भेजी जाएंगी। **(सदस्यता अवधि में कम से कम 36 ऑर्डर मंगवाने जरूरी हैं)**

स्कीम C

इस स्कीम में हर सदस्य को 500 रुपये मेम्बरशिप फ़ीस के भेजने होंगे। सदस्यता अवधि पांच वर्ष की होगी और प्रत्येक ऑर्डर पर 33.3% डिस्काउंट मिलेगा। हर 12वें ऑर्डर के बाद सदस्य को सरप्राइज़ गिफ़्ट मिलेगा। सदस्यता अवधि पूरी होने पर 500/- रुपये की पुस्तकें मुफ़्त भेजी जाएंगी। **(सदस्यता अवधि में कम से कम 60 ऑर्डर मंगवाने जरूरी हैं)**

पुस्तकें न केवल सबसे अच्छी मित्र होती हैं, वरन् पथ प्रदर्शक भी होती हैं, इसलिए यदि आप पुस्तकों के माध्यम से उन्नति के शिखर को छूना चाहते हैं, तो अगले पृष्ठ पर दिया गया फॉर्म भरकर आज ही हमें भेजना न भूलें।

यदि आप घरेलू लाइब्रेरी योजना के सदस्य बनना चाहते हैं, तो कृपया हमें निम्न जानकारी भेजें –

नाम श्री/श्रीमती/कुमारी ....

पत्राचार का पता ....

....

....

शहर .... पिन ....

दूरभाष .... फैक्स ....

व्यवसाय .... जन्मतिथि ....

अभिरूचियां ....

....

....

....

घरेलू लाइब्रेरी योजना के सदस्य बनिए और घर बैठे अपनी मनपसंद की पुस्तकें प्राप्त करें। सूची-पत्र व नियमावली के लिए लिखें :

हिन्द पॉकेट बुक्स / फुल सर्कल
जे-40 जोरबाग़ लेन, नई दिल्ली-110003
दूरभाष : 24625057, 24621011, 24620063 फैक्स : 24645795
ई-मेल : mail@hindpocketbooks.in वेबसाइट : www.hindpocketbooks.in

TORONTO PUBLIC LIBRARY
37131 143 223 097

'सफ़र' कमलेश्वर की अंतिम कालजयी रचना है, जिस पर वे फिल्म बनाना चाहते थे। इस उपन्यास में लौह-महिला इंदिरा गांधी जी के जीवन और आज़ादी के बाद के भारतीय इतिहास का जीवंत वर्णन है। इंदिरा जी के बलिदान के बाद उनके संपूर्ण जीवन को वास्तविक तथ्यों के साथ पर्दे पर लाकर वे उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देने की अभिलाषा रखते थे, परंतु उनके अचानक देहांत के बाद उनकी यह कालजयी कृति पर्दे पर जीवंत न हो सकी। उनकी इस अंतिम धरोहर को आत्मीयता-से प्रकाशित किया गया है, ताकि जान पाएं कि उन्होंने अपने अंतिम दिनों में क्या लिखा था!

यह मात्र इंदिरा जी पर आधारित एक गाथा ही नहीं, वरन् इसमें विकासशील से विकसित होते भारत देश का आज़ादी के बाद का सम्पूर्ण इतिहास भी रोचकता के साथ दिया गया है।

कमलेश्वर सदी के सबसे सशक्त लेखकों में से एक हैं। उनका जन्म 6 जनवरी 1932 को उत्तरप्रदेश के मैनपुरी जिले में हुआ। 1995 में कमलेश्वर को पद्मभूषण से नवाजा गया और 2003 में उन्हें 'कितने पाकिस्तान' (उपन्यास) के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कमलेश्वर ने अपने 75 साल के जीवन में 13 उपन्यास, 17 कहानी संग्रह, और करीब 100 फिल्मों की पटकथाएं लिखीं। 27 जनवरी 2007 को उनका निधन हो गया।

Rs. 150
उपन्यास (NOVEL)

हिन्द पॉकेट बुक्स
AHW HPB HINDI SERIES

Please visit:
www.fullcirclebooks.in
www.hindpocketbooks.in

ISBN 978-81-216-1568-6
Rs. 150
9 788121 615686 00150